ज्ञानपीठ लोकोदय ग्रन्थमाला—हिन्दी ग्रन्थांक—११७

पलासीका युद्ध

लेखक

तपन मोहन चट्टोपाध्याय

अनुवादिका

डॉ० कणिका विश्वास एम० ए० एम० एड्० पी० एच्० डी०

हिन्दी विभाग, विश्वभारती शान्ति निकेतन



भारतीय ज्ञानपीठ • काशी

ज्ञानपी
सम्पादक
श्री लक्ष्मीचन्

प्रथम संस्करण
१९६१ ई०
मूल्य साढ़े तीन रुपये

प्रकाशक
मन्त्री भारतीय ज्ञानपीठ
दुर्गाकुण्ड रोड वाराणसी

मुद्रक
बाबूल
सन्मति

निवेदन

मेरी बँगला पुस्तक 'पलाशिर युद्ध' का यह हिन्दी अनुवाद 'पलासीका युद्ध' नामसे प्रकाशित हो रहा है। बँगलाके पाठकोंमें इसका यथेष्ट समादर हुआ है। फलस्वरूप थोड़े समयमें ही बँगलामें इसके दो संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। आशा है हिन्दी पाठकोंको यह पुस्तक पसन्द आयेगी।

इसका हिन्दी अनुवाद विश्व भारतीके हिन्दी विभागकी प्राध्यापिका डाक्टर कणिका विश्वास एम० ए० एम० एड०, पी०-एच० डी० ने किया है। कणिका मेरे आशीर्वादकी अधिकारिणी है, उसे मुझे धन्यवाद नहीं देना है। भगवान् उसे सुखी रखें और उसकी प्रगतिका मार्ग प्रशस्त करें। अनुवादमें मैंने चाहा है कि मूल भाषाकी प्रकृतिकी झलक मिले, इसलिए कहीं कुछ अनुवादमें विचित्र-सा लगे उसे नया मानकर स्वीकार किया जाये यह मेरी इच्छा है।

—तपन मोहन चट्टोपाध्याय

ज्ञानपीठ-लोकोदय-ग्रन्थमाला
सम्पादक और नियामक
श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन

प्रथम संस्करण
१९६१ ई०
मूल्य साढ़े तीन रुपये

प्रकाशक
मन्त्री भारतीय ज्ञानपीठ
दुर्गाकुण्ड रोड वाराणसी

मुद्रक
बाबूलाल जैन फागुल्ल
सन्मति मुद्रणालय वाराणसी

निवेदन

मेरी बँगला पुस्तक 'पलाशिर युद्ध का यह हिन्दी अनुवाद पलासीका युद्ध नामसे प्रकाशित हो रहा है। बंगलाके पाठकोंमें इसका यथेष्ट समादर हुआ है। फलस्वरूप थोड़े समयमें ही बँगलामें इसके दो संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। आशा है, हिन्दी पाठकोंको यह पुस्तक पसन्द आयेगी।

इसका हिन्दी अनुवाद विश्व भारतीके हिन्दी विभागकी प्राध्यापिका डाक्टर कणिका विश्वास एम० ए० एम० एड० पी०-एच० डी० ने किया है। कणिका मेरे आशीर्वादकी अधिकारिणी है, उसे मुझे धन्यवाद नहीं देना है। भगवान् उसे सुखी रखें और उसकी उन्नतिका मार्ग प्रशस्त करें। अनुवादमें मैंने चाहा है कि मूल भाषाकी प्रकृतिकी झलक मिले इसलिए कहीं कुछ अनुवादमें विचित्र-सा लगे उसे नया मानकर स्वीकार किया जाये यह मेरी इच्छा है।

—तपन मोहन चट्टोपाध्याय

तक इतिहासकी रचना गलत ढंगपर हुई है। अब सम्पूर्ण रूपसे एक नये ढंगसे इतिहास लिखना होगा। इतिहास कहते ही स्वभावतः हम लोगोंके मनमें केवल राजाओं-बादशाहोंके युद्ध-विग्रह विप्लव-षड्यन्त्रकी बात ही जाग उठती है, इतिहासका अर्थ इन्हीं सबोंका विस्तृत विवरण समझा जाता है लेकिन यह इतिहास तो बिलकुल एकांगी होगा। मनुष्यके विराट जीवन प्रवाहके साथ इसका सम्बन्ध ही कितना है? मनुष्यके दिन-प्रतिदिनकी जीवन-यात्राकी बात उसके सुख-दुःख आशा-आकांक्षाकी बात उसके रहन सहनकी बात धर्म-कर्मकी बात, कला-कौशलकी बात इन्हीं सब बातोंकी चर्चा ही तो इतिहास है।

इसीलिए तो कुछ लोग कहते हैं कि पानीपतकी तीसरी लड़ाईमें किस पक्षमें कौन-कौन बड़े थे, नपोलियन किस सालमें ड्यूक आफ वेलिंगटनसे किस युद्धमें हार गया था बादशाह औरंगजेबने दिल्लीकी गद्दी पानेके लिए कौन-कौनसे कुकर्म किये थे इन सब बातोंका ठीक-ठीक ब्यौरा रखनेकी बनिस्बत इस बातका पता लगाना सोचना और लिखना कहीं अधिक आवश्यक है कि प्रथम किसने कब धान रोपना सिखाया था सर्वप्रथम किसने कपड़ा बुननेका आविष्कार किया था, रंग और तूलिकाके रहस्यका किसने प्रथम उद्घाटन किया था अथवा यही कि मनुष्यको प्रथम-प्रथम किसने हर्बा-हथियार पकड़ना सिखाया था।

और कोई-कोई तो स्पष्ट रूपसे यह भी कह देते हैं कि मुसलमान-शासनके आरम्भ होनेसे पूर्व भारतीय इतिहासमें सन्-तारीख घटन-अघटनको खोजने जाना व्यर्थका परिश्रम मात्र है। वे कहते हैं कि यह एक बहुत बड़ी भूल है। भारतवर्षके लोग तो महाकालकी साधनामें खण्डकालको सम्पूर्णरूपसे लुप्त कर देना चाहते हैं। वे कालको अनादि कहते हैं। सृष्टि भी उनके निकट अनादि-अनन्त है। जहाँ कोई परिमाण नहीं वहाँ इतिहास किस प्रकारसे लिखा जाय?

जिस देशमें मुक्त व्यक्तिको अवतार रूप कर दिया जाता है, और

उसके पितामहस तकको पानी सहेजकर साफ कर दिया जाता है, वहाँ स्पष्ट ही समझा जा सकता है कि मनुष्यकी बाह्य अवस्थाके ऊपर इस देशके लोगोंकी आस्था कितनी कम है। और घटना? उसमें प्राण ही कितना है? वह भी तो उसी कालके ऊपर प्रतिष्ठित है। और असंख्य करोड़ों कल्पों की तुलनामें उसका मूल्य ही क्या है? जिन लोगोंके मनकी अवस्था इस प्रकारकी है उन्हें लेकर चाहे और जो-कुछ भी क्यों न कर लिया जाय लेकिन महाभावसे इतिहास कैसे लिखा जाय?

आर्य पितामहगण तो बाद वालोंकी सुविधाके लिए, जिसे हम इतिहास कहते हैं उसकी सामग्री कुछ विशेष रख नहीं गये हैं। सामग्रीके अभावको इसीलिए तो कल्पना द्वारा पूरा कर लेना पड़ता है, इसीलिए तो भारतवर्षके पुरातन इतिहासको लेकर इतनी ख्यौंरी इतनी मारामारी और इतना वाद-प्रतिवाद है—नाना मुनियोंके नाना प्रकारके मत हैं।

मुसलमान और अंग्रेज समयका काफ़ी महत्त्व देते हैं। इसी वजहसे वे कालका भी एक हिसाब रखते हैं। इसके अलावा वे सांसारिक राजत्वको स्वर्गके राज्यसे कहीं अधिक काम्य मानते हैं। इसीलिए मृत्यु-लोककी घटनाएँ उनके लिए एकदम उपेक्षाकी वस्तु नहीं हैं। पीछे लोगोंकी स्मृतिसे ये सब विलुप्त न हो जायें इसी भयसे तो मौक़ा पाते ही वे इन्हें लिपिबद्ध कर देते हैं।

केवल यही नहीं। मरनेके बाद भी इस विषयसे उन्हें विरत होते नहीं देखा जाता है। कबके ऊपर इमारत स्तम्भ शिलापट्ट आदिका निर्माण करते हैं और फिर उसीपर सन्-तारीख नाम-धाम पूर्वजोंका तथा अपना परिचय देकर अपना कीर्तिकलापोंका विवरण लिख रखते हैं और इस प्रकार से सवग्रासी कालको जय करना चाहते हैं।

यही कारण है कि मुसलमानोंके शासन कालसे अंग्रेजोंके शासन काल तकके भारतवर्षके इतिहासको पण्डित लोग बहुत दूर तक विश्वसनीय इतिहास मानते हैं। पूराका-पूरा क्यों नहीं मानते इसके लिए मनुष्यकी

प्रकृति ही उत्तरदायी है। मनुष्यका मन तो किसी बँधे-बँधाये नियमको मानकर चलता नहीं। इसीलिए मनुष्य जो देखता अथवा सुनता है, वह जब उसके मनके रससे परिपाक होकर प्रकाशमें आता है तब देखा जाता है कि एक ही वस्तुको अलग-अलग व्यक्तियोंने अलग-अलग ढंगसे देखा है। और भिन्न-भिन्न प्रकारसे सुना है। विभिन्न लोगोंके हाथमें पड़कर एक ही वस्तुने विभिन्न रूप धारण किये हैं। तब उसका असली रूप क्या है, उसे ठीक-ठीक समझना मुश्किल है।

यह सब देखकर ही तो बहुतसे विचारक कहते हैं कि भारतवर्षके इतिहासमें घटनाओंका विवरण देनेकी जरूरत हो क्या है? और अगर लिखना ही चाहते हो तो भारतवर्षने जिस वस्तुको बड़ा समझा था उसकी उसी भावधाराका इतिहास क्यों नहीं लिखते? किस प्रकारसे वैदिक युग धीरे-धीरे ब्राह्मण-युगमें परिणत हुआ किस प्रकारसे ब्राह्मण-युगसे बौद्ध युगका उद्भव हुआ और फिर किस तरहसे बौद्ध धर्मको उन्मूलित कर हिन्दू-धर्मका उदय हुआ इसके बाद मुसलमान और ईसाई धर्मोंके घात-प्रतिघात और संघर्षसे हिन्दू-धर्मने कौन-सा रूप ग्रहण किया उसीका इतिहास लिखो। कहाँसे उसकी उत्पत्ति हुई क्या उसका स्वरूप है, कैसी उसकी गति रही कैसी उसकी परिणति होगी इन्हीं सब बातोंको सुलझाकर कहो।

बात बड़ी सम्य है। यह आकस्मिक प्रहार बहुत ही कठिन है। सु प्रतिष्ठित प्रवीण इतिहासज्ञ इसे इतिहास कहना चाहेंगे या नहीं इसमें सन्देह है। पत्थरके समान मजबूत स्थूल पदार्थके ऊपर इतिहास आश्रय लेता है। भावधाराके समान सूक्ष्म पदार्थ क्या उसका भार सह सकता है? वह चाहे जो हो मेरे जैसे आदमीके लिए भावके गहन वनमें प्रवेश करनेकी चेष्टा बौनेके चाँद छूनेके लिए हाथ बढ़ाने जैसी है। फलस्वरूप 'गमिष्यामि उपहास्यताम्' अर्थात् उपहासके सिवा उससे और कोई काम नहीं होगा। यह सब पण्डितोंके लिए सुरक्षित रहे।

और इतिहासकी पुस्तकोंको पढ़कर भी तो देखता हूँ उसका बाहरसे

चौदह आना अंश मनुष्यकी अपकीर्तियोंसे ही भरा हुआ है। मनुष्यके बड़ेसे बड़े कुकृत्योंमें भी विराट प्राणशक्तिकी एक प्रचण्ड लीला देखनेको मिलती है। इसीलिए तो वे मनुष्यको इतना आकर्षित करते हैं। गोपालके समान सुबोध-सुशील बच्चोंके निरीह कार्यकलापको लेकर तो कोई इतिहास लिखने बैठता नहीं।

सम्पूर्ण रूपसे भले ही न हो लेकिन बहुत अंश तक यही कारण है कि अन्त तक एक युद्धकी ही कहानी कहनेका मैंने संकल्प किया है। लेकिन घटनाके नहीं रहनेपर तो कहानी नहीं होती। मेरी कहानीकी घटना पलासीका युद्ध है।

भारतीय इतिहासकी इतनी घटनाओंमेंसे सहसा पलासी-युद्धकी घटना-को कहानी कहनेके लिए मैंने क्यों चुना यह प्रश्न पाठकोंके मनमें जगे तो कोई आश्चर्य नहीं। निश्चय ही एक कारण है। वह क्या है उसे थोड़ा खुलकर कहूँ।

मुझे लगता है पलासीका युद्ध एक सन्धिकाल है। इसी सन्धिकालमें बंगालमें मध्य-युगका अवसान होता है और वर्तमान युगका आविर्भाव होता है। यहीं आकर बंगाली जातिकी जीवन-धाराने पीछे एक और मोड़ लिया। धीरे-धीरे अज्ञानका काला कुहरा दूर हो गया और ज्ञानके सूर्यालोकने बंगाली जातिके जीवन और समाजमें एक नयी आत्मश्रद्धाकी सृष्टि की। फल-स्वरूप एक सम्पूर्ण नये ढंगका बंगाली समाज धीरे-धीरे गठित हुआ। पूर्ववर्ती समाजकी किसी बातमें इसका सादृश्य नहीं पाया जाता।

इस प्रकारके समाज निर्माणमें प्रत्यक्ष रूपसे अंग्रेजोंका अधिक हाथ नहीं था। लेकिन अंग्रेजोंके संसर्गसे ही यह गठित हुआ था इसमें भी कोई सन्देह नहीं है। उस समाजका चेहरा पूराका-पूरा विलायती नहीं है, लेकिन पूराका-पूरा देशी भी नहीं है दोनोंको मिलाकर वह नये प्रकारकी एक अद्भुत वस्तु है। इसी समाजने ही एक दिन समस्त भारतवर्षके विद्या-बुद्धि ज्ञानका नेतृत्व लेकर लोगोंको आलोक-पथ दिखलाया था।

इसका इतिहास अभी भी अच्छी तरहसे नहीं लिखा गया है। कभी लिखा जायगा कि नहीं नहीं जानता। जब तक नहीं लिखा जाता तब तक कहानीको लेकर ही सन्तोष करना होगा। दूधकी साध छाछसे नहीं मिटनेपर भी मिठाईके अभावमें गुड़से काम चलानेकी व्यवस्था तो शास्त्रमें ही हुई है।

। १ ।

पलासी-युद्धकी कहानी आरम्भ करनेके पहले कलकत्ताके भित्ति-स्थापन की एक बार चर्चा कर लेनी उचित होगी वह चाहे जितना ही संक्षेप क्यों न हो। क्योंकि कलकत्ताको लेकर ही तो पलासी-युद्धका आरम्भ होता है।

दक्षिणमें बेहाला-बंकुरो और उत्तरमें दक्षिणेश्वर है। इसीके बीच कलीक्षेत्र है जो सावर्ण-चौधुरियोंकी जमींदारीके अन्तर्गत था। मानसिंह जब बंगालके सूबेदार होकर आये तब उन्हींकी सिफारिशसे सावर्ण-चौधुरियों-के पूर्वज लक्ष्मीकान्त गांगुलीने अकबर बादशाहके पाससे इस जमींदारीको पाया था। और इसीके साथ उन्हें मजुमदारकी उपाधि मिली थी। सावर्ण गोत्रवाले गांगुली वंशके इन ब्राह्मण जमींदारोंको लोग बंगला भाषामें केवल सावर्ण-चौधुरी कहा करते थे।

कालीघाटकी भद्रकाली कालिका कालीक्षेत्रकी अधिष्ठात्री देवी हैं। नकुलेश्वर महादेवके साथ वे यहाँपर आनन्दसे विराज रही हैं। किम्वदन्ती प्रचलित है कि उन दिनों चौरंगीके विशाल जंगलमें नाथ-सम्प्रदायी चौरंगी नाथ नामक एक बाबासे पंगु साधु रहते थे। कहते हैं कि उन्होंने ही इस देवी मूर्तिको मिट्टीके नीचेसे पाया था।

यह भी सुननेमें आता है कि पहले भवानीपुर ग्राममें इसी देवीका एक मन्दिर था। नाम सुननेसे ही यह अनुमान किया जा सकता है। बादमें सावर्ण-चौधुरियोंने कालीघाटमें आदि अथवा बूढ़ी गंगाके ऊपर देवीके लिए एक मन्दिर बनवा दिया। उसी समयसे ही कालीघाट, हिन्दुओंका एक बड़ा तीर्थ-स्थान है।

सामाजिक नियमके अनुसार ब्राह्मण-चौधुरी लोग स्वयं देवीके पुजारी नहीं हो सकते थे। इसलिए उन लोगोंने हालदार वंशके एक भोजिय ब्राह्मण परिवारको लाकर कालीघाटमें उनके रहनेका स्थान बनवा उन्हें देवीकी सेवाके लिए नियुक्त किया। उसी हालदार वंशकी धारा प्रधानतः ही देवी मंदिरको रक्षक है।

इसी काली-क्षेत्रके मध्यभागमें तीन छोटे-छोटे नगण्य ग्राम थे। उत्तरमें सुतानुटि बीचमें कलकत्ता तथा दक्षिणमें गोविन्दपुर था। इन्हीं तीन गाँवोंको लेकर ही कलकत्ता शहर बसा था। आज हम लोग कलकत्ताको इतना बड़ा शहर देखते हैं। पृथिवीके एक बड़े शहरके रूपमें इसकी ख्याति है। परन्तु उस समय यह सारा-का-सारा जंगल था। चारों ओर घने-घने कीचड़से भर छोटे-छोटे जलाशय सेवारसे भरे पोखर, सोतहीन जलवाली निम्नभूमि तथा उसमें चप-चप करते हुए जंगल थे। उसीके बीच कुछ धानकी खेती कुछ फल-फूलके बाग और बाकी सबमें होगला (जलमें चप-चप करनेवाली भूमिमें उत्पन्न होनेवाला तृण विशेष) की झाड़ी और बाँसोंका झुरमुट था।

चलनेके लिए बड़ा रास्ता वही एक था। पगली गली जैसा टेढ़ा-मेढ़ा वह उत्तरमें चित्पुर ग्रामसे दक्षिण कालीघाट तक चला गया है। उससे होकर तीर्थयात्री दल बाँधकर देवीके दर्शनके लिए जाते। सम्पूर्ण रास्तेके दोनों तरफ झाड़-झंखाड़ोंमें दस्युओं—डकैतोंका अड्डा था। थोड़ा भी असावधान होनेपर धन-प्राण दोनों ही जाते। अनगिनत हिंस्र जन्तु भी थे। ऊँचे स्थलोंमें बनैले सूअर साँप और बाघ तथा जलसे भरी हुई नीची भूमि और नदियोंमें मगर-घड़ियाल रहते।

एक दूसरा रास्ता भी था। लालदीघीसे शुरू होकर वह पूरबकी ओर साल्ट लेक तक चला गया है। आजकल उसे हम लोग पाराका मैदान कहते हैं। इसी रास्तेसे होकर आस-पासके गाँवोंके रहनेवाले मालपत्र गठरी ले गंगाके किनारे जाते। उस पारके गाँवोंसे व्यापारी नौका लेकर गंगा

पारकर इस पार आते। उनके साथ खरीद-बिक्रीका काम पूरा कर उस पारके लोग गंगा स्नान कर घर लौटते।

कालीघाटके पश्चिमी किनारेपर सावर्ण-चौधुरियोंकी कचहरी थी समूचे गाँवमें केवल मात्र यही एक पक्का मकान था। और थोड़े-से मकान जो इधर-उधर बने हुए थे, उनकी दीवार मिट्टीकी थी और ऊपर फूसका

किंवदन्ती है कि इसी कचहरीमें बैठ कवि-गान करनेवाला (बंगालके गाँवोंमें तुकबन्दी करनेवालोंका दल होता है। इस प्रकारके दो दलोंमें किसी विशेष प्रसंग या विषयको लेकर शास्त्रार्थ होता है। कविगान ही उस प्रत्युत्तर चलता है। गाँववाले इसमें खूब रस लेते हैं।) फिरंगी एन्टनी सावर्ण-चौधुरियोंके दफ्तरमें बहीखाता लिखता और अवसर पाकर गीत रचनामें लग जाता। लेकिन इस किंवदन्तीमें तथ्य बहुत कम है। थोड़ा-स हिसाब लगाकर देखनेपर यह मालूम हो जाता है कि कविगान करनेवाल एन्टनी बहुत बादमें हुआ है। जो एन्टनी सावर्ण चौधुरियोंकी कचहरी काम करते थे उनका कवि-गान करनेवालोंके साथ अगर कोई सम्बन होता तो उमरके लिहाजसे वे कविके पितामह साबित होते।

गंगाका पश्चिमी किनारा वाराणसीके तुल्य है। उसी ओर सभ उच्च श्रेणीवालोंका वास-स्थान था। गंगाके पूर्वी किनारे उस समय जंगल झाड़ थे यह सुन्दर वनका एक अंश ही था। यह कहना ही ठीक होगा कि उस अंचलमें सम्भ्रान्त लोगोंका वास नहीं था। जिनको हम लोग अवज्ञा पूर्वक निम्न श्रेणीका कहते हैं अर्थात् जो हाथकी कमाईसे अपना गुजार करते हैं, अधिकांश वे ही यहाँ थे। और अन्य व्यवसायमें लगे हुए लोगोंमें श्रेणी भी कुछ-कुछ थी। और जिनके बिना काम नहीं चलता, वे भी थे जैसे धोबी नाई तथा एक घर गोसाईं-पुरोहित।

कलकत्तेके विभिन्न मुहल्लोंके नाम इन आदिम अधिवासियोंके साक्षी स्वरूप आज भी वर्तमान हैं। जैसे अहीरी टोला कलू टोला (कोल्हू टोला) जेले टोला (धीवर टोला) कमोर टुली (कुम्हार टोली) मालारी टोला

(शांखकी चूड़ियाँ बनानेवालोंका मुहल्ला) पटुआ टोला (पट-चित्र बनाने वालोंका टोला) कसाई टोला डोम टोला व्यापारी टोला कसाबी टोला थापा-घोसा-पाड़ा (खेत-मजदूर और धोबियोंका मुहल्ला) निकारी पाड़ा (मछमारी करनेवालोंका मुहल्ला) दर्जी पाड़ा कुमोर पाड़ा (बढ़ईका मुहल्ला) मोची पाड़ा हाड़ि-पाड़ा (भंगी मुहल्ला) दुले पाड़ा (कहारों-का मुहल्ला) मुँड़ी पाड़ा कांसारी पाड़ा योगी पाड़ा कामार डांगा (लुहारोंका मुहल्ला) तांती बागान (जुलाहोंकी बस्ती) नाथ बागान इत्यादि। उच्च मनीषाके कृतयों अथवा ग्रामोंके बामुन पाड़ा (ब्राह्मणोंका मुहल्ला) कायेत पाड़ा (कायस्थोंका मुहल्ला) तथा बद्दि पाड़ा (वैद्य जातिका मुहल्ला)—ये सब इस अंचलमें सुननेको नहीं मिलते।

जो थोड़ा दिमागी काम कर सकते अर्थात् जो उन दिनों फ़ारसीनवीस थे वे इस अज्ञात अख्यात स्थानमें किस लोभसे आते ? उन लोगोंका स्थान राजधानीमें था। पहले राजमहलमें उसके बाद ढाकामें और सबके अन्तमें मुर्शिदाबादमें। इनमें कोई-कोई नवाबके दफ़्तरमें काम पाते वैसे अधिकांश बड़े-बड़े जमींदारोंके सिरिश्तोंमें ही पाते।

अंग्रेजोंने किस प्रकार इस सब जंगलको काटकर, जलाशयोंको भरकर, दलदलको पाटकर, रास्ते-घाटका निर्माण कर कलकत्ता शहरकी नींव डाली थी और किस प्रकार धीरे-धीरे उसकी श्री-वृद्धि की थी इसका इतिहास बड़े-बड़े राज्योंके जय करनेके इतिहाससे किसी भी तरह कम नहीं है। कितने कठिन अध्यवसायके कष्टको एक दम तुच्छ मानने और मृत्युके बाद भी विचलित नहीं होनेकी कहानी इस शहरके अतीतके गर्भमें छिपी हुई है। उसकी सब बात इन दिनों सुनकर, पढ़कर, हो सकता है किसीको विश्वास ही न हो। लगेगा जैसे यह सब कोरा बकवास है।

सबेरे जो आदमी भला-चंगा देखा गया सन्ध्या समय उसको ही कन्धेपर डालकर कब्रिस्तानमें ले जानेकी पुकार मची। सन्ध्या समय जिसके साथ खाना-पीना आमोद प्रमोद किया गया उसीको सबेरे मोरहरीमें

मिट्टी डालकर खोदना पड़ा। तो भी अदम्य उत्साह, काम-काजमें विराम नहीं तो भी यही सुन पड़ता है, आगे बढ़ो आगे बढ़ो।

नगण्य ग्राम होनेपर भी अंग्रेजोंके आनेके पहले पीठस्थानके निकट होनेके कारण कलकत्ताकी थोड़ी ख्याति थी। बंगलामें लिखी हुई दो पुरानी हस्तलिखित ग्रन्थोंमें कलकत्ताका उल्लेख है। पहला हस्तलिखित ग्रन्थ विप्रदास पिपलाइका 'मनसा मंगल' है और दूसरा विख्यात मुकुन्दराम चक्रवर्तीका 'चण्डी मंगल' है।

विप्रदासका काव्य सन् १४९५ अथवा १४९६ ई० का लिखा हुआ है। लेकिन उसके जिस अंशमें कलकत्ताके सम्बन्धमें लिखा हुआ है, उसे बहुत-से पण्डित प्रक्षिप्त मानते हैं फिर भी मुझे लगता है, जिन्होंने यह प्रक्षेप किया था वे विप्रदासके समान उतने प्राचीन नहीं होनेपर भी हम लोगोंकी तुलनामें निरे अर्वाचीन भी नहीं हैं।

मनसा मंगलमें दिया हुआ है—

डाहिने कोतरं बाहि कामारहाटि बामे।
पूर्वेते आड़ियादह घुघुड़ि पश्चिमे॥
चित्पुरे पूजे राजा सर्वमंगला।
निशिदिशि बाहे डिंगा नाहि करे हेला॥
ताहार पूर्व कूल बाहि एड़ाय कलिकाता।
बतड़े चापाय डिंगा चाँद महारथा॥

कवि कंकण मुकुन्दरामका 'चण्डी काव्य' १५७४ से १६०४ के बीचका लिखा हुआ है। मुकुन्दराम लिखते हैं—

त्वराय चलिल तरी तिलेक ना रय।
चित्पुर सालिखा एड़ाइया जाय।
कलिकाता एड़ाइल बेनियार बाला।
बेतड़ेते उत्तरिल अवसान बेला॥

(टोकरी चुड़ियाँ बनानेवालोंका मुहल्ला) पटुआ टोला (पट-चित्र बनाने वालोंका टोला) कसाई टोला डोम टोला ग्वालारी टोला कलाली टोला बाग-बोस-पाड़ा (बस-मजदूर और कोचवानोंका मुहल्ला) निकारी पाड़ा (मछली पकड़नेवालोंका मुहल्ला) दर्जी पाड़ा सुतोर पाड़ा (बढ़ईका मुहल्ला) मोची पाड़ा हाड़ि-पाड़ा (भंगी मुहल्ला) दुले पाड़ा (कहारों-का मुहल्ला) मुँड़ि पाड़ा कांसारी पाड़ा धोबी पाड़ा कामार डांगा (लुहारोंका मुहल्ला) तांती बागान (जुलाहोंकी बस्ती) माथ बागान इत्यादि । उच्च पेशेवाले वर्गों अथवा ग्रामोंके बामुन पाड़ा (ब्राह्मणोंका मुहल्ला) कायस्थ पाड़ा (कायस्थोंका मुहल्ला) तथा वैद्य पाड़ा (वैद्य जातिका मुहल्ला)—ये सब इस अंचलमें सुननेको नहीं मिलते ।

जो लोग दिमागी काम कर सकते अर्थात् जो उन दिनों उच्चश्रेणीमें थे वे इस अज्ञात अरण्य स्थानमें किस लोभसे आते ? उन लोगोंका स्थान राजधानीमें था । पहले राजमहलमें उसके बाद ढाकामें और उसके अन्तमें मुर्शिदाबादमें । इनमें कोई-कोई नवाबके दफ्तरमें काम पाते वैसे अधिकांश बड़े-बड़े जमींदारोंके सिरिश्तामें ही पाते ।

अंग्रेजोंने जिस प्रकार इस सब जंगलको काटकर, जलागड्ढोंको भरकर, दलदलको साफकर, पक्की-रास्ता निर्माण कर कलकत्ता शहरकी नींव डाली और जिस प्रकार धीरे-धीरे उसकी श्री-वृद्धि की थी इसका इतिहास बड़े-बड़े राज्योंके जय करनेके इतिहाससे किसी भी तरह कम नहीं है । जिस अग्नि मन्त्रशक्तिके कष्टको एक दम तुच्छ मानने और मृत्युसे तक भी विचलित नहीं होनेकी कहानी इस शहरके अतीतके मर्ममें छिपी हुई है । उसको सब बात इन दिनों सुनकर कहनेपर, हो सकता है किसीको विश्वास ही न हो । तथापि वैसे यह सब कोरा बकवास है ।

सवेरे जो आदमी भला-चंगा देखा गया सन्ध्या समय उसको ही कम्पेसर होकर कब्रिस्तानमें ले जानेकी पुकार मची । सन्ध्या समय जिसके साथ खाना-पीना आमोद प्रमोद किया गया उसीको सवेरे भोरहुएमें

मिट्टी डालकर औटना पड़ा। तो भी अदम्य उत्साह काम-काजमें विराम नहीं तो भी यही धुन पड़ता है, आगे बढ़ो आगे बढ़ो।

नगण्य ग्राम होनेपर भी अंग्रेजोंके आनेके पहले, पीठस्थानके निकट होनेके कारण, कलकत्ताकी थोड़ी ख्याति थी। बंगलामें लिखे हुई दो पुरानी हस्तलिखित ग्रन्थोंमें कलकत्ताका उल्लेख है। पहला हस्तलिखित ग्रन्थ विप्रदास पिप्पलाइका 'मनसा मंगल' है और दूसरा विख्यात मुकुन्दराम चक्रवर्तीका 'चण्डी मंगल' है।

विप्रदासका काव्य सन् १४९५ अथवा १४९६ ई० का लिखा हुआ है। लेकिन उसके जिस अंशमें कलकत्ताके सम्बन्धमें लिखा हुआ है, उसे बहुत-से पण्डित प्रक्षिप्त मानते हैं फिर भी मुझे लगता है, जिन्होंने यह प्रक्षेप किया था व विप्रदासके समान उतने प्राचीन नहीं होनेपर भी हम लोगोंकी तुलनामें निरे अर्वाचीन भी नहीं हैं।

मनसा मंगलमें दिया हुआ है—

> डाहिने कोतरं बाहि कामारहाटि बामे।
> पूर्बेते भाड़ियादह घुसुड़ि पश्चिमे॥
> चित्पुरे पूजे राजा सर्बमंगला।
> निशिदिसि बाहे डिंगा नाहि करे हेला॥
> ताहार पुब कूल बाहि एड़ाय कलिकाता।
> बेतडे आपाय डिंगा चाँद महारथा॥

कवि कंकण मुकुन्दरामका 'चण्डी काव्य' १५७४ से १६०४ के बीचका लिखा हुआ है। मुकुन्दराम लिखते हैं—

> त्वराय चलिल तरी तिलेक ना रय।
> चितपुर सालिखा एड़ाइया जाय।
> कलिकाता एड़ाइल बेनियार बाला।
> बेतड़ेते उत्तरिल अवसान बेला॥

इसके अलावा बादशाह अकबरके प्रधान मन्त्री अबुल फ़ज़लके 'आइने अकबरी' (१५९६ सालं) में भी कलकत्ताका उल्लेख है। उसमें कहा गया है कि कलकत्ता सातगाँ अथवा सप्तग्राम सरकारमें अन्तर्भुक्त है।

: २

अंग्रेजोंके आनेके बहुत पहले ही यूरोपसे इस देशमें वाणिज्य करनेके लिए सर्व-प्रथम पोर्तुगीज लोग आये। बंगालमें इन लोगोंका प्रधान अड्डा चटगाँव था। वहाँसे वे प्राय समस्त पूर्वी बंगालमें फैल गये थे। इनमेंसे अनेक युद्ध विद्यामें निपुण होनेके कारण पूर्व देशके छोटे-बड़े बहुतसे ज़मींदार भूमिपतियोंके सैन्यदलके सेनापति बन बैठे थे।

जैसा कि सर्वत्र होता है, व्यवसायियोंके पीछे-पीछे बहुतसे मिशनरी लोग भी धर्मकी आजमाइश करने आने लगे। और उनके साथ ही पोर्तुगीज ईसाई साधु-सन्यासियोंका दल भी कुछ कम नहीं आया। निम्न श्रेणीके पोर्तुगीजोंका प्रधान काम जलदस्युता था और उसके साथ ही इस देशके लोगोंको पकड़ क्रीतदास बना विदेशमें चालान करना था।

बंगालका सम्पूर्ण दक्षिण-पूर्व भाग इन लोगोंके अत्याचारसे बिलकुल बर्बर हो गया था। नाम सुनते ही सभी भयसे काँपते। इस जातिके लोगोंका प्रधान अड्डा सन्दीप था। वहाँसे समस्त सुन्दरबन-अंचलपर प्रहार करते-करते वहाँके समृद्ध सुप्रसिद्ध शहरोंको उन लोगोंने श्मशान बना दिया था।

जो व्यापारी थे वे प्रत्येक वर्ष गंगासे होकर ऊपरकी ओर चले आते। खरीद-बिक्रीका काम समाप्त होनेपर, फिर वे अपने स्थानपर लौट जाते।

पोर्तुगीजोंके बड़े-बड़े जहाज ऊपरकी ओर बहुत दूर तक नहीं जा पाते इसलिए उन लोगोंने मटियाबुर्जके उस पार बेतड़ (वर्तमान कालका बोटरा) नामक स्थानमें अपना अड्डा कायम किया। उससे थोड़ी ही दूरपर एक मिट्टीका किला था आत्मरक्षाके लिए उन लोगोंने उसे भी दखल कर

लिया। उस क़िलेके मुग़लोंके हाथमें आनेपर वहाँ एक पुलिस थाना बना। उसीसे क़िलेका नाम भी थाना हो गया। वहाँ आजकल बोटनिकल गार्डेन्स के सुपरिन्टेण्डेण्टका सुसज्जित मकान है। चलने-फिरनेकी और थोड़ी सुविधा होनेपर पोर्तुगीज़ोंने यहींका अपना अड्डा बनाया।

पोर्तुगीज़ोंके साथ व्यापारको ध्यानमें रख चार बसाक-परिवार और एक सेठ-परिवारने सप्तग्राम छोड़कर कलकत्तेके दक्षिण गोविन्दपुर ग्राममें आकर रहना प्रारम्भ किया। सेठ बसाक तन्तुवाय जातिके होनेपर भी उस समय सूत नहीं कातते और न करघा चलाते। अब वे कपड़ेका कारबार करते। सूत ख़रीदकर वे ताँतियोंको कपड़ा बुननेके लिए देते। कपड़ा तैयार होनेपर उसे ही अधिक मूल्यपर विदेशियोंके हाथ बेचते। महलोंके कहलानेवालोंमें ये सेठ-बसाक आदि ही पूर्ण रूपसे आदिम कल-कतिया हुए।

पोर्तुगीज़ लोग जब यहाँके आ जमे तब सेठ बसाकोंने व्यापारकी सुविधाके लिए कलकत्तेके उत्तर सुतोनुटि ग्राममें हाट लगानेकी व्यवस्था की। यह हाट ही चन्द दिनों गंगाके इस पार-उस पार ख़रीद-बिक्रीका एक प्रधान केन्द्र हो गया था। उसीके सामने गंगाके ऊपर सुतोनुटि-घाट था। वहींपर पोर्तुगीज़ोंके जहाज़ आ टिकते।

पोर्तुगीज़ लोग धीरे-धीरे और कुछ बढ़े। अन्तमें सप्तग्राममें आकर जम गये। सरस्वती नदीके ऊपर स्थित सप्तग्रामका उस समय ख़ूब बोल-बाला था। उसमें भरा-पूरा होनेका भाव पूरी मात्रामें था। वह अत्यन्त समृद्ध था। वहाँ देश-विदेशके माल आता-जाता। वहींपर ही वह एक हाथसे दूसरे हाथमें जाता। भीड़ भाड़ चमक-दमक चारों ओरसे सप्तग्राम आठों पहर गुलज़ार रहता।

लेकिन अन्तमें एक ऐसा दिन आया कि सरस्वती नदीके जलशून्य होनेसे सप्तग्रामकी वह चमक-दमक जैसे अकस्मात् एक दिनमें ही नष्ट-भ्रष्ट होकर समाप्त हो गई। एक-एक कर सभी गंगाके किनारे हुगली चले आये।

देखते-देखते हुगली भी समृद्ध हो उठी। यह हुगली नाम पोर्तुगीजोंका ही दिया हुआ है। यह गोमूजीसे बिगड़कर बना है। देशी भाषामें इसका अर्थ गोदाम है। कालक्रमसे हुगली मुगल-साम्राज्यकी दक्षिण बंगालमें अन्तिम बड़ी चौकी हो गयी। एक मुगल फौजदार वहाँपर रहकर उस अंचलकी निगरानी करता।

पोर्तुगीजोंपर अकबर बादशाहकी सुदृष्टि पड़ी। बादशाहके दरबारमें क्रिश्चियन पादरियोंका अच्छा सम्मान था। पोर्तुगीज लोग जिसमें हुगलीमें स्वामी भावसे रह सकें और भले लोगोंके समान व्यवसाय-वाणिज्य कर सकें इसके लिए बादशाहने उन लोगोंको एक फ़रमान लिख दिया।

अकबर और जहाँगीरके शासन-कालमें पोर्तुगीज लोग बड़े मजेमें रहे। उनके पादरियोंने जहाँगीरके रंग-ढंगको देखकर यह बिलकुल पक्का समझ लिया था कि बादशाह शीघ्र ही निश्चित रूपसे क्रिश्चियन-धर्म ग्रहण कर लेंगे। किन्तु अन्ततक उनकी यह आशा पूरी नहीं हुई। हिन्दू लोगोंने भी यह समझ रखा था कि इन दोनों बादशाहोंके शासनकालमें उनका हिन्दुत्व ठीक बचा रहेगा। और उनकी यह धारणा बहुत दूरतक ठीक रही।

पोर्तुगीज लोग अगर केवल व्यापार लेकर ही रहते तो हो सकता है अंग्रेजोंकी तरह वे भी इस देशमें बहुत दिनोंतक अच्छी तरह टिके रह पाते। लेकिन उन्हें एक बहुत ही खराब रोग था कि वे इस देशके लोगोंको समय-समयपर पकड़कर क्रिश्चियन बनाया करते। मौका पाते ही बच्चोंको पुराणवालोंके समान इस देशके छोटे-छोटे लड़के-लड़कियोंको पकड़कर क्रिश्चियन बनाकर छोड़ देते। चाहे वह हिन्दू हो चाहे मुसलमान।

वे सब देशी क्रिश्चियन नामसे क्रिश्चियन होनेपर भी आचार-व्यवहार, खान-पान बात-चीत यहाँतक कि धर्म-कर्ममें भी पूरी तरह देशी ही रह जाते। लेकिन बड़े होनेपर उनके भाग्यमें क्रीत दास-दासी होनेके सिवा और कोई चारा नहीं रह जाता। उन दिनों क्रीत दासकी खरीद-बिक्रीका

सबसे खूब प्रचलन था। इस नये क्रिश्चियन लड़के-लड़कियोंमें बहुतोंको इसी कारणसे विदेशमें चालान होना पड़ता।

शाहजहाँ किन्तु अन्य प्रकृतिके थे। लगता है जैसे उनके शरीरमें कुछ हिन्दू रक्त रहनेके कारण वे पहले-पहल अच्छे-खासे कट्टर मुसलमान हो गये थे। उनके पुत्र औरंगजेबने लगता है हिन्दू मन्दिरको विध्वंस करनेकी विद्या बापके पास ही सीखी थी। पोर्तुगीजोंके कीर्ति-कलापकी कहानी जब शाहजहाँके कानोंमें पड़ी तो अत्यन्त क्रुद्ध होकर उन्होंने कासिम खाँ नामक एक जबर्दस्त आदमीको हुगलीका फौजदार बनाकर भेज दिया और कह दिया कि जैसे भी हो क्रिश्चियन कुत्तोंको बिलकुल समुद्र पार भगाकर ही छोड़ना।

पोर्तुगीजोंपर बादशाहका आन्तरिक क्रोध बराबर बना रहा। बादशाह जब युवराज थे तब बंगालमें रहकर उन्होंने अपने बापके विरुद्ध विद्रोहकी घोषणा की थी। उस समय पोर्तुगीजोंसे सहायताकी प्रार्थना उन्होंने की लेकिन विफल ही रहे। इस बातको शाहजहाँ बादशाह होनेपर भी एकदम नहीं भूले।

और भी एक बात थी। पोर्तुगीजोंकी शक्ति दिन-दिन जिस ढंगसे बढ़ रही थी उससे लगता है कि बादशाहके मनमें भय हो गया था कि और उसे अधिक बढ़ने देनेपर अन्तमें शायद समस्त बंगाल-मुल्कको पोर्तुगीजोंके हाथमें छोड़ देना पड़ेगा।

डेढ़ लाख सेना लेकर कासिम खाँने हुगलीपर घेरा डाल पोर्तुगीजोंको प्रायः निर्मूल करके ही छोड़ा (सन् १६३२ ई०)। उनका और कोई चिह्न ही उन्होंने अवशिष्ट नहीं रहने दिया। जो बच गये उन्हें बन्दी बना कर आगरा रवाना कर दिया।

उनके तैयार किये हुए एक गिर्जेका भग्नावशेष केवल रह गया। हुगलीके निकट ही बंडेलमें वह गिर्जा है। और कुछ दिनों बाद बादशाहकी

क्षमा प्राप्त कर पोर्तुगीज लौटे और उसे पक्का बनवा दिया। बंडेलका यह गिर्जा आज भी वहीं खड़ा है। आज भी यह भारतीय रोमन कैथोलिक क्रिश्चियनोंका एक अत्यन्त पवित्र तीर्थ स्थान है।

इसके अलावा पोर्तुगीज लोग कुछ शब्द छोड़ गये हैं। वे सभी शब्द आज पूरी तरहसे बंगला हो गये हैं। फीता चाबी बाल्टी नीलाम बेहला गिरेक तौलिया साबुन आलपीन बोतल आलमारी आदि नित्य व्यवहारके शब्द किसी समय पोर्तुगीज शब्द थे अगर यह स्पष्ट रूपसे बता नहीं दिया जाय तो कितने बंगाली आज उसे समझ पायेंगे?

कहना है और एक बात बहुतोंको मालूम नहीं। पोर्तुगीजोंने ही पहले-पहल बंगलाकी पुस्तक छपी। वैसे उसमें उन्होंने बंगला लिपिके बदले रोमन लिपिका प्रयोग किया। सन् १७४१ ई० में लिसबन शहरमें यह छपी। इसका नाम 'कृपार-शास्त्रेर-अर्थभेद' है। पादड़ी मनोएल-दा आसुम्पशाओ लिखी हुई है। यद्यपि बहुत स्थलोंपर टीका-टिप्पणी छोड़कर पुस्तकका अर्थ एकदम समझमें नहीं आता फिर भी बीच-बीचमें सरल भाषा में इसमें मजे-मजेके क़िस्से दिये हुए हैं। उनमें साहित्य-रसका भी कुछ आभास है। इसके अलावा पोर्तुगीजसे बंगलाका एक व्याकरण-शब्दकोष भी उसी समय उसी जगहसे छपा। ग्रन्थकार वही पादरी साहब हैं।

एक समय पोर्तुगीज भाषा परवर्ती कालकी हिन्दुस्तानी भाषाके समान देशी लोगोंके साथ विदेशी लोगोंकी बातचीतका माध्यम थी। इसीलिए हम देखते हैं कि अंग्रेजी कम्पनीके डायरेक्टर भी यहाँके अपने मुंशियोंको पोर्तुगीज भाषापर अच्छी तरह अधिकार करनेका बार-बार आदेश देते हैं।

हुगलीसे भगाये जानेपर पोर्तुगीज बंगालमें फिर प्रबल हो सिर नहीं उठा सके। व्यापार छोड़कर पोर्तुगीज लोग बंगालके पूर्व-दक्षिण अंचलमें और भी अच्छी तरहसे जल-दस्युगिरीमें प्रवृत्त हुए। पोर्तुगीज जल-दस्युओंका अनाचार-अत्याचार बहुत दिनोंतक चलता रहा। उसकी बहुत-सी

विविध कहानियाँ आज भी सुननेको मिलती हैं। अन्तमें शाइस्ता खाँ बंगालके नवाब होकर आये और उन्होंने इन लोगोंकी पूरी खबर ली।

पोर्तुगीजोंके वंशधरोंमें अनेक यहीं विवाहादि कर बंगाली समाजमें घुल-मिल गये हैं। पूर्वी बंगालमें ऐसे अनेक पोर्तुगीज वंशके अवशेष हैं जिन्हें अब और अलग कर पहचानना कठिन है।

। ३ ।

इस ओर डच लोग भी घात लगाये बैठे थे। पोर्तुगीजोंके हुगली छोड़ते ही डच लोग उनके व्यवसायके उत्तराधिकारी बन बैठे।

इसके कुछ पहले (सन् १६२५ ई०) हुगलीमें मुगल फौजदारके बिलकुल नाकोंके नीचे रहना खतरेसे खाली नहीं समझकर डच-ईस्ट-इंडिया कम्पनीने वहाँसे थोड़ा हटकर चुँचड़ामें अपने लिए स्थान कर लिया था।

डच लोग बंगालमें बड़े मजेमें पैसे कमा रहे हैं, यह देख अंग्रेज लोग भी बंगालमें आनेका उपक्रम करने लगे। इसके पहले ही अंग्रेज लोग सूरत मद्रास और बालेश्वरमें पैठ एक-एक कोठी बनवा कर जम चुके थे। उन्हें लगा कि अगर वे बंगालमें आ जायें तो उनका व्यापार कुछ खराब नहीं चलेगा। क्योंकि बंगालका शोरा रेशम, चीनी चावल और कपड़ा—ढाकाका मलमल छपी हुई छींट तथा मोटी धोती—उस समय संसार भरमें प्रसिद्ध थे। और साथ ही यहाँ पंसारियोंवाले कुछ-कुछ मसाले आदि भी थे। केवल अकेले डच लोग उसका फल क्यों भोगा करें?

वास्तवमें इन सब कोठियोंका मालिक एक अंग्रेज व्यापारी-कम्पनी थी। लन्दन शहरके कई बड़े-बड़े नामी-गिरामी सौदागरोंने मिलकर साझेदारीमें यह कम्पनी खोली थी। सन् १६०० ई० में इंगलैंडकी रानी एलिजाबेथने इन्हें एक चार्टर प्रदान किया। उसीके बलपर ये लोग दुनियाके पूर्वी भाग के व्यापारपर एकाधिपत्य जमानेकी चेष्टामें लगे। पूर्व देशका उन दिनों

ईस्ट इण्डिस नाम था। इसीलिए इस कम्पनीका संक्षिप्त नाम ईस्ट इण्डिया कम्पनी पड़ा।

ईस्ट इण्डिया कम्पनीका हेड क्वार्टर लन्दनमें था। कम्पनीके स्टाक-होल्डर, एक गवर्नर और चौबीस डायरेक्टर तीन-तीन वर्षके अन्तरसे निर्वाचित करते। ये ही लन्दनके इण्डिया हाउसमें बैठे-बैठे चिट्ठी-पत्रीके द्वारा कम्पनीका काम चलाते। वैसे असली काम उन्हें यहांके अपने कर्मचारियोंके द्वारा ही चलाना पड़ता।

कम्पनीके डायरेक्टर इन सब कर्मचारियोंका लन्दनसे ही चुनाव कर और काम सौंप अपने जहाजपर इस देशमें भेजते। यहाँ आकर उन्हें डायरेक्टरोंके आदेशानुसार ही चलना पड़ता। लेकिन कार्यक्षेत्रमें उन सभी आदेशोंको मानकर चलना सब समय सम्भव नहीं होता। 'बेचे वर्स विपी-तमें'—यह नियम ही माना जाता जैसा कि सर्वत्र होता है।

तीस हजार पाउण्ड अर्थात् उन दिनोंका तीन लाख रुपयेका मूलधन चार जहाज और एक छरछाली छोटी नौका (Pinnace) लेकर सन् १६०१ ई०में ईस्ट इण्डिया कम्पनीका प्रथम वाणिज्य-अभियान शुरू हुआ।

भाग्यकी बलिहारी! कई वर्ष आते-न-आते कम्पनीका व्यापार खूब जोरोंमें बढ़ा। ईस्ट इण्डिया कम्पनीका स्टाक खरीदनेके लिए इंगलैण्डके राजा-रजवाड़े अमीर-उमराव तथा धनी सेठ-सौदागरोंमें होड़-सी लग गई। कम्पनी दिनोंदिन फूलती-फलती गयी।

अंग्रेजोंने सन् १६५० ई० में हुगलीमें आकर एक कोठी बनवा साधारण भावसे ही पहले-पहल अपने व्यवसायका श्रीगणेश किया।

इस समय एक सुविधा हो गयी थी। शाहजहांका मँझला लड़का शुजा उस समय बंगालका गवर्नर था। राजमहलमें रहकर वह शासन करता। उसीके दरबारमें गेब्रियल बाउटन नामक एक अंग्रेज डाक्टरका खूब सम्मान था। नवाबका अनुग्रह पाकर उनकी कृपासे डाक्टर साहब राजमहलमें बड़े आराममें रहते। इन्हींने शुजासे बहुत कह-सुनकर सन् १६५२ ई० में

अंग्रेजोंके लिए एक सनदकी व्यवस्था करता थी जिससे अंग्रेज लोग वार्षिक तीन हजार रुपया देकर बंगालमें निर्विघ्न व्यापार चला सकें।

अंग्रेज लोगोंने धीरे धीरे हुगलीसे प्रारम्भ कर मालदह, पटना ढाकामें अपनी कोठी बना ली।

लेकिन औरंगजेबके शासन कालमें प्रारम्भसे ही अंग्रेज लोग हुगलीके फौजदारके कोपभाजन बन गये थे। अंग्रेजोंको वह दबना नहीं सकता था। वे उसकी आँखोंके काँटे थे। रोज कुछ-न-कुछ लेकर खटपट होती ही रहती।

इसका एक और भी कारण था। दूसरे-दूसरे यूरोपीय व्यापारियोंके समान अंग्रेज लोग मुगलोंके साथ मिल-जुलकर नहीं रह पाते। अंग्रेज लोग न्यायोचित टैक्स आदिके अलावा और कुछ देना नहीं चाहते। आजकलके समान उस समय भी ऊपरसे कुछ दिये बिना काम नहीं चलता था। इसके अलावा अंग्रेजोंकी स्वाधीन प्रकृति स्वच्छन्द गतिविधि गम्भीर व्यवसाय बुद्धि—ये सभी उस कालके अधिकारी वर्गको आँखोंमें खटकनेवाली चीजें थीं। इसपर भी अंग्रेजोंमें आने जैसा एक अलग अलग रहनेका भाव था। बराबर ही जैसा एक नाक-भौं सिकोड़नेका स्वभाव था। लगता जैसे कहना चाहते हैं मुझे स्पर्श न करो अलग रहो।

बंगालके तत्कालीन गवर्नर मीर जुमला विदेशी वणिकोंके प्रति खूब सदय नहीं होनेपर भी और अन्य जरूरी कार्योंमें व्यस्त रहनेके कारण अंग्रेजोंके ऊपर उतनी नजर नहीं रख सके। सन् १६६३ ई० में मीर जुमलाकी मृत्युके बाद औरंगजेबके मामा शाइस्ता खाँ बंगालके नवाब होकर आये।

मीर जुमलाके समान शाइस्ता खाँ अंग्रेजोंसे प्रतिवर्ष तीन हजार रुपया वसूल कर पहले-पहल बहुत दूर तक चुपचाप ही रहे। क्योंकि युद्धमें उनके हाथमें भी बहुतसे काम थे। उनमें प्रधान था पोर्तुगीज-अराकान-दस्युओंको दमना। इसीलिए जब अंग्रेजोंने शाइस्ता खाँसे उनके कर्मचारियोंके विरुद्ध

शिकायत की कि वे समय-असमय अंग्रेजोंका माल रोकते हैं, उनके व्यवसाय-में बाधा पहुँचाते हैं। जब तब रुपया माँग बैठते हैं, तब कृपाकर उन्होंने ऐसा हुक्म दिया कि जिसमें पहलेकी नाई ही स्वच्छन्द भावसे व्यापारकर अंग्रेज अपना जीवन जुटा सकें। कर्मचारियोंसे उन्होंने कह दिया कि वे अनुचित ढंगसे अंग्रेजोंके पीछे न पड़ें।

लेकिन अधिक दिन यह नहीं चल पाया। अंग्रेजोंके लिए तब दुख हुआ जब दक्षिणमें शिवाजीसे पराभूत होकर शाइस्ता खाँ दुबारा बंगालके नवाब होकर आये।

सरकारी खजानेकी पूर्ति करनेके बाद जो कुछ बचता उससे शाइस्ता खाँ जैसे आदमीकी नवाबी नहीं चल पाती। कहा जाता है कि उनका दैनिक खर्च ही पचास हजार रुपये था। नवाब साहबको रुपया जमा करनेकी भी बुरी बीमारी थी। फलस्वरूप जो होनेका था वही हुआ। अर्थात् रुपयेकी आमदनी करनेके जितने तरीके हो सकते हैं उनमेंसे एकको भी उन्होंने नहीं छोड़ा। उससे प्रजा मरे या जिये उससे उनका कुछ आता जाता नहीं।

इसका परिणाम यह हुआ कि लोगोंके हाथमें इतना कम रुपया रह गया कि अत्यन्त ही कम दाममें चीजें बिकने लगीं। चावलका दाम रुपयेका आठ मन हो गया। शाइस्ता खाँ जब बंगालकी गवर्नरी छोड़कर ढाकासे दिल्ली गये तो शहरके पश्चिमी दरवाजेसे होकर गये और उस दरवाजेको हमेशा बन्द करवाते गये। बल्कि साथ ही दरवाजेके ऊपर लिखवा दिया कि जितने दिन चावल फिर रुपयेका आठ मन न हो जाय तबतक कोई भी गवर्नर इस दरवाजेको न खोले। सन् १७४० ई० सरफराज खाँ बंगालके नवाब हुए तब यह गेट फिर एक बार खोला गया था। उस समय चावल-का दाम उसी प्रकारसे गिर गया था।

किन्तु इसमें शाइस्ता खाँके लिए गर्व करनेको कुछ भी नहीं था। एक तो पूर्वी बंगाल चावलकी ही आकर है और उसपर लोगोंके हाथ खरीदनेके

लिए पैसे नहीं थे। इसलिए इकनामिक्सके नियमके अनुसार चीजोंका दाम सस्ता होता ही। इसमें कुछ भी आश्चर्यकी बात नहीं।

बंगाल प्रान्तसे जानेके समय शाइस्ता खाँ इस प्रान्तसे अड़तीस करोड़ रुपये चूस कर ले गये थे। यह हम लोगोंको एक्सप्लेयरेशन नहीं मालूम होता। क्योंकि शाइस्ता खाँ तो इसी देशके थे। बंगालको पेरकर यहाँसे रुपया लेकर सिर्फ दिल्लीमें ही तो जाकर जम गये। देशका रुपया देशमें ही तो रह गया!

विदेशी व्यापारियोंका माल रोक रखने उनको भय दिखानेके साथ-ही-साथ मजेमें दो पैसे वसूल किये जा सकते हैं। ऐसी सुविधा क्या सहज ही छोड़ी जा सकती है? इसीलिए रोज ही एक-न-एक उत्पात अंग्रेजोंके सर पर होता ही रहता। अंग्रेजोंके हाथमें उस समय न ढाल थी न तलवार। वे बाध्य होकर घूस देते और बीच-बीचमें फौजदारके अत्याचारकी बात चिट्ठीमें लिखकर शाइस्ताखाँ तक पहुँचाते। ढाका जाकर हुगलीकी अंग्रेजी कोठीके अध्यक्ष विलियम हेजेसने नवाबके पास स्वयं दरबार किया किन्तु उसका कोई फल नहीं हुआ।

अंग्रेजोंने तर्क उपस्थित किया सुलतान सुजा ही तो साल-साल तीन हजार रुपया महसूल लेकर व्यवसाय करनेकी अनुमति दे गये हैं। शाइस्ता खाँने उसके जवाबमें कहा कि सुलतान सुजाने जो सनद दी थी वह बादशाही फर्मान तो नहीं है। इसलिए वे जितने दिन बंगालके गवर्नर थे उतने दिनों तक उसकी सनद भी कारगर थी। लेकिन बादमें जो लोग गवर्नर होकर आये वे लोग सुजाकी सनदको क्यों मानेंगे? इसके अलावा सुजाके समय तुम लोगोंका व्यापार ही कितना था और इस समय क्या हो गया है, बतलाओ तो?

लेकिन अंग्रेजोंने अपनी जिद नहीं छोड़ी। 'बड़े लोगोंकी एक बात'के समान वे यही कहते रहे, व्यापारमें वृद्धि हो या न हो लेकिन महसूल (कर)

हम कोप लेंगे बस वही तीन हजार रुपये। सुल्तान शुजा सनद दे गये हैं। अंग्रेजवाले पलटा जवाब दिया। अतएव विवाद मिटा नहीं।

अन्तमें एक दिन झगड़ा चरमपर पहुँच गया। सुलगते-सुलगते एक दिन हाथापाईकी नौबत आ पहुँची। उस समय हेजेस साहब इस देशमें नहीं थे। उनके बाद मीर कई साहब प्रधान होकर आये गये। जोब चार नक उन दिनों हुगलीमें कम्पनीके एजेन्ट थे। यह सन् १६८६ ई० की बात है।

जोब चारनक इसके बहुत पहले अर्थात् सन् १६५५ ई० में पहले-पहल इस देशमें आये। प्रारम्भमें थोड़े दिन कासिम बाजारमें रहनेके बाद उनकी बदली पटनेकी अंग्रेजी कोठीमें हुई। इसके बाद कासिम बाजार कोठीमें एकदम प्रधान होकर आये।

कासिम बाजारमें उनके रहते-रहते वहाँके दलालोंके गुमाश्तोंने बकाया रुपयेके लिए कम्पनीपर नालिश की। जोब चारनक तथा कासिम बाजार-कोठीके अन्य-अन्य अधिकारियोंके ऊपर चालीस हजार रुपयेकी डिग्री हुई। चारनकने ढाकामें अपील की लेकिन वह अपील डिसमिस हो गयी।

तो भी चारनकने रुपये नहीं दिये। हुक्म हुआ उन्हें ढाका जाना पड़ेगा। ढाका जानेका मतलब था जब तक रुपया वसूल न हो जाय तब तकके लिए कैद रहना। चारनक यह अच्छी तरह जानते थे। ढाका न जाकर वे चुपकेसे हुगली भाग आये। कासिम बाजार जाकर मुगल फौजने वहाँकी अंग्रेजी-कोठीपर दखल जमा लिया।

इस देशमें बहुत दिन रहते-रहते जोब चारनक अच्छी तरह समझ गये थे कि इस देशमें खूब जोर-व्यवसाय चलानेके लिए केवल मुगलोंकि सनद फरमानके ऊपर निर्भर करनेसे नहीं चलेगा। मुगलोंके साथ जितने भी धननामे क्यों न हों कामके समय वे सभी बेकार हो जाते हैं। अपने पैरों-पर खड़े हुए बिना कोई चारा नहीं है। वैसा नहीं करनेपर एक-न-एक

दिन सारा व्यवसाय-वाणिज्य बन्द होकर हो रहेगा। यहाँसे बिस्तर बाँधना ही पड़ेगा।

क्लीव चारनकने यह भी समझ लिया था कि अपने पैरोंपर खड़े होनेका एक मात्र उपाय है, अपनी ताकत। सैन्यबल बिना बढ़ाये और उसके साथ ही एक मजबूत किला बिना बनाये, सब रातमें को डाकने जैसा होगा। अपने मनोभावको उन्होंने छिपाया नहीं खुल्लम-खुल्ला उन्होंने सब कुछ कम्पनीके डायरेक्टरोंको बतला दिया।

कम्पनीने लिखा तब तक आस-पास जितने भी अँग्रेज हैं उन्हें हुगलीमें जमा किया जाय। और किला बनानेकी बात? वह तो रातोरात मुगलों-को आँखोंके सामने उठाया नहीं जा सकता। वे बादमें अच्छी तरह समझ बूझकर इस विषयमें अपनी राय देंगे।

धीरे-धीरे चारों ओरसे अँग्रेज सैनिक थोड़ा-थोड़ा कर हुगलीमें आकर इकट्ठा होने लगे। शीघ्र ही खबर ढाकामें नवाबके पास पहुँची। सुनकर शाइस्ता खाँ भी निश्चिन्त बैठे नहीं रहे। बारह हजार सैनिकोंकी एक पल्टन उन्होंने हुगली भेज दी। पल्टन आते देख फौजदार अब्दुल गनी साहबका मिजाज एकदम सातवें आसमानपर चढ़ गया। गर्म होकर उन्होंने हुक्म जारी कर दिया कि अँग्रेज अब और यहाँ व्यापार नहीं कर सकते। केवल इतना ही नहीं बाजारके सभी दुकानदारोंको बुलाकर उन्होंने मना कर दिया कि वे अँग्रेजोंके हाथ कोई भी चीज नहीं बेचें।

एक दिन सबेरे उठकर तीन अँग्रेज छोकरे हुगली बाजारमें खानेकी चीज खरीदने जाकर देखते हैं कि कोई भी दुकानदार उनके हाथ कुछ भी नहीं बेच रहा है और इसपर न कुछ कहना न सुनना अचानक कोतवाल-के आदमी उन्हें धर-पकड़ एकदम फौजदारके पास ले जाकर हाजिर करने का उपक्रम करने लगे। खबरका सुनना था कि अँग्रेज सैनिक जो जहाँ थे हु-हू कर निकल पड़े। उसके बाद जो होता है वही हुआ। मारकाट खून खराबी।

दोनों ओरसे गोलाबारी हुई। अंग्रेजी पल्टनके गोलेसे अभ्युक्त गनी साहबकी आँखोंमें अंधेरा छा गया और अधिक विलम्ब न कर छद्म वेशमें नंगाके नावपर चढ़ हुगलो छोड़कर चम्पत हो गये। चारों ओर पास फूसके घर आगसे धू-धूकर जल उठे। यह अक्तूबर सन् १६८६ ई० की घटना है।

इन छोटे-मोटे युद्धोंमें अंग्रेजोंके जीतनेपर भी जोब-चारनकने इसके बाद और अधिक दिन हुगलीमें रहना किसी भी प्रकारसे ठीक नहीं समझा। उनका मन मुगलोंकी नजरके ठीक सामने रहना बहुत दिनोंसे स्वीकार नहीं कर रहा था। बहुत दिनों पहलेसे ही हुगली छोड़कर चले जानेका उनका संकल्प था। इसके अलावा उनके मनमें आशा थी कि शाइस्ता खाँने प्रण किया है कि अंग्रेज जहाँसे आ घुसे थे वहीं अर्थात् उसी समुद्रमें ही उन्हें फिर वापिस कर देनेके बाद ही वे और अन्य काम करेंगे।

इसके बाद दो मास बीतते-न-बीतते लाव-लश्कर, माल-असबाब सब कुछ हुगलीमें ला इकट्ठा कर जोब चारनक जहाजपर चढ़ हुगली छोड़ चल पड़े। उनकी इच्छा थी कि एकदम बालेश्वर पहुँचकर वहाँकी अंग्रेजी कोठीमें ही आश्रय लेंगे। लेकिन रास्तेमें सुतानुटि ग्राम मिला और वे वहीं उतर पड़े।

। ४ ।

सुतानुटि-हाटके पास ही मिट्टीका घर बना उसपर फूसका छप्पर डाल जाब चारनक और उनके सभी आदमी वहीं रहने लगे।

सन् १६८६ ई० के दिसम्बर महीनेमें यहीं रहकर उन लोगोंने क्रिसमस मनाया और इसीके बीच चिट्ठी-पत्रोंके द्वारा शाइस्ता खाँके साथ समझौतेकी चेष्टा भी चलने लगी। लेकिन फल कुछ नहीं होता। शाइस्ता खाँ बीच-बीचमें आश्वासन देते अवश्य किन्तु असलमें कुछ भी नहीं मानते।

जोब चारनकने सुतानुटि छोड़ दिया। जाते समय तोपसे मुग़लोंके उस पारके थानेके जितने भी सरकारी गल्लेके गोदाम थे उन्हें जला दिया। इसके बाद हिजलीके थाना-दुर्गको भी ज़बरदस्ती ले लिया।

अन्तमें नदीके रास्ते चलते-चलते क़रीब सागर संगमपर हिजलीमें जाकर रुके। सर्वत्र यह बतला गये कि वे भी कुछ ऐसे-वैसे नहीं हैं। मौक़ापर वे भी कुछ कम नहीं कर सकते। किन्तु इतनी दूर हिजलीमें जानेपर भी अंग्रेज लोग स्थिर नहीं बैठ सके। यहाँ भी मुग़ल फ़ौज इनके पीछे आ धमकी। बीचमें एक अच्छा ख़ासा छोटा-मोटा युद्ध हो गया। इसपर एक और कठिनाई थी। हिजलीकी जलवायु नरक-कुण्डके समान थी। पतंगके चूहोंके समान अंग्रेज लोग पटापट मरने लगे। चारनक साहबने कहा और नहीं बहुत हो गया। अब यहाँसे चलें।

उस ओर शायस्ता ख़ाँ भी जैसे कुछ नरम पड़े। उन्होंने झट अंग्रेजोंको लौटनेकी अनुमति दे दी। चारनक फिर सुतानुटि लौट जानेके लिए जहाज़पर चढ़े। बीच रास्तेमें उलुबेड़ियेमें उतरकर चारों ओर देखने-सुनने लगे कि जगह कैसी है, चल सकती है या नहीं। एकदम मरी-गुज़री जगह थी। कहीं कुछ भी नहीं था। केवल उल्लुओंका निवास स्थान था। अगर छावनी बाहन सुलभ होता तो भी एक बात थी। यहाँ तो केवल कुछ जंगली उल्लुओंका अड्डा था।

प्रायः एक वर्ष इधर-उधर घूम-फिरकर जोब चारनक फिर अपनी सुता-नुटिमें लौट आये। यहाँ उतरते ही अपने दो साथियों ढाकेमें भेजकर तथा रोकर शाहिस्ताको दरख़्वास्त पेश किया। नवाबको समझा-बुझाकर यदि वे व्यवसायका कोई रास्ता निकाल पावें।

लेकिन सब ख़तम गया। आयर तथा ब्राडिल्के नवाबसे बातचीत पूरी करके आनेके पहले ही कैप्टेन हीथ कई जहाज़ लेकर सुतानुटिमें आ पहुँचे।

कप्तान साहब एक तो ग़ुस्सी और तेज़ मिज़ाजके आदमी थे। उसपर कम्पनीके डाइरेक्टरोंने उन्हें जोब चारनककी जगह एजेंट नियुक्त कर भेजा

था। और गुप्त रूपसे यह भी कह दिया था कि अगर तुम्हें लगे कि बंगालके मुल्कमें कारबार ठीक चल निकला है और जाब चारनक खूब अच्छी तरह जमकर बैठ गया है तो और कुछ कहनेकी जरूरत नहीं है सीधे यहाँ लौट आना। और वैसा न हो तो चटगाँव शहर दखल कर वहाँ अंग्रेजोंको ले जाकर अपना अड्डा जमाओ।

हीथ साहब जहाजसे उतरते ही सबसे बोले चलो चलो। एक रातकी भी देरी उन्हें सह्य नहीं थी। सबको जहाजमें भर एकदम उसी नवाबके मुल्कमें आ धमके। चटगाँव पहुँच आराकानके राजासे बातचीतके बीच ही अचानक एक दिन कैप्टेन हीथने अपनी राय बदल दी। फिर बिना रुके जहाजमें सबोंको लेकर सीधे मद्रास आ पहुँचे।

मद्रासमें उस समय अंग्रेजोंका खूब जमा हुआ था। वहाँ जोब चारनक एकान्तमें बैठ रात-दिन यही सोचने लगे कि बंगालमें फिरसे कैसे व्यापार चालू किया जाय। लेकिन कुछ भी नहीं हो पाता।

इस बार स्वयं बादशाह औरंगजेबके मनमें अफसोस भरी। अंग्रेजोंके व्यवसाय-वाणिज्य बढ़नेके साथ-साथ सरकारी खजानेमें भी कुछ आमदनी हो जाती थी। यह आमदनी बन्द हो गई। उस समय बादशाहको रुपयेकी बहुत कमी पड़ गई। पश्चिममें राजपूत दक्षिणमें मराठे और बीचमें बीजापुर-गोलकुण्डाके दो-दो नवाब। आखिरी उम्रमें इन सभीके साथ लगातार युद्ध करते-करते दिल्लीके बादशाह जिनकी स्तुति 'जगदीश्वरो वा' कहकर इस देशके ब्राह्मण कर गये हैं उनके खजानेमें भी कमी छोड़-छोड़ कर रही है।

इसके अलावा एक और बात थी। मुसलमानोंके मक्का जानेके रास्तेमें पोर्तुगीज जलदस्युओंने हज करने जानेवालोंके ऊपर बार-बार झपट्टा मार मारकर उन्हें बिलकुल बेदम कर रखा था। वे अमानुषिक अत्याचार करते। उन्हें रोकनेका कोई उपाय भी नहीं था। इसका कारण यह था कि मुगलों-की नौ-सेना यूरोपवालोंके सामने नहीके बराबर थी। थी ही नहीं ऐसा भी

कहा जा सकता है। बादशाह औरंगजेब बड़ा धूर्त था। उसने अच्छी तरहसे समझ लिया था कि पोर्तुगीज जलदस्युओंको ठण्डा करनेका एक मात्र उपाय अंग्रेजोंको अपने हाथमें रखना था।

बादशाहका संकेत पाकर बंगालके नवाबने अंग्रेजोंको बुला भेजा। उस समय शाइस्ता खाँ बंगालकी गवर्नरी छोड़कर दिल्ली चले गये थे। इसलिए बाबा उनवाला और कोई नहीं था। बंगालके नवाब इब्राहीम खाँ थे। ये खानदानी घरके थे। इनके पिता अलीमर्दान शाहजहाँके वजीर थे जो सभी अमीर-उमराओंके सिरमौर थे। इसके अलावा इब्राहीम खाँ पढ़े-लिखे मौलवी जैसे आदमी थे। ये अत्यन्त शान्तिप्रिय थे। युद्ध-विग्रहको अपेक्षा फारसी ग्रन्थ लेकर दिन बिताना ही ये अधिक पसन्द करते।

इब्राहीम खाँने अत्यन्त आदरपूर्वक अंग्रेजोंको बंगालमें लौट आनेके लिए बुला भेजा। उन्होंने व्यवसाय-वाणिज्यकी सभी प्रकारकी सुविधाएँ उन लोगोंका प्रदान कीं। अंग्रेज लोग भी लिख गये हैं कि इब्राहीम खाँके समान न्यायी दयालु और सभ्य नवाब उन लोगोंने इसके पहले कभी नहीं देखा था।

कुछ दिनोंके बाद औरंगजेब बादशाहके वजीर आसाद खाँने सील-मुहर लगाकर बादशाही फर्मान भेज दिया। कुल मिलाकर सालाना तीन हजार रुपया सरकारी दफ्तरमें दाखिल कर अंग्रेज लोग फिर सब जगह बिना किसी रोक-टोकके व्यवसाय चला सकेंगे। और कुछ नहीं देना होगा।

सन् १६९० ई० के २४ अगस्तको जोब चारनकने एक अत्यन्त उमस भरे दिनकी दुपहरीमें अपने कुछ साथियोंके साथ फिर सुतानुटि घाटपर आकर लंगर डाला। इस बार मैदानमें आ उन्होंने विलायती झंडा उड़ा दिया। आसपासके गाँवके लोग उन सफेद चेहरों लाल केश अद्भुत ढंग से कसे-कसाये कुर्ता-कुर्ती सज्जित तथा बगुलोंके समान विचित्र टोपी पहने हुए लोगोंके कार्य-कलापोंको मुँह बाये देखते रहे। उस समय क्या देखा, क्या

विदेशी किसीने भी क्या कभी स्वप्नमें भी सोचा था कि धीरे-धीरे एक दिन यहींसे विस्मयकी झण्डा संपूर्ण भारतवर्षमें फहराने लगेगा ?

खुले मैदानमें रहना और अधिक दिन नहीं चला। आसमान फाड़कर वृष्टि आई। घनघोर वर्षा। किसी तरह भी और नहीं थमती। पिछले साल चारनकने जो दो-चार मिट्टीके मकान बनवाये थे वे सभी बह चुके हैं। चारनक अपने साथियोंके साथ फिर नावमें चले आये।

जोब चारनक स्वभावसे ढीले-ढाले सरल प्रकृतिके होनेपर भी काममें खूब पक्के और होशियार थे। उनके समसामयिक लोगोंने उन्हें अच्छा कह कर भले ही उनकी तारीफ न की हो लेकिन कम्पनीके डायरेक्टरोंके निकट कामकाजी आदमीके रूपमें ही उनकी ख्याति थी। वैसे इस देशमें बहुत दिन रह जानेके कारण यहाँकी आबहवाके गुणसे चारनक बहुत कुछ इस देशवालों जैसा हो गये थे। बीच-बीचमें गर्म होकर लोगोंके ऊपर बहुत अत्याचार भी करते।

सियालदह पहुँचनेके पहले जो बहुबाजारका रास्ता है वहाँ किसी समय डैने जैसा फैलाये एक विशाल वटवृक्ष था। कहा जाता है कि उसीकी छाया में बैठकर एक बड़े गड़गड़ेसे तम्बाकूका धुआं छोड़ते-छोड़ते जोब चारनक व्यापारियोंको लेकर दरबार करते। खरीद-बिक्रीकी बातचीत उसी वटवृक्षवाले बैठकखानेमें बैठे-बैठे चलती।

एक बहुत पुराना विशाल बरगद पेड़ बहुबाजार स्ट्रीट और सर्कुलर रोडकी मोड़पर दिक्पालके समान खड़ा रहकर पुरानी घटनाकी अवश्य ही याद दिलाता था। सन् १७९९ ई० में जब बहुबाजारवाले रास्तेको चौड़ा करनेकी आवश्यकता हुई तब उस वटवृक्षको काट दिया गया।

लेकिन एक बात मनमें आती है। सुतानुटिके हाटखोलाके निकट ही एक वटवृक्षके रहते जाब चारनक इतनी दूर सियालदहके पास बैठकखाना क्यों करने जाते? हाटखोलाका वटवृक्ष अवश्य ही अब नहीं है लेकिन उसका नाम अभी भी रह गया है। यह वही 'बटतल्ला' है जहाँसे पुरानी बंगलाकी

पुस्तकें प्रकाशित होतीं। और जिन्हें हम लोगोंके लिए बचपनमें पढ़नेकी मनाही थी। बादमें चलकर इसी स्थानपर काठवाला मंडपके नीचे कविमाल करनेवालोंका अड्डा जमता।

इसके बहुत पहले जब जोब चारनक पटना कोठीमें मुंशी थे तब उन्होंने इस देशकी एक लड़कीसे शादी की थी। कहानी प्रचलित है कि एक दिन एक अत्यन्त सुन्दर स्त्री अपने मृत स्वामीके साथ सती होने जा रही थी। यह देखकर जोब चारनक अपने दल-बलको ले जाकर उस स्त्रीके साथवालों-को भगाकर उसका उद्धार कर उसे घर ले आये। बादमें उसे ईसाई धर्ममें अन्तर्भुक्त कर ईसाई मतसे विवाह करके आनन्दसे गृहस्थी बसाने लगे।

उसी स्त्रीसे जोब चारनकको तीन कन्याएं हुईं। वे सभी खानदानी अंग्रेजोंके घरमें गयीं। बहुत बड़े-बड़े कुलीन अंग्रेज अमीर-उमरावोंकी वंश परम्पराकी खोज-ढूंढ़ की जाय तो देखा जा सकता है कि उनके पूर्व-पितामहों-का रक्त खूब विशुद्ध नहीं है। अनेक स्थलोंमें इस देशका रक्त मिश्रित हुआ है।

१० जनवरी सन् १६९३ ई० को सुनोंसुटिमें ही जोब चारनककी मृत्यु हुई। वर्तमान काउन्सिल हाउस स्ट्रीट और हेस्टिंग्स स्ट्रीटकी मोड़पर जो सेण्ट जोन्स चर्च है उसे लोग चलती भाषामें पाथुरे गिर्जा (पत्थरका गिर्जा) कहते हैं। उस कालके गौड़के पुराने मकानके पत्थरको तोड़कर इस गिर्जाका विशेष हिस्सा तैयार हुआ था इसीलिए इसका ऐसा नाम पड़ा। उसी स्थानपर कलकत्ता पहले-पहल आनेवाले अंग्रेजोंका कब्रिस्तान है। उसीमें एक किनारे जोब चारनक दफनाये गये हैं।

उसी एक ही कब्रिस्तानमें उनकी तीनों लड़कियां भी दफनाई गई हैं। बड़ी लड़की मेरी सर चार्ल्स आयरकी पत्नी थी। मॅझली लड़की एलिजाबेथ, विलियम बाउरिजकी स्त्री थी। छोटी लड़की कैथरिन जोनाथन ह्वाइटकी पत्नी थी।

जोब चारनक मृत्युके पहले अपन देशी कर्मचारी बरदीदास और दो

नौकर घनश्याम तथा कुरूम को ध्यानमें रख अपनी वसीयतमें सरकार बहादुरको एक सौ रुपया और दोनों नौकरोंको बीस-बीस रुपये दानकर गये थे। चक्रशेखर नामके एक बंगाली उनके चिकित्सक थे। इन्होंने मृत्युके पहले उन्हें भी बहुत कुछ दिया था।

सन् १६९४ ई० में जाब चारनकके दामाद सर चार्ल्स आयर जब बंगालमें अंग्रेजी-कोठीके प्रमुख थे तब उन्होंने जाब चारनककी कब्रपर आठ-कोनवाला एक पक्का छत्र-घर बनवा दिया था। वह घर अभी भी वहाँ मौजूद है। यही कलकत्ता शहर की सबसे पुरानी पक्की इमारत है जो अभी तक टिकी हुई है।

। ५ ।

सुतानुटिमें आकर अंग्रेजोंने प्रथम जिस स्थानको अपना वासस्थान बना लिया था वह वर्तमान समयमें शहरके उत्तरी भागके खास देशी मुहल्लेका हाट-खोला अञ्चल है।

वहाँ कुछ दिनों रहनेके बाद ही अंग्रेजोंने समझ लिया कि जोब-चारनक उन्हें बहुत खराब जगहपर नहीं ले आये हैं। यह स्थान मलेरियाका डिपो होनेपर भी चारों ओरसे बहुत ही एकान्त था।

पूरबकी ओर घना जंगल और जलसे डूबी हुई नीची भूमि थी। उस तरफके साल्ट लेकको पारकर उस ओरसे भी किसीके आक्रमण करनेकी सम्भावना नहीं थी। पश्चिममें गंगा थी। मुगलोंमें वह दम-खम नहीं कि जलमें अंग्रेजोंके साथ लड़ाई करें। दक्षिणमें आदि गंगाको पार करते ही फिर भले लोगोंकी बस्ती नहीं है। उस अंचलमें मुगलोंकी वैसी कोई बड़ी चौकी भी नहीं थी। रह गई उत्तर दिशा। उसे किसी प्रकारसे एक बार सँभाल लेनेपर और कोई भय नहीं। इसके अलावा नदीपर तो जहाज है ही। ऐसा-वैसा कुछ होनेपर उनपर चढ़ समुद्रकी ओर निकल पड़नेमें कितनी देर लगेगी?

सुविधा तो थी लेकिन यहाँ आकर बैठ जानेका कोई न्यायोचित अधिकार अंग्रेजोंको नहीं था। वैसे ही आकर वे यहाँ जम गये हैं। उस जमीनपर वास करनेका कोई भी अधिकार उन्हें नहीं था। यहाँ तक कि वे किसीके अस्वामी रैयत भी नहीं थे। वैसे उस जंगल-झाड़में चुपचाप रहनेपर कोई बाधा देने नहीं आता कोई बोलनेवाला नहीं था यही कुशल था। किन्तु इस हालतमें सिर ऊँचा कर बेधड़क घूमा-फिरा तो नहीं जा सकता। बराबर ही वैसे चोरके समान ऐसे-वैसे रहना पड़ता है।

केवल इतनी ही सुविधा है कि सुतोनुटि द्वारा बिलकुल पास है। और सेठ-साहूकार बगलके गाँवके हैं। इसीलिए खरीद-बिक्री व्यवसाय-वाणिज्य एकदम फीका नहीं पड़ गया।

इस प्रकार रहते-रहते एक दिन मद्रासमें कम्पनीके कमिश्नर जेनरल सर जान गोल्डस्बरा सुतोनुटिमें इन्सपेक्शनके लिए आये। हालत देखकर वे दंग रह गये। कहाँ वो बड़ी बातें होंगी वैठेंमें इसका ठिकाना नहीं। फ्रान्सिस एलिस नामका एक अत्यन्त अकर्मण्य गया-गुजरा व्यक्ति जोब-चारनककी मृत्युके बाद सुतोनुटिमें अंग्रेजी-कोठीका प्रधान था। कोठीके नामपर तो वहाँ कई फूसके मकान थे। उसीमें मूल्यवान् माल हिसाबकी बही और खरीद-बिक्रीके रुपये रखने पड़ते। अंग्रेजोंमें कोई उसी तरहके फूसके मकानमें रहता कोई तम्बू गाड़ कर रहता और कोई बिलकुल मैदान मात्रपर। कभी-कभी आग लगती और सब जलकर भस्म हो जाता। और फिर नए सिरेसे नींव डालनी पड़ती। कई जो साहब थे वे समस्त दिन बावलची-बोतल चढ़ाकर नशेमें आँखें बन्द कर नशेमें चूर रहते। और बात-बातमें आपसमें ही खून-खराबी कर मरते।

गोल्डस्बराने चारों ओर घूम-फिर कर खोजते-खोजते पाया कि सुतो-नुटिके दक्षिणमें कलकत्ता ग्रामके पास थोड़ी-सी जमीन एक ऊँचे टीले जैसी थी। उससे लगी हुई गंगा है। पूरबकी ओर एक बड़ा तालाब है। उसको थोड़ा-बहुत ठीक-ठाक कर देनेपर सालभर उसका पानी काममें लाया जा

सकता है। उसीके किनारे जमींदार सावर्ण-चौधुरियोंकी पक्की कचहरी है। उसे खरीद लेनेपर माल-असबाब रखनेका झंझट दूर हो जायगा।

गोल्डस्बराने रातोंरात एलिसको बर्खास्त कर जॉब-चार्नकके दामाद चार्ल्स आयरको मद्राससे बुला भेजा। सावर्ण चौधुरियोंकी कचहरीको तब तकके लिए भाड़ेपर लेकर वहाँ माल-असबाब उठाकर लाया गया। उसके बाद बैठे-बैठे गोल्डस्बरा साहबने एक किला बनानेका प्लान बना लिया।

लेकिन किले-कुछ करनेके पहले ही मद्राससे आनेके तीन महीने बाद ही कलकत्तेकी आबहवाके फलस्वरूप गोल्डस्बराको वहीं मिट्टीकी शरण लेनी पड़ी। उस समय उनकी पसन्द की हुई जगहके दक्षिण-पूर्व कोनमें एक कुआँ और उसे ही घेर कर केवल एक मिट्टीकी दीवार बनी थी।

चार्ल्स आयर बंगालकी अंग्रेजी-कोठीके प्रधान होकर आनेपर गोल्डस्बरा-के प्लानको काममें लानेकी प्राणपण चेष्टा करने लगे। लेकिन बहुत दूर तक अग्रसर नहीं हो सके। बराबर भय बना रहता कि बात कहीं नवाबके कानोंतक नहीं पहुँच जाय। ऐसा होनेपर फिर सब समेट-बटोरकर उठ जाना पड़ेगा। क्योंकि जिस जमीनपर वे लोग रहते थे उसपर उनका हक अभी भी पक्का नहीं हुआ था। और उन दिनों कोठी आदि बनाने अथवा किलेका निर्माण करने यहाँ तक कि एक टुकड़ा जमींदारी खरीदने के लिए भी सरकारी हुक्म मँगा लेना पड़ता था।

क्या करें, क्या करें यह असमंजस बना ही रहा था कि एक मौका मिल गया। वर्तमान मेदिनीपुर जिलाके घाटाल सब डिविजनमें चन्द्रकोना-के पास उन दिनों बैरुआ नामका एक जमींदारी परगना था। उसका तालुकदार शोभासिंह था। सन् १६९५ ई० के बीचोबीच यह शोभासिंह अचानक विद्रोही हो गया और आसपासके गाँवोंमें लूटपाट करने लगा।

वर्द्धमानके राजा कृष्णरामने शोभासिंहको रोकनेके लिए युद्ध किया लेकिन हार गये और उसके हाथों मारे गये। युवराज जगतराम ढाका राजधानीमें भाग कर गये और अपने प्राणोंकी रक्षा की। शोभासिंहने

बदमानमें आकर राजमहलको दखल कर लिया तथा रानी और राज-कन्याओंको बन्दी बना लिया। इसके बाद अपनेको राजा कहकर चारों ओर प्रचार करने लगे।

इधर ढाकामें बैठ प्रायः सत्तर वर्षके वृद्ध नवाब इब्राहीम खाँ फ़ारसी ग्रन्थोंको पढ़नेमें लगे तो लगे ही रह। उन्होंने सोचा कि इस तरहके एकाध विद्रोह तो सब समय लगे ही रहते हैं। दो दिनोंके बाद फिर अपने-आप ही सब ठण्डा होकर ठीक हो जाता है।

उधर बिना बाधा पाये शोभासिंह लूटमार करते-करते बिलकुल हुगली के फ़ौजदारके दरवाजे तक आ पहुँचे। शोभासिंहका दल उस समय खासा भारी था। कटकसे पठान सरदार रहीम खाँ उनसे आ मिला था।

३

विद्रोहियोंके उत्पातसे बादमें कहीं व्यापार नष्ट न हो जाय इस भयसे विदेशी व्यापारियोंने—अंग्रेज डच और फ़्रांसीसी—नवाब इब्राहीम खाँसे अनुमति माँगी कि आत्मरक्षाके लिए अपने अपने इलाक़ेमें एक-एक क़िला बनानेका जिसमें उन्हें हुक्म मिले।

नवाबने कोई स्पष्ट उत्तर नहीं दिया। शादीके गुलिस्ताँके दौर पढ़ते पढ़ते केवल इतना बोले 'तुम लोग स्वयं जिस प्रकारसे हो सके अपनी रक्षा करो।

विदेशियोंने उनकी बात अच्छी तरह नहीं समझ यह सोचा कि नवाब बोले तथास्तु। परमन्त उत्साहसे अपने-अपने स्थानपर एक-एक दुर्ग सबोंने बना डाला।

अंग्रेजोंका दुर्ग ठीक उसी स्थानपर बना जिस स्थानको कई वर्ष पहले मोलवसुवरा साहब स्वयं देख-सुनकर पसन्द कर गय थे। उसका वर्तमान चिह्न है डलहौजी स्क्वायरके पश्चिमी किनारेका एक अंश। इसीके भीतर

है दक्षिणमें कोयला घाट और उत्तरमें फेयर्ली प्लेस। इस समय उस स्थान से लगे हुए हैं जेनरल पोस्ट आफिस कलकत्ता कलेक्टोरेट कस्टम्स हाउस तथा ईस्टर्न रेलवेका दफ्तर।

पूब और पश्चिम दोनों ओरकी सीमा अभी भी प्रायः वही है। पूर्वमें वही आदि कालकी लाल दीघी है। पश्चिममें गंगा है। उसके बाद गंगा इस समय और भी पश्चिममें हट गई है। उस स्थानपर इस समय स्ट्रैण्ड रोड है।

कलकत्तेमें यही अंग्रेजोंका पहला किला बना। उस समय इंगलैण्डके बादशाह विलियम दि थर्ड थे। उन्हींके नामपर इसका नामकरण हुआ फोर्ट विलियम। इसके बहुत बाद यद्यपि क्लाइवने बढ़के मैदानमें और भी एक बड़े किलेका आरम्भ किया था। फिर भी फोर्ट विलियम नाम अंग्रेजोंके शासन कालके अन्त तक बना रहा।

नामसे फोर्ट होनेपर भी कामके लिए विशेष कुछ नहीं था। उस समय भी ऐसा नहीं था कि पाँच आदमियोंको बुलाकर दिखाया जाय। मिट्टीकी दीवारसे घिरे हुए कई कच्चे-पक्के गुदाम थे। उसीके चारों ओर चार बुर्ज थे। और बुर्जके ऊपर दो तोपें बैठाई गई थीं—बस। तो भी यही भविष्यत् कालके ब्रिटिश पराक्रमका प्रतीक था।

नवाब इब्राहीम खाँ भले ही निश्चिन्त भावसे किताब पढ़ते रह सकते थे लेकिन बादशाह औरंगजेब इन सब बातोंमें बड़ा सतर्क था। बात इतनी दूर तक चली गई है यह सुनकर उन्होंने इब्राहीम खाँको बंगालके नवाबके पदसे बर्खास्त कर दिया और अपने नाती सुलतान अजीमुद्दीनको जो बादमें अजीमुस्सान कहलाये बंगालका गवर्नर बनाकर भेजा।

सुलतान अजीमुद्दीनके बंगाल पहुँचनेके पहले ही उन्होंने अपनी तोपोंकी मारसे विद्रोहियोंको हुगलीसे भगा दिया था। इब्राहीम खाँका पुत्र, जबर्दस्त खाँ उन लोगोंसे लड़ते-लड़ते उन्हें ठेलते हुए ले जाकर जलंगीनामके जंगलमें दाखिल कर दिया।

अजीमुस्सानने बद्रमानमें आकर तम्बू डाला। विद्रोहियोंके दमन करने में उन्हें बहुत कष्ट नहीं उठाना पड़ा। शोभासिंहकी मृत्यु इससे पहले ही हो चुकी थी।

वही पुरानी घटना। विजय गर्वसे प्रमत्त होकर शोभासिंहने बद्रमान की राजकुमारीका धर्म नष्ट करनेका संकल्प किया। यह सुनकर राज कुमारीने मौनका अवलम्बन किया और इस सम्मतिका लक्षण समझ शोभा सिंह जैसे ही उसका आलिङ्गन करने गये वैसे ही राजकुमारीने अपने वस्त्रमें छिपे हुए एक तीक्ष्ण छूरेको निकालकर शोभासिंहकी छातीमें घुसेड़ दिया। इसके बाद उसी छूरेको अपनी छातीमें घुसेड़ उस महिमामयी नारीने पशु के हाथोंसे अपनी इज्जतकी रक्षा की।

अन्तमें चन्द्रकोनाके पास विद्रोहियोंकी एक बिलकुल हार गयी। हमीद खाँ नामका अजीमुस्सानका एक अरबी सेनापति अपने हाथसे रहीम खाँका सिर काटकर ले आया। उस समय जो जहाँ हुआ भागकर अपने प्राण बचाये।

नवाब बहादुरने खुश होकर सैन्य सामन्तोंको उचित पुरस्कार दिया। गरीब-दुखियोंको रुपया बाँटा। इसके बाद मस्जिदमें जाकर नमाज पढ़ी और खुदाको धन्यवाद दिया।

अंग्रेजोंका किला वैसे भी हो एक प्रकारसे बना। किन्तु उसकी कमी तब भी बाकी था। तबतक भी जमीनकी टाइटिल (स्वत्व) ठीक नहीं हुई थी।

नवाब अजीमुस्सान राजधानी ढाकामें जाइकि पहले जब बद्रमानमें बैठे दरबार कर रहे थे उसी समय उनके पास अंग्रेजोंने एक दूत भेजा। प्रार्थना यही थी कि कलकत्तेमें एक टुकड़ा जमीन खरीदकर जिसमें वे अच्छी तरह रह सकें हुजूर जिसमें इसके लिए हुक्म दें। अंग्रेजोंके दूत खोजा सरहद नामक एक आर्मिनियन सौदागर थे।

किसी-किसीका अनुमान है कि आर्मिनियनोंका एक छोटा-सा समुदाय अंग्रेजोंसे पहले ही कलकत्तेमें आकर रहने लगा था। अवश्य ही उनमेंसे अधिकांश लोग या तो ढाका या हुगलीके पास चुँचुड़ामें रहते। आर्मिनियन लोग उसके बहुत पहलेसे ही इस देशमें व्यापार करने लगे थे। ये लोग इस देशका हाल-चाल अच्छी तरह जानते। इसीलिए अंग्रेजोंको नहीं दूत भेजनेकी आवश्यकता पड़नेपर उन्हें पद-पदपर आर्मिनियनोंका शरणापन्न होना पड़ता।

खोजा साहब अच्छी तरह जानते थे कि रुपयेपर अजीमुस्सानका कितना अधिक लोभ है। रुपया-पैसा जो कुछ वहाँसे पाते बिना किसी द्विधा और संकोचके उसे पाकेटमें भरते।

बंगालमें आते ही अजीमुस्सानने रुपया कमानेकी एक पुरानी चाल चली थी। उस चालका फ़ारसी नाम सौदा-ए-खास था। होता यह था कि सरकारका नाम लेकर नवाबके लिए जितनी जीवन-निर्वाहकी वस्तुएँ थीं, विशेष रूपसे खाने-पहननेकी वस्तुए सस्ती थोक दरमें एक साथ खरीद की जाती। और उसके बाद फुटकर दरमें अधिक मूल्यपर बाजारमें बेच दी जातीं। बहुत कुछ आजकलके कन्ट्रोल-जैसा और क्या।

गुप्तचरोंके मुँहसे नातीकी कारवाइयाँ सुनकर तो बादशाह औरंगजेब क्रोधसे आगबबूला हो गया। उन्होंने अजीमुस्सानको लिख भेजा कि मैं तो सौदेका एक ही अर्थ जानता हूँ। शब्दकोषमें उसका अर्थ पागलपना है। अरबी भाषामें सौदाका अर्थ सचमुच पागलपना है। औरंगजेबने और लिखा तुम राजवंशके हो यह बात याद रखना अभी पागलपन छोड़कर राज कार्यमें मन लगाओ यही मेरी इच्छा है। प्रजापालनके लिए तुम्हें उस अंचलमें भेजा गया है प्रजाको दुःख देनेके लिए नहीं—यह भी नहीं भूलना।

रुपया बहानेपर नवाब साहबके पाससे सब तरहके काम हासिल किये जा सकते हैं खोजा सरहद साहबको यह बात बिलकुल अज्ञात नहीं थी। माल-असबाब और नक़द मिलाकर सोलह हजार रुपये नवाब अजीमुस्सान

को उपहार देकर अंग्रेजोंने सुतोनुटि कलकत्ता और गोविन्दपुर इन तीन ग्रामोंको खरीदनेकी अनुमति प्राप्त कर ली।

इसके कई महीने बाद ही १० नवम्बर सन् १६९८ ई० को दस्तावेज लिखवाकर अंग्रेजोंने सावर्ण-चौधुरियोंसे इन तीनों ग्रामोंको खरीद लिया। चौधुरियोंकी उस समय गिरती अवस्था थी। और उसपर बहुतसे हिस्सेदार थे। उन्होंने पहले तो कुछ आनाकानी की लेकिन बादमें कुछ दर बढ़ाकर तेरह सौ रुपयेमें उन तीनों ग्रामोंको अंग्रेजोंके हाथमें छोड़ दिया।

फिर भी कम्पनीको सन्तुष्ट नहीं किया जा सका। लन्दनसे डायरेक्टरों-ने कलकत्ता लिख भेजा देख रहे हैं कि जमींदारी खरीदने जाकर तुम लोगोंने हम लोगोंके दोनों पाकेटोंमें छेद कर डाला। ऐसा करनेसे तो दो दिनोंमें ही हम लोग कंगाल हो जायेंगे। कलकत्तेसे प्रत्युत्तर गया कि कम्पनीके रुपयेका इतना सदुपयोग उन लोगोंने कभी किया है ऐसा उन्हें याद नहीं आता।

जमींदारी खरीदकर कलकत्ताके अंग्रेजोंने इतने दिन बाद चैनकी साँस ली। इस बार जैसे-तैसे भी कुछ ठिकाना तो लगा। कलकत्तेको और नजर अन्दाज नहीं किया जा सका। कम्पनीने हुक्म दिया अबसे कलकत्ता एक प्रसिडेन्सी हुआ। यहाँ एक प्रेसिडेन्ट रहेंगे और उनके साथ एक काउन्सिल रहेगी। बंगालमें जितनी भी अंग्रेजी-कोठियाँ हैं वे सभी उन्हींके जिम्मे रहेंगी। वे अब मद्रास-कोठीके प्रेसिडेन्टके अधीन नहीं रहेंगी।

इसके पहले ही चार्ल्स आयर अस्वस्थ होकर विलायत लौट गये थे। बहुत अनुनय विनय कर कम्पनीने उन्हें कलकत्तेका प्रथम प्रेसिडेन्ट बनाकर भेजा। उस समय वे सर चार्ल्स आयर हो गये थे।

७ :

एक शताब्दीके बाद दूसरी शताब्दी आ गई। सन् १६०० ई० समाप्त होकर सन् १७०० ई० का आरम्भ हुआ।

सर चार्ल्स आयर कुछ ही दिन काम कर स्वदेश लौट गये हैं। उनकी जगहपर जान बियर्ड कलकत्ताके प्रेसिडेण्ट हैं। बियर्ड साहब बचपनसे ही इस देशमें हैं। इस देशकी राजनीतिका रंग-ढंग उन्हें नखदर्पण है।

जोब-चारनकके समान बियर्डने भी समझ लिया था कि इस देशमें रहते हुए ठीक ढंगसे व्यवसाय चलानेके लिए मुगल दरबारमें दूत भेजनेकी अपेक्षा खूब मजबूत किला बनाना कहीं अधिक कामका होगा। इसीलिए बात-बातमें वे अपनी काउन्सिलके सभी सदस्योंको कुछ सुना-सुनाकर कहते दूतकी अपेक्षा किला अच्छा।

उन्होंने इसी ओर ध्यान दिया। और नहीं तो करें क्या? व्यवसाय वाणिज्य तो एकदम बन्द होनेको हुआ। दोष अंग्रेजोंका ही था। पुरानी ईस्ट-इण्डिया कम्पनीके सौभाग्यको देखकर और एक दलने नई ईस्ट-इण्डिया कम्पनी खोली। इंगलैण्डके बादशाह विलियम दि थर्डसे कह-सुनकर उन लोगोंने एक चार्टर भी जुटा लिया। फल यह हुआ कि दोनों कम्पनियोंमें किसी भी कम्पनीका व्यापार ठीकसे नहीं चलता। दोनों कम्पनियोंमें रात दिन वाद-विवाद गाली-गलौज और मान-अभिमान चलता।

बादशाह औरंगजेबने देखा कि यह अच्छा तमाशा है। कौन असल अंग्रेजी कम्पनी है टैक्स वसूल करनेके लिए किसे पकड़ेंगे किससे कारो-बारके सम्बन्धमें बातें करेंगे यह वे ठीक नहीं कर सके।

उस समय फिर सूरतके पास हज करने जानेवालोंके ऊपर नये सिरेसे आक्रमण होना शुरू हो गया। बहुतसे गये-गुजरे अकर्मण्य अंग्रेजोंने भी इसी लिए जलमें उतर डकैती करना शुरू कर दिया। बादशाहके आदमियोंके पूछनेपर एक कम्पनीके लोग दूसरी कम्पनीवालोंको डकैत बता देते।

वास्तवमें कौन लोग डकैत थे इसे स्थिर नहीं कर सकनेके कारण बादशाह औरंगजेबने हुक्म दिया कि एक ओरसे सभी यूरोपीय कम्पनियोंका व्यवसाय बन्द कर दो। बन्दरपर जितने टोपवाले साहब हैं, उन सभीको

पकड़कर फाटकमें बन्द कर दो। उन सबोंका जहाँ भी जो माल है सब जप्त कर लो।

अंग्रेजोंका जो माल बाहर था वह सब चला गया। जो-जो मुर्शिदाबादमें थे वे सभी पकड़ लिये गये।

नई कम्पनी तो एकदम फेरमें पड़ गई। व माल तथा वेतनके उत्साहमें सभी न्सबबको लेकर मालके साथ बाहर-बाहर घूम रहे थे। उन सबोंका ही सब चला गया। पुरानी कम्पनीका विशेष-कुछ नुकसान नहीं हुआ। उनके सभी आदमी माल-असबाब सब कलकत्तेमें ही था।

अन्तमें नई कम्पनी पुरानीके साथ मिलकर एक हो जानेके लिए बाध्य हो गई। लेकिन मिल जानेपर भी एक कठिनाई रह गई। नवाबके आदमी इस मिल जानेकी बातको अच्छी तरह नहीं समझ सके। उन लोगोंने सोचा कि सम्भवतः है कि टैक्ससे बचनेका ही यह एक फ़रेब है। वे दोनों कम्पनियोंके बाबत डबल टैक्स वसूल कर बैठे। अन्तमें बहुत आरजू-मिन्नत करने तथा बहुत समझाने-बुझानेपर वह माफ़ हुआ।

इसी समय और एक विघ्न आ उपस्थित हुआ। वह था मुर्शीद कुली खाँका बंगालमें आगमन। सन् १७०१ ई० में बादशाह औरंगजेबने मुर्शीद कुली खाँको बंगालका दीवान बनाकर यहाँ भेजा। नवाबका काम जैसे देशमें शान्ति रक्षा करना था वैसे ही दीवानका काम राजस्वकी वसूलयाबी तथा बन्दोबस्त करना आदि था।

मुर्शीद कुली खाँ ब्राह्मण सन्तान थे। बचपनमें किसी बदमाशके अपहरण करनेवालेके हाथमें पड़ एक मुसलमानके हाथमें बेच डाले गये। इसीलिए बाध्य होकर उन्हें इस्लाम धर्म ग्रहण करना पड़ा था। मुर्शीद कुली खाँ चढ़ती उम्रमें मालिकके साथ फ़ारस देशमें रहे, और फिर इस देशमें आकर दक्षिणमें औरंगजेबकी सूबेदारी ग्रहण की। फिर बादशाहके समान ही खाने पीने विलास अथवा स्त्रियोंके सम्बन्धमें बहुत दूर तक व निस्पृह थे। लेकिन बकाया वसूल करनेके समय तथा हिसाब करते समय पैसे-कौड़ी

उनका हिसाब ठीक-ठीक समझ लेनेके मामलेमें वे अत्यन्त निर्दय तथा निष्ठुर थे। इसके ऊपर टैक्स वसूल लेनेका प्रत्येक कला-कौशल मुर्शीद कुली खाँको कण्ठस्थ था।

बंगालमें आकर मुर्शीद कुली खाँने देखा कि अपनी अपनी अच्छी खासी जागीर दखल करके सभी बैठे हुए हैं। कोई भी लगानेका रुपया देना नहीं चाहता। इसीलिए बादशाहकी सरकारको बहुत दिनोंसे ठीक-ठीक राजस्व नहीं भेजा जा रहा है और इस समय औरंगजेबको ठीक-ठीक रुपया नहीं भेज सकनेपर मुर्शीद कुली खाँ की नौकरीका रहना ही कठिन था।

मुर्शीद कुली खाँका प्रथम कोप दीवानोंके ऊपर जाकर पड़ा। सब लोग जानते हैं कि उनके पास नगद पैसा रहता है। उनके ऊपर जुल्म करनेसे हाथों-हाथ रुपया निकाला जा सकता है।

इसके बाद मुर्शीद कुली खाँ जागीरदारोंसे भिड़े। बंगालमें उनकी अच्छी-अच्छी जागीरोंको छीनकर उड़ीसाकी जंगलोंवाली जागीरोंको देकर उन्हें वहीं भेज दिया।

अंग्रेज लोग बड़ी मुश्किलमें पड़े। किसको रखें किसको रखें इसका ठीक नहीं। श्यामको रखें कि कुमको रखें जैसी दशा हो गई। इसका कारण यह था कि केवल दीवान मुर्शीद कुली खाँके साथ समझौताकर किसी प्रकारका बन्दोबस्त कर लेनेसे ही काम पूरा नहीं होता। उस ओर नवाब अजीमुस्सान लड़पड़न्त बैठे हैं। —निशाना साधकर तीर मारनेमें वे भी कम उस्ताद नहीं थे।

इधर नवाब साहब फिरसे भविष्यके लिए रुपया जमा करनेमें लग पड़े हैं। बादशाह बूढ़े हो गये हैं। अब हैं तब नहीं। उनके मरनेपर यह रुपया खूब ही काम आयगा।

एक ओर नवाब अजीमुस्सान और दूसरी ओर दीवान मुर्शीद कुली खाँ थे। इन दोनोंके बीचमें पड़के अंग्रेज ही क्यों इस देशके बड़े-बड़े जमींदार

भी घबड़ा उठे थे। खजानेका रुपया जमा करनेमें जरा भी देरी होते ही मुर्शिद कुली खाँके कर्मचारी जमींदारोंके ऊपर बहुत अत्याचार करते। अगर उससे भी रुपया वसूल नहीं होता तो परिवार सहित पवित्र इस्लाम धर्मको ग्रहण करनेके लिए उन्हें बाध्य किया जाता।

अत्यधिक अत्याचारके शिकार हो अनेक पुराने खानदानी जमींदार परिवार एक-एककर विनष्ट हो गये। उनके स्थानपर नये-नये नवाब जमींदारोंका जैसे सहसा ही उदय हुआ।

देखते-देखते नवाब और दीवानमें ही खूब जोरकी ठन गई। दोनों ही परस्पर एक-दूसरेके सम्बन्धमें बादशाहके पास शिकायत करते। मुर्शिद कुलीखाँको नवाबके पास रहनेका अब अधिक साहस नहीं हुआ। दीवानी दफ्तरको वे ढाकासे मुकसुदाबाद ले आये। यह मुकसुदाबाद ही मुर्शिद कुली खाँके नामपर मुर्शिदाबादके नामसे प्रसिद्ध हुआ।

अन्तमें बादशाहके पास दीवानजीकी ही जीत हुई। और क्यों नहीं होती? मुर्शिद कुली खाँके ऊपर औरंगजेबका अगाध विश्वास था। दीवानीके मिलनेके बादसे ही मुर्शिद कुलीखाँ बादशाहके पास प्रत्येक साल एक करोड़ रुपया भेजते। एक बार भी चूक नहीं हुई। ऐसा इसके पहले कभी नहीं हुआ था।

और रुपया भी नगद चमचमाता चाँदीका रुपया। बैलगाड़ीपर लाद कर वह रुपया दक्षिण भेजा जाता जहाँ अपने जीवनके अन्तिम दिनोंमें युद्ध करते-करते ही बादशाह औरंगजेबकी मृत्यु हुई थी। इसीका फल था कि बहुत दिनों तक बंगालमें किसीने फिर चाँदीका मुँह नहीं देखा। कौड़ीसे ही सब काम-काज चलाने पड़ते। बोलचालकी भाषामें ही चल गया 'टाका कौड़ी'।

यही सब देख-सुनकर अंग्रेजोंने कलकत्तेमें फोर्ट विलियमकी उन्नति की ओर विशेष ध्यान दिया। इन लोगोंके मनमें और भी एक भ्रम हो गया था। बादशाह औरंगजेब जैसे बूढ़े हो गये हैं। उनमें न अधिक दिन बचेंगे

या नहीं इसमें सन्देह था। उनके मरते ही तो फिर दिल्लीकी गद्दीके लिए खींचातानी होने लगेगी लूट-खसोटी शुरू हो जायगी। सारे देशमें अशान्ति-की आग भड़क उठेगी। उस समय यदि कोई उनकी रक्षा कर सकता है तो एक उनका क़िला ही। सन् १७०० ई० से सन् १७०७ ई० तक उन्होंने अपने परिश्रमसे फोर्ट विलियमकी श्री-वृद्धि कर डाली।

क़िलेके ऊपर और भी कई नये बुर्ज बने। क़िलेको चारों ओरसे दीवारसे घेर दिया गया। नदीकी धारासे बचानेके लिए घाटको पक्का बना दिया गया। माल-असबाब चढ़ाने-उतारनेके लिए कई जेटियां बनीं। गंगाके ऊपर दो नये घाट भी बने।

क़िलेके भीतर ही प्रेसिडेण्टके रहनेके लिए बहुत बड़ा मकान बना जिसे देखते ही आंखें चौंधिया जातीं। केवल रहनेके लिए मकान हो नहीं। वर्तमान चौरंगीका जहां मिडलटन स्ट्रीट है वहांके जंगल-झाड़को साफ कर प्रेसिडेण्टके खानेकी टेबुलके लिए साग-सब्जी फल-मूलका एक बगीचा भी बना। पोखरा खोदकर मछली छोड़ी गई। उनके लिए चाँदीसे मढ़ी पालकी आई। उनके आगे-पीछे चोबदार हरकारे हुक्का ढोनेवाले एकदम नवाबी ठाटबाट!

सब बात सुनकर कम्पनीके डायरेक्टरोंने खबर भेजी तुम लोग कर क्या रहे हो? हम लोग सुन रहे हैं कि तुम लोगोंने ऐसा क़िला बनवाया है कि जिसे देखकर चारों ओरके लोग खूब तारीफ़ कर रहे हैं। लेकिन विपत्तिके समय वह दुर्ग तुम लोगोंकी रक्षा कर सकेगा न? या केवल ईंटों नींव होकर ही खड़ा रहेगा?

बड़े-बड़े साहब लोग और विशेष रूपसे जिनके साथ मेमसाहब थीं चाहे वे देशी हों अथवा विदेशी अब क़िलेके भीतर छोकरे मुंशियोंके साथ एकट्ठा रहनेके लिए राजी नहीं हुए।

इस समयके लाल बाजार स्ट्रीटसे लेकर फोर्टको छोड़कर डलहौसी स्क्वायरके चारों ओर तीन रुपये बीघेके हिसाबसे उन

कारन्सिसके पाससे जमीनकी बन्दोबस्ती ली। यहींपर उन लोगोंके अब बड़े आलीशान मकान धीरे-धीरे उठने लगे। एकान्तमें रहनेके लिए अब किसी-किसीने कलकत्तेसे बाहर अर्थात् सुतानुटि और गोविन्दपुरमें बागान बाड़ी (उद्यान-भवन) बनवायी और वहीं जाकर रहने लगे।

इसी प्रकारके दो बड़े-बड़े बगीचे किसी समय शहरके बीचमें दो विशाल होकर चौकोंकी निगरानी करते। उत्तरमें पेरिन साहबका बगीचा था जो इस समयका बाग बाजार है। और दक्षिणमें सुरमन साहबका बगीचा था जो आजकलका कुली बाजार है अथवा हेस्टिंग्स है।

लालदीघीको अच्छी तरह साफ कर उसका पंकोद्धार किया गया। उसके चारों किनारोंपर मिट्टी डाल-डालकर पेड़-पौधे रोपकर तथा घास लगाकर साहब और मेम साहबके लिए हवा खानेकी जगह बनाई गई। इसी का पुराना नाम टैंक स्क्वायर था अब यह डलहौजी स्क्वायर कहलाता है। लालदीघीको अंग्रेजोंके दि ग्रेट टैंक कहकर बातें करनेपर भी इसका पुराना पुकारका नाम अभी भी चला आ रहा है।

लालदीघीके चारों ओर जो मकान बने उनकी बनावटमें सौन्दर्य नहीं था। देखनेमें भले ही वे विशाल और लम्बे-चौड़े हों। उस समय तो कारपोरेशन अथवा इम्प्रूवमेण्ट ट्रस्टका झमेला ही नहीं था कि लोग बढ़िया प्लान तैयारकर मकान बनवाते। जिससे जहाँ मन पड़ा बैठ गये।

सामने थोड़ा-थोड़ा-सा कम्पाउण्ड रहता। उसीमें नौकर-चाकरोंके रहनेके फूसके घर होते। भीतरकी ओर बड़ी-बड़ी ऊँची ऊँची दर-दालानें होतीं। उस समय तक लकड़ीके दरवाजे-खिड़कियाँ नहीं बनी थीं चीकोंके सिवाय नहीं थे सामान आदि भी साधारण तरहके थे। ये सभी चीजें बहुत बादमें आईं।

अपनी जमींदारीकी उन्नतिकी ओर भी अंग्रेजोंने अच्छी तरहसे ध्यान दिया। भले ही वह थोड़ी-सी छोटी जमींदारी क्यों न हो लेकिन तो भी वो जमींदारी है। इसके लिए हर साल हुगलीमें पचास सौ रुपये लगानेम

मरने पड़ते हैं। कमसे-कम उस रुपयेको भी कबूल नहीं कर पानेपर कम्पनीके सामने कौन-सा मुँह दिखाया जाय ?

काउन्सिलमेंसे ही एक मेम्बरको विशेष रूपसे जमींदारीका काम देखनेके लिए चुन लिया गया। देशी प्रथाके अनुसार उसका नाम जमींदार पड़ा। लेकिन जमींदारको बहुत तरहके काम थे वे अकेले ही कलक्टर मजिस्ट्रेट पुलिस कमिश्नर कलक्टर ऑफ कस्टम्स कारपोरेशनके चीफ एक्जिक्यूटिव ऑफिसर तथा इम्प्रूवमेण्ट ट्रस्टके प्रेसिडेण्ट सब कुछ थे।

कलकत्ताका प्रथम जमींदार राल्फ शेल्डन था। सन् १७ ९ ई० में शेल्डनकी यहींपर मृत्यु हुई। कामका आदमी समझकर कम्पनीने सन् १७१ ई० में उन्हें प्रेसिडेण्टकी गद्दी भी दी। लेकिन यह खबर जब कलकत्ते पहुँची उस समय वे सब सम्मानके परे जा चुके थे।

जमींदारको इतने अधिक काम थे कि सबको अकेले कर डालना उनके लिए मुश्किल था। विशेष रूपसे देशी लोगोंकी संख्या कलकत्तेमें इतनी बढ़ गयी कि उनका तदारुक करनेके लिए एक देशी आदमीकी सहायता नहीं लेनेपर काम नहीं चल सकता।

शोभासिंहके विद्रोहके समयसे ही मुगल सरकारके हाथों जब प्राण दोनोंमें किसीको भी बचते नहीं देख बहुतसे देशी लोगोंने अपने स्थानका त्याग कर विदेशी बनियोंका आश्रय लिया था। इसी सूत्रसे बहुतसे देशी लोग कलकत्तेमें भी आ चुके थे। यहाँ जो उस समयसे कलकत्तेमें लोगोंका आना शुरू हुआ वह आज तक नहीं रुका।

इसके ऊपर मुर्शिद कुलीखाँके अत्याचारसे जो पुराने जमींदार घर उच्छिन्न हो गये थे उन घरोंके बहुत-से लड़के नये सिरेसे जीवन-यात्रा आरम्भ करनेके उद्देश्यसे कलकत्तेमें आ उपस्थित हुए। कलकत्तेमें काम-काजकी सुविधाकी चर्चा उस समय लोकमुखसे बहुत-बहुत दूर तक फैल गई थी।

अन्तमें जमींदारोंके काममें सहायता करनेके लिए एक देशी आदमीको चुन कर लेना ही पड़ा। कलकत्ताके प्रथम ब्लैक जमींदार या डिप्टी

मैजिस्ट्रेट नन्दराम सेन थे जो मौलिक कायस्थ थे। अंग्रेजोंके अधीन बड़े सरकारी काममें बंगालीका यह प्रथम प्रवेश था।

लेकिन नन्दराम बहुत दिनों तक अपने पदपर टिक नहीं रह सके। वसूल किये हुए लगानेके रुपयेको तसर्रुफ कर पकड़ जानेके भयसे हुगली भाग गये। बहुत कह-सुन कर अंग्रेज हुगलीके फौजदारके हाथसे नन्दरामको उद्धार कर कलकत्ता लौटा ले आये। इसके बाद जगह-जमीन घर-द्वार माल-असबाब कुर्क कर और सबको बेंचकर अपना बाकयेका कौड़ी-कौड़ी वसूलकर छोड़ दिया।

नन्दराम सेनकी कहानी आज कोई नहीं जानता। लेकिन किसी समय इनकी खूब प्रतिष्ठा थी। इस समय उनके नामपर सिर्फ हाटखोला अंचलमें एक रास्ता रह गया है। उनका तैयार कराया हुआ गंगापर एक स्नानघाट रामतनु घाटके नामसे प्रसिद्ध अट्ठारहवीं शताब्दीके अन्त तक बना था। यह घाट इस समय गंगाके गर्भमें है।

॥ ८ ॥

प्रायः पचास वर्षोंतक राज्य कर कालके नियमानुसार बादशाह मुही उद्दीन मुहम्मद बादशाह औरंगजेब आलमगीर सन् १७०७ ई० की २० फरवरी शुक्रवारके शुभ दिनको नब्बे बरसकी उम्रमें ज्ञान रहते अन्तिम साँस छोड़ी।

अंग्रेजोंने जो सोचा था वही हुआ। बादशाहकी नश्वर देहपर अच्छी तरहसे मिट्टी पड़ते-न-पड़ते ही उनके बेटोंके बीच लड़ाई छिड़ गई।

उस समय बंगालके सूबेदार अजीमुश्शान बंगाल छोड़ गये थे। दीवान मुर्शीद कुलीखांको भी उसके कुछ बाद ही जाना पड़ा। उस समय तो और उन्हें अपना लूटका ओर नहीं रहा। नये बादशाह शाहआलम बहादुर शाह उस समय दिल्लीकी गद्दीपर थे।

अंग्रेजोंका व्यवसाय-वाणिज्य जिस अन्धकारमें था उसी अन्धकारमें पड़ा रहा। सरकारी कर्मचारी फिर नये सिरसे रुपया माँगते। रुपया नहीं देनेपर जोरका अत्याचार चलाते। किन्तु अंग्रेज अब और नये सिरेसे रुपया देनेको राजी नहीं थे। उस समय उनका फोर्ट बन चुका था। इसीलिए उनका साहस भी बढ़ चला था। इस बार उन लोगोंने सीधे-सीधे कहला भेजा कि मुर्शिदाबादमें एक भी अंग्रेजपर हाथ उठानेपर हुगलीमें वे इस मुगलोंपर उसका बदला लेंगे।

व्यवसायके क्षेत्रमें पग-पगपर बाधा होनेपर भी अंग्रेजोंकी खरीद-बिक्री बिल्कुल बन्द नहीं हो गई। इसी समय फ्रान्समें युद्ध होनेके कारण फ्रान्सीसी लोगोंने यहाँके कामकाजको समेट लिया था। इन लोगोंने भी बंगालकी अपेक्षा दक्षिण भारत, सुमात्रा आदिकी ओर ही अधिक मन लगाया। उस ओर इनके प्रतिद्वन्द्वी एक-एककर हट गये।

अंग्रेजोंने देखा खरीद-बिक्रीका काम अच्छी तरहसे चलानेके लिए देशी लोगोंकी सहायताकी जरूरत है। सोच-विचारकर उन लोगोंने देशी दलाल रखना ठीक किया।

पहले पहल सुप्रसिद्ध उमीचन्दके बड़े भाई दीपचन्दको उन्होंने पकड़ा। लेकिन लगता है अन्ततक उनसे कोई विशेष फायदा नहीं हुआ। इसके बाद सेठोंके वंशजोंके मालिक जनार्दन सेठको बुला लाकर मुसलमानी कायदेके मुताबिक उन्हें खिलअत (पगड़ी) देकर और इत्र, गुलाब पान-सुपारीसे अभिषेककर बड़े दलालके पदपर प्रतिष्ठित किया। उसीके बादसे बहुत दिनोंतक वंशानुक्रमसे सेठ लोग ही अंग्रेजोंके बड़े दलालका काम करते आये।

दलालका काम परवर्ती कालके सौदागरी हाउसके बनियोंके काम जैसा था। अंग्रेज लोग विदेशसे जो माल ले आते उसे इस देशमें खपाना और यहाँसे जो माल विदेशमें चालान करते उन्हें सस्ती दरमें संग्रह कर देनेका भार इन बड़े दलालपर था।

बड़े दलालके जरिये ही इस देशके तांतियों तथा दूसरे-दूसरे कारीगरों-को दयाना दिया जाता। जिसमें वे रुपया मारकर भाग न जायें इसकी जिम्मेदारी बड़े दलालपर रहती।

अंग्रेज लोग विदेशसे जो सब माल मँगाते इस समय उन सबके कुछ बहुत अधिक खरीददार नहीं थे। दलालको अनेक चेष्टा और प्रयत्न कर उन्हें खपाना पड़ता। दलाल ही न क्रमशः इस देशके बड़े लोगोंके बीच विलायती माल खरीदनेका शौक पैदा किया।

इसके बाद धीरे-धीरे विलायती ऊनी गरम कपड़ थोड़ा लोहा-लक्कड़ थोड़ा तांबा लेड (Lead) जस्ता और कुछ-कुछ मनिहारीके सामानोंकी भी अच्छी बिक्री इस देशमें होने लगी।

देखनेमें आता है कि कलकत्तेके देशी आदमियोंको तो ऐसा नशा चढ़ा कि नीलामसे मत साहबोंके फर्नीचर बाक्स-पिटारी छुरी-कैंची आदि खरीद कर घर ले जाते। जनार्दनके भाई वाराणसी सेठने तो एक दिन नीलाम (Auction) से छ-सात चीनी चित्र खरीद लिये।

बड़े दलाल वेतनके रूपमें कुछ नहीं पाते। खरीद-बिक्रीके मालके दाम-के ऊपर केवल कमीशन लेते। यह सुननेमें कम लगनेपर भी सारे सामान पर हिसाब जोड़नेसे ये रुपये कुछ कम नहीं होते।

दलालको बीच-बीचमें सज-धजकर अंग्रेजोंकी ओरसे हुगलीके फौजदार के पास दरबार करने जाना पड़ता। फौजदार ही उस कालके डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट थे न। मुगलोंके ढंगका जोगा पहनकर जनार्दन सेठ अंग्रेजोंकी तरफसे दरबार करने हुगली जाते यह भी पता चलता है।

व्यवसायके बढ़ते ही बड़े दलालके नीचे बहुतसे छोटे दलाल भी रखे गये। उनमें अधिकांश बंगाली हिन्दू ही थे। कई पश्चिमके हिन्दू भी थे। मुसलमानोंमेंसे दोका उल्लेख मिलता है। वे बंगाली मुसलमान थे या नहीं नामसे तो यह समझा नहीं जा सकता।

दिनपर दिन कलकत्तेकी श्री-वृद्धि होने लगी। लोग भी बहुत बढ़

जलाशयोंको भरवाना बाजार लगवाना ट्रेन-ब्रिज तैयार कराना—ये सभी काम जमींदारके सिरपर आ पड़ा। इसीलिए इस समय एक पूरी जमींदारी सिरिश्तेकी स्थापना करनी पड़ी। इसीके अनुकरणपर उसका भी नाम था कचहरी।

उस समयकी कचहरी आजके लाल बाजारके पुलिस-हेड-क्वार्टरके ठीक ऊपर थी। जमींदारी सिरिश्तेके अंग—कोतवाल चौकीदार, प्यादा, सिकदार, ढाक ढोल बजानेवाले—सभी आ जुटे। नामसे ही समझा जा सकता है कि ये सभी देशी लोग ही थे।

जमींदारके दफ्तरके बंगला रजिस्टरको ठीक रखनेके लिए कई मुंशी नियुक्त हुए। वे प्रायः सभी दक्षिण-राढ़ी कायस्थ थे। अंग्रेजी रजिस्टर पुर्तगीज फिरंगी लिखते।

इसी समय कलकत्तेकी काउन्सिलने एक आर्डर निकाला कि जमीन बन्दोबस्तीके साथ-साथ जमींदार सब प्रजाको एक-एक पट्टा देवें। उसका फार्म बिल्कुल सीधा था। सीधा था इसीलिए केवल थोड़ा-सा परिवर्तन कर वह आज तक चला आ रहा है। इसमें प्रजाका नाम जमीनका माप मालगुजारीका परिमाण खूब साफ-साफ लिखा रहता। जमीन लेनेके समय लोग अच्छी तरह समझ सकते कि वे कितनी जमीन पा रहे हैं और उसके लिए कितना देना होगा। किसी प्रकारके गोलमालकी सम्भावना नहीं थी। इस समय उसके साथ केवल जमीनकी चौहद्दी जोड़ दी जाती है। पट्टेका विवरण बंगला अंग्रेजी दोनों भाषाओंमें लिखा रहता।

पुराने सभी पट्टोंकी कापी (copy) नष्ट हो गयी है। इसीलिए उस समयका कोई पट्टा मेरी नजरमें नहीं आया। जिन प्राचीन पट्टोंकी नकल कलकत्ता कलेक्टरीके दफ्तरमें सँभालकर रखी गयी है उनमें जो सबसे पुराना है उसकी अंग्रेजी तारीख २ जनवरी सन् १७५८ ई० और बंगला तारीख २१ पौष सन् ११६५ साल है। इस पट्टेमें कलकत्तेके जमींदार मैम्यू स्क्रेट साहब लक्ष्मीकान्त सेठको कलकत्ता बाजार अर्थात्

बड़ा बाजारमें सात्रे छः कट्ठा जमीन, सिक्का सात आना सात पाई साकाना मालगुजारीपर बन्दोबस्त करते हैं।

लक्ष्मीकान्त गोविन्दपुरके सेठ-वंशके थे। नये किलेके लिए जब कम्पनीने गोविन्दपुर अंचलको चुन लिया तब यही परिवार बड़ा बाजारमें उठकर चला आया। इसीसे वे बड़ा बाजारके सेठके नामसे प्रसिद्ध हैं।

एकके-बाद एक कई कामके आदमी जमींदार हुए जिससे शहरकी कुछ अच्छी खासी उन्नति हुई।

बड़ा बाजारको छोड़कर तीन बाजार और बसे। उनमें श्याम बाजार अभी भी है। यहाँ तक कि आज शहरका एक अंचल ही इसी नामसे विख्यात है। लाल बाजार अवश्य ही अब और बाजार नहीं है लेकिन उस हिस्सेका यह बहुत पुराना नाम है।

दो-चार ब्रिज (पुल) भी तैयार हुए। इनमें जोड़ासाँकोका नाम अभी भी है। यद्यपि जोड़ा क्यों आजकल वहाँ एक भी साँको (पुल) देखनेको नहीं मिलता फिर भी उस समूचे मुहल्लेको अभी भी लोग जोड़ासाँको ही कहते हैं। खास बाजार कहाँ था, इसका पता अब नहीं चलता।

पीनेके पानीके लिए बहुतसे पोखरे खोदे गये। जगह-जगह खाई खोद ड्रेन भी बैठाये गये।

मजेकी बात यह है कि कम्पनी बहादुर शहरकी उन्नतिके लिए अपनी जेबसे एक पैसा भी खर्च करनेको राजी नहीं हुए। सब खर्च टैक्स लगाकर शहरके बाशिन्दोंसे वसूल कर लिया गया।

पुराने देशी बाशिन्दोंने इसमें बहुत अधिक सहायता पहुँचाई थी। पता चलता है कि सेठोंने सुतोनुटिके एक भागको साफ-सुथरा रखनेके करारपर वहाँके अपने सेठ बगानकी मालगुजारीको बहुत कम करा लिया था। चित पुर रोडके उत्तरी हिस्सेके प्रायः पूरे रास्तेके दोनों ओर उन्होंने पथिकोंकी सुविधाके लिए बहुत-से पेड़ भी लगवाये थे।

साहबोंके लिए और विशेष रूपसे गोरी पल्टन और गोरे मौसी

मल्लाहोंके लिए एक अस्पताल खोला गया। यह अस्पताल उनका कब्रिस्तान था अर्थात् आजके सेन्ट जौन्स चर्चके पूब ओर बना हुआ था। अस्पतालके सम्बन्धमें अलेक्जेण्डर हैमिल्टन नामके एक जहाजी कप्तानने व्यंग करते हुए लिखा है कि लोग चिकित्साके लिए इस अस्पतालमें आते थे अवश्य लेकिन बहुत थोड़े लोग ही यहांसे लौट आकर कह पाते कि चिकित्सा किस प्रकारकी हुई। और एक व्यक्तिने मजाक उड़ाते हुए कहा है कि अस्पतालसे कब्रिस्तानकी दूरी बहुत ही कम है। एक छलांगमें ही पार की जा सकती है।

: ६ :

सांसारिक विषयोंकी अच्छी तरह सँभाल कर लेनेके बाद अंग्रेजोंको आध्यात्मिक विषयोंकी ओर ध्यान देनेका अब थोड़ा-सा अवसर मिला।

इसके पहले वे फोर्टके ही एक सीलनवाली अँधेरी कोठरीमें बैठकर किसी प्रकारसे उपासनाका अभिनय कर अपना कर्तव्यका पूरा कर लेते। सब समय उन्हें पादरीका उपदेश सुननेको ही मिलता ऐसी बात नहीं थी। कम्पनीके पादरी नियुक्त कर नहीं भेजनेपर अंग्रेजोंके डाक्टर अथवा काउन्सिलका कोई गण्यमान्य मेम्बर सफेद कपड़ेको ओढ़कर सर्टके ऊपर एक काला कोट डटाकर समन देन का पाते। उसके लिए अवश्य ही कुछ ऊपरी दक्षिणा भी पाते।

लेकिन शहरकी श्री-वृद्धिके साथ-ही-साथ अंग्रेजोंमें बहुतोंके मनमें आया कि एक अच्छा गिर्जा हुए बिना अब बिल्कुल अच्छा नहीं दीखता। यूरोपीयन लोग एक साथ बैठकर प्रार्थना करते हैं इसीलिए उनकी पूजा-अर्चना बहुत दूरतक सामाजिक कृत्य जैसी है। गिर्जाके नामपर चन्देका खाता खोलते ही बहुतसा चन्दा वसूल होने लगा। कम्पनीकी ओरसे कलकत्तेकी काउन्सिलने गिर्जाके लिए एक टुकड़ा जमीन दान दिया। उसीपर कलकत्तेमें अंग्रेजोंका पहला चर्च बना। इसी जगहपर आजका राइटर्स बिल्डिंगका

पश्चिमी बाजू है जहाँ ठीक दो रास्तोंकी मोड़पर सेक्रेटेरियेटका भव्य-वाला म्याक खड़ा है।

सन् १७०९ ई०की ५वीं जूनको रविवार था। उस दिन लन्दनके लार्ड बिशपके आशीर्वचनका पाठकर बड़े समारोहके साथ यह नया गिर्जा खोला गया। गिर्जेका नाम हुआ सेण्ट ऐन्स चर्च। इसीसे रानीके प्रति कितना कर्ताके भक्ती-दासी भावका भी प्रदर्शन हो गया।

कम्पनीके डायरेक्टर गिर्जेमें लटकानेके लिए एक अच्छा-सा घण्टा भेजकर मन-ही-मन अत्यन्त तृप्तिका अनुभव करने लगे। तब कृपा करके उन्होंने चर्चके कामके लिए एक पादरी साहबको भी भेजा था। उनका नाम विलियम एण्डरसन था। रेवरण्ड एण्डरसनको लेकिन अधिक दिन काम नहीं करना पड़ा। सन् १७११ ई० में बीमार होकर हवा बदलनेके लिए मद्रास जाते-जाते रास्तेमें ही वे जहाजपर मर गये।

इस समय यह गिर्जा एकदम निश्चिह्न हो गया है। उसका एक टुकड़ा भी कहीं खड़ा नहीं है। वैसे ऐसा भी दिन था कि लोग दो बार इसे देखते। एक बार बिजली गिरनेसे इसकी चूड़ा कुछ नष्ट हो ही गई थी कि इसके बाद सन् १७३७ ई० के क्वारकी आँधीमें वह एकदम टूटकर गिर गई। सन् १७५६ ई० में नवाब सिराजुद्दौला कलकत्तेको जीतकर घर लौटनेके समय इसे एकदम धूलमें मिला करके चले गये।

कलकत्ता शहरका नाम और यश इतना बढ़ गया कि हुगलीके फौजदार बीच-बीचमें यहाँ आकर एक-दो दिन बिता जाते। अंग्रेज लोग आदर सत्कारके साथ नाना उपहार देकर उन्हें सन्तुष्ट रखनेकी चेष्टा करते। इसी बीच फिर फारस देशके राजदूत हुगली होकर दिल्ली जाते रास्तेमें कलकत्तेमें कई दिन रहकर गये। अंग्रेजोंके व्यवहारसे वे इतना खुश होकर गये थे कि जानेके समय वादा कर गए कि वे अंग्रेजोंकी तरफसे स्वयं दिल्लीके बादशाहसे दो बातें कह देंगे। दो दिनों बाद बड़ा देशके पगुके राजाका राजदूत भी आकर शहरमें घूम गया।

शहर देखकर सभी अवाक् हो गये। राजा नहीं है बादशाह नहीं है फौजदारतक नहीं है, यहाँतक कि शहरकी तिमुहानीपर कोई नामलिवामी साधु-सन्त अथवा पीर-पैगम्बर भी नहीं है। फिर भी पता नहीं कैसे कई कारबारियोंके हाथमें पड़कर कई ऐसे नगण्य बंगाली गाँवोंसे रातोंरात कहानी सुनाने लायक इतना बड़ा एक शहर आँखोंके सामने देखते-देखते उठ खड़ा हुआ यह अच्छी तरह कोई समझ नहीं सका। बंगालके इतिहासमें यह एक नई बात थी। ऐसा इसके पहले कभी नहीं देखा गया। अजीब शहर कलकत्ता है!

सन् १७१० ई० में मुर्शीद कुली खाँ फिर बंगालके दीवान होकर लौट आये। आते ही वे समझ गये कि उनकी अनुपस्थितिमें अंग्रेजोंकी स्पर्धा बहुत बढ़ गई है। अभीसे उन्हें दबा नहीं रखनेपर अन्तमें उन लोगोंको लेकर अधिक तकलीफ़ उठानी पड़ेगी। इधरसे इस देशके लोगोंने क्रमशः अपने स्थानको छोड़कर कलकत्तेमें आकर अंग्रेजोंके आश्रयमें रहना शुरू कर दिया है, यह भी उन्हें कुछ शुभ लक्षण नहीं मालूम हुआ।

इसके कुछ ही बाद देखा गया कि भूषणाके उत्तर राढ़ी कायस्थ जमींदार सीताराम रायके मुसलमानोंकी फ़ौजके निकट हार कर बन्दी हो जानेपर उनके परिवारके कोई-कोई कलकत्ता भागकर वहीं ही रहनेका विचार करने लगे हैं। लेकिन अंग्रेज लोग इन लोगोंको आश्रय देकर अन्त तक कलकत्तेमें किसी तरह भी नहीं रख सके। मुर्शीद कुली खाँके बहुत अधिक तंग करनेपर हुगलीके फौजदारके हाथों इन लोगोंको बाध्य होकर सौंप देना पड़ा।

अंग्रेजोंको नाना प्रकारकी असुविधाएँ थीं। शहरमें जितने ही लोग बढ़ने लगे चमीदारीका काम भी उतना ही अधिक बढ़ गया। उसके लिए *रुपयेकी जरूरत थी लेकिन कम्पनी एक पैसा भी खर्च नहीं करेगी। निरु-*पाय होकर काउन्सिलको नाना प्रकारके टैक्स लगाने पड़े। यहाँ तक कि शादी करनेके लिए भी कम दिनों टैक्स देना पड़ता।

टैक्स लगाने देनेमें भी कम्पनीको आपत्ति थी। डायरेक्टरोंने लिखा

टैक्स बढ़ाकर किसी जमींदारीको अन्त तक टिकाकर नहीं रखा जा सकता। तुम लोग देशी लोगोंके साथ ऐसा सद्व्यवहार करो जिससे वे दलके-दल मुसलमानोंका देश छोड़कर तुम लोगोंके आश्रयमें आकर सुखसे रह सकें। इससे देखोगे कि जो लगानका रुपया वसूल होगा वही तुम लोगोंको जमींदारी का काम चलानेके लिए काफी होगा।

वान्सिटार्टने देखा, ऐसा करनेके लिए और भी अधिक जमीन चाहिए। आस-पासके और कई ग्राम नहीं खरीद लेनेपर तो शहरमें और लोगोंको नहीं हटाया जा सकता। इसी उद्देश्यसे वे लोग जमींदारोंके साथ बात चलाने लगे। लेकिन कोई भी और अंग्रेजोंके पास जमीन बेचना नहीं चाहता। अंग्रेजोंको पता चल गया कि ऊपरसे मुर्शिद कुली खाँने जमींदारों को इशारा कर दिया है कि कोई भी जिलेमें अंग्रेजोंके पास धूर-भर जमीन भी न बेचे।

मुर्शिद कुली खाँ विचक्षण व्यक्ति थे। वे अच्छी तरह समझते अंग्रेज उनके देशमें व्यवसायके प्रसार करनेमें खूब सहायता कर रहे हैं। और इसी में देशका मंगल है। लेकिन अंग्रेजोंके ऊपर उनकी कैसी विष-दृष्टि पड़ गई थी कि लाख प्रयत्न करके भी अंग्रेज लोग उसे दूर नहीं कर सके।

मुसलमानों और विशेष रूपसे फ्रांस देशवालोंपर मुर्शिद कुली खाँ का अच्छा-खासा पक्षपात था। ऐसा न हो कि वे अंग्रेजोंसे व्यवसायमें पीछे रह जायें लगता है इसी भयसे वे किसी भी तरह अंग्रेजोंको बढ़ने देना नहीं चाहते थे।

मुर्शिद कुली खाँ हालके एक पीढ़ीके मुसलमान थे। उनके आचरण- में यह पकड़ाई न दे जाय, इसीलिए वे हिन्दुओंको भी कुछ अच्छी दृष्टिसे नहीं देखते थे। इसमें वे कुछ उत्कट रूपसे ही उग्र थे।

मुर्शिद कुली खाँके हाथोंमें पड़ अंग्रेजोंका अन्तमें ऐसा हाल हुआ कि लगा जैसे पटनेकी कोठीको और नहीं रखा जा सकता। वहाँ प्रचुर शोरा पाया जाता। लेकिन उस शोराको ठीक नवाबकी आँखोंके मार्गसे मुर्शिदाबाद

हाकर जाना पड़ता। रोज ही प्राय यह रोक लिया जाता। बहुत रुपया देकर उसे छुड़ाना पड़ता। कम्पनीके डायरेक्टरोंने और पार न पाकर स्पष्ट लिखा कि पटनेकी कोठीको और रखनेकी जरूरत नहीं उसे बन्द कर दो।

और एक बखेड़ा पड़ा हुआ था। बंगालमें जितना चाँदीका रुपया था मुर्शिद कुली खाँने उसे दक्षिणमें औरंगजेबके पास भेजकर खतम कर दिया था इस प्रान्तमें कौड़ी देकर ही काम पूरा करना पड़ता यह पहले ही कह चुका हूँ। लेकिन बड़े कारबार तो कौड़ी देकर नहीं चलते। दक्षिणमें मद्रासके पास आरकट नामक एक जगहमें अंग्रेजोंने बहुत पहले एक टकसाल बनवाई थी। अपने देश अथवा चीनसे चाँदीकी ईंट लाकर उसी चाँदीसे उस टकसालमें रुपया छाप कर निकालते। उस रुपयेका नाम आर्कट-रुपया था। रुपया अवश्य ही बादशाहके नाममें ही छपता।

औरंगजेब जितने दिन दक्षिणमें युद्ध कर रहे थे उतने दिन बंगालमें भी अंग्रेजोंका आर्कट-रुपया खूब चालू था। इसका कारण यह था कि यहाँसे हाथ बदलते ही वह फिर दक्षिण लौट जाता। लेकिन औरंगजेबकी मृत्यु होते ही जैसे दक्षिणका युद्ध रुका अब और आर्कट रुपया इस देशमें नहीं चल पाता। हिन्दुस्तान (बंगालके बाहर उत्तरी भारत) म सिक्का चलता था। आर्कट-रुपयको गलम कर सिक्का-रुपये लेने जानपर बहुत बट्टा देना पड़ता किसी भी तरहसे पूरा दाम नहीं मिलता। इससे अंग्रेजोंका बहुत नुकसान होने लगा। कम्पनीके डायरेक्टर मुस्तैद लोग थे। उन्होंने सोचे यह समझ लिया कि यह निश्चित रूपसे उन्हींके कर्मचारियोंकी किसी प्रकारकी चालाकी है।

यह देखकर अंग्रेज लोग मुर्शिद कुली खाँसे अनुनय-विनय करने लगे कि कलकत्तेमें उन्हें एक टकसाल खोलनेका हुक्म दिया जाय। अनुरोध सुनकर मुर्शिद कुली खाँ बिलकुल जैसे आसमानसे गिरे। ये सब क्या कहता है। टोपीवाले तो खूब बे-अदब हैं? यह बैठने जगहका दावा है यदि प्रजा आज अपना टकसाल खोलना चाहती है यह तो कल नवाबी मा

माँग बैठेगी। कहना बेकार है कि अंग्रेजोंकी प्रार्थना मंजूर नहीं हुई मुर्शीद कुली खाँने चिट्ठी पढ़ उन्हें तत्काल विदा कर दिया।

१०

दूतकी अपेक्षा युद्ध अच्छा सुननेमें तो बात अच्छी है। किन्तु कहना जितना सहज था करना उतना सहज नहीं हुआ। अन्तमें अंग्रेजोंको भी दूत भेजना पड़ा। क्यों ऐसा हुआ यही बात कह रहा हूँ।

नवाबके पास अनेक प्रकारसे अनुनय-विनय करने नाना प्रकारके नजर उपहार भेंट करने तथा अच्छे-अच्छे वकीलोंको नियुक्तकर अर्जी पेश करनेपर भी कुछ फल नहीं निकला। मुर्शीद कुली खाँको एक इञ्च भी नहीं डिगाया जा सका। तब निराश होकर अंग्रेजोंने सोचा भाग्य आजमानेके लिए एक बार स्वयं बादशाहके पास दरबारकर क्यों न देखा जाय कि उसका क्या फल होता है। उस समय अजीमुस्सानका पुत्र फर्रुखसियर दिल्लीका बादशाह था। अजीमुस्सानने ही उन्हें तीन ग्राम खरीदनेका परवाना दिया था यह बात अंग्रेज भूले नहीं थे।

वहीं अर्मिनियन सौदागर खोजा सरहद जिन्होंने अजीमुस्सानके पाससे अंग्रेजोंको जमीन खरीदनेकी अनुमति ला दी थी वे इस सम्बन्धमें खूब उत्साह देने लगे। उन्होंने प्रस्ताव किया कि वे स्वयं अंग्रेजोंकी तरफसे वकालत करनेके लिए दिल्ली जानेको तैयार हैं। किन्तु प्रेसिडेण्ट रासल हेजेस इसके लिए राजी नहीं हुए। उन्हें लगा कि कम्पनीके खर्चसे खोजा साहब अपना काम बना लेनेकी ताकमें हैं। बहुत तर्क-वितर्कके बाद स्थिर हुआ कि अंग्रेजोंके दौत्यके प्रधान पण्डा होंगे कलकत्ताके ही एक गण्यमान्य मेम्बर जान सुरमैन। खोजा सरहद अवश्य साथमें रहेंगे। एडवर्ड स्टीफ्सन नामका एक अत्यन्त बुद्धिमान् छोकरा मुंशी उनका सेक्रेटरी हुआ।

सन् १७१५ ई० के अप्रैल महीनेमें दिल्लीके बादशाह फ़र्रुख़सियरको भेंट देनेके लिए उपहारकी सामग्रियोंसे नाव भरी गई। उन चीज़ोंका दाम प्राय तीन लाख रुपया होगा। बहुत रुपया खर्च हुआ जा रहा है यह देख दिल्लीमें व्यापार कर कुछ रुपया वसूल कर लेनेके उद्देश्यसे नाना प्रकारकी चीज़ें भी साथमें ले ली गयीं। फूल कढ़े हुए ज़रीदार रेशमी कपड़े मख-मल ऊनी कपड़े आदि। इसके अलावा हरेक प्रकारके मनिहारीके सामान, नाना प्रकारके धातु निर्मित कलम घड़ी पिस्तौल आईना, छुरी कैंची बिल्लौरी शीशा चीनी मिट्टी बरतन तथा तांबेके पात्र इत्यादि बहुत-बहुत तरहके सामान।

नक़द रुपया भी काफ़ी साथमें लेना पड़ा। उन दिनों तो दायें-बायें घूस दिये बिना किसी भी कामका अच्छी तरह बन्दोबस्त नहीं हो पाता। प्यादासे लेकर मन्त्री तक सभीको पद-मर्यादाके अनुसार कम या बेसी दक्षिणा देनी होती। नहीं तो कौन किसकी बात सुने? लेकिन इस सीधी सी बातको कम्पनीके डाइरेक्टर किसी भी तरह समझना नहीं चाहते। इसीको लेकर प्रत्येक पत्रमें वे कलकत्ताकी काउन्सिलके साथ खटपट करते। इसके ऊपर उन दिनों सरकारी काममें समय भी बहुत अधिक लगता। छत्तीस महीनेका साल होता। अतएव रुपया तो बहुत लगेगा ही।

अंग्रेज दूतोंके बीमार आदिकी हालतमें देखभालके लिए उनके साथ एक डाक्टर भी दिया गया। इस डाक्टरके सम्बन्धमें एक-दो बातें नहीं कहनेपर अन्याय होगा। डाक्टरी पास करते ही विलियम हैमिल्टन कम्पनी के जहाजपर डाक्टर होकर भारतवर्षकी ओर रवाना हुए। जहाजके कप्तानके अत्यन्त रूखे व्यवहारसे क्षुब्ध होकर हैमिल्टनने जहाजसे उतरकर फिर उस ओर रुख नहीं किया। पकड़े जानेपर फिर उसी जहाजपर लौट कर जाना होगा इसी भयसे वे मद्राससे एकदम सीधे कलकत्ता भाग आये। कलकत्तेमें उस समय नाना रोग प्रबल हो रहे थे। और एक डाक्टरकी विशेष रूपसे आवश्यकता थी। तीन पौण्ड अर्थात् उन दिनोंके चौबीस रुपये

महीनेपर हैमिल्टन साहब कलकत्ताके दो नम्बरके डाक्टरके पदपर नियुक्त हुए।

कलकत्तेको छोड़कर सुरमैन साहब अपने दलबलको लेकर विभिन्न प्रदेशोंको पारकर अन्तमें तीन महीने बाद दिल्ली पहुँचे। लेकिन पहले दिन प्रेसिडेण्टके परिचय-पत्रको दाखिल करनेके बाद बादशाहके साथ और भेंट ही नहीं होती। बड़े-बड़े अमीर-उमरावोंको पकड़नेपर भी कुछ नहीं हुआ। वे बिना हिचक घूस लेते, सहज भावसे बहुमूल्य उपहार ग्रहण करते लेकिन कामके वैसा कोई काम नहीं कर पाते। बादशाहको भी आज सिर दर्द कल पेट दर्द परसों शिकार, तरसों तीर्थयात्रा—एक-न-एक कुछ लगा ही रहता। क्या वैसे कार्योद्धार किये बिना ही अंग्रेजोंको लौटना पड़ेगा। इसी समय अचानक एक मौका मिल गया।

बादशाह फ़र्रुखसियरके साथ राजपूत राजा अजितसिंहकी लड़कीकी शादीकी बात बहुत दिनोंसे पक्की थी। इस समय कन्या पक्षवाले सलाहकार साथ-लेकर, बाजे-गाजेके साथ दिल्लीमें उपस्थित थे। उधर बादशाह बहुत अधिक बीमार हो गये थे। अच्छे-अच्छे हकीम-वैद्य तो निराश हो मानेपर हाथ धरे बैठ गये। विवाहकी पूरी तैयारियोंके बर्बाद हो जानेका उप क्रम था।

ऐसे समय सुना गया अंग्रेजोंके साथ एक साहब डाक्टर हैं। वैसे ही बुलाओ-बुलाओकी रट लग गई। हैमिल्टन साहबने बादशाहके शरीरमें अस्त्र लगाकर उन्हें अच्छा कर दिया। चंगे होकर बादशाहने हैमिल्टनको खिलअत दी। हीरे की अंगूठी और जवाहरातकी तलवार बख्शीश दी। उनके डाक्टरी यन्त्रादिको सोनेसे मढ़वा दिया।

मौका देख सुरमैन साहबने कौंसिल की ओर बादशाहके निकट अर्जियों-की अर्जी पेश की। बादशाह उस समय खुशीसे भरपूर थे। अत्यन्त प्रसन्न थे। अर्जी पढ़नेके साथ ही बोले तथास्तु! किन्तु कहनेसे क्या होता है? उस समय सभी विवाहोत्सवमें मस्त थे। इस समय क्या कोई सरकारी काम

में मन लगा सकता है ? देखते-देखते और छः महीने बीत गये । सुरमैन साहब कलकत्ते बार-बार चिट्ठी लिखते रुपया भेजो रुपया भेजो । कलकत्ते की काउन्सिलको तो खूब रंज मालूम होने लगा ।

बादमें मालूम हुआ कि देरी होनेका एक प्रधान कारण मुर्शिद कुलीखां थे । उन्होंने जैसे ही सुना कि साहबकर अंग्रेजोंने बादशाहके पास दूत भेजा है वैसे ही वे भी जोर-शोरसे लग गये कि किसी भी तरह अंग्रेज इस मामलेमें सफल मनोरथ न हो सकें । दिल्ली दरबारके जितने भी प्रभावशाली अमीर-उमराव थे उन सभीको मुर्शिद कुलीखांने पत्र लिखकर अनुरोध किया कि वे भरसक इस मामलेमें विशेष रूपसे बाधा दें । पत्रके साथ अवश्य ही आवश्यक रूपसे दक्षिणाकी भी व्यवस्था की यह कहना बेकार ही है ।

किन्तु अन्तमें देखा गया कि बादशाहने अंग्रेजोंकी सभी प्रार्थनाओंको मंजूर कर लिया है और फर्मान पर सही कर दिया है । सन् १७१७ ई० के जून महीनेमें बादशाही फर्मानको पाकेटमें भर सुरमैन साहबने साथियों-को लेकर दिल्ली छोड़ दी । फर्मानकी एक-एक कापी सूरत मद्रास और मुर्शिदाबाद भेजी गयी ।

बादशाह फर्रुखसियरने हैमिल्टनको दिल्लीमें रखनेकी यथाशक्ति चेष्टा की लेकिन डाक्टर साहब चतुराईसे टाल गये । और भी आवश्यक बहुत-सी दवाइयोंका संग्रह कर वे शीघ्र ही लौट आयेंगे यह आश्वासन देकर हैमिल्टन साहबने उस समयके लिए जान छुड़ाई ।

कलकत्तेमें लौट हैमिल्टन साहब अधिक दिन नहीं बचे । सन् १७१७ई० के ४ दिसम्बरको उनकी मृत्यु हो गई । कलकत्तेके पुराने कब्रिस्तानमें उन्हें दफनाया गया था । लेकिन वह कब्र अब और देखनेको नहीं मिलती । सेण्ट जान्स चर्चकी नींवके नीचे अन्तर्धान हो गई है । केवल कब्रके ऊपरके पत्थरका बादमें उद्धार हुआ । वह इस समय जोब-चारनकके समाधि-मन्दिरकी भूमिमें गड़ा हुआ है ।

बादशाह फर्रुखसियरने पहले तो हैमिल्टनकी मृत्युकी खबरका विश्वास

नहीं किया। उन्होंने समझा कि फिर विलायत से लौटकर न आना पड़े शायद इसीलिए मिथ्या प्रचार किया गया है। लेकिन अब उनके अपने आदमी कलकत्ते आकर अपनी आँखों हैमिल्टनकी क़ब्र देख गये तब वे और क्या करते? क़ब्रके पत्थरके ऊपर अंग्रेजीमें लिखे हुए शब्दोंके नीचे एक फ़ारसी इन्सक्रिप्शन लिखवा देनेकी उन्होंने व्यवस्था कर दी।

मरनेके पहले विल करके हैमिल्टन उपहारमें दी हुई बादशाहकी वस्तुओं-को सुरमैन साहबको दान कर गये थे। सुरमैन साहब इसके बाद और आठ वर्षों तक जीवित रहे। सन् १७२४ ई० में उनकी भी यहीं मृत्यु हुई। उनकी भी क़ब्र हो सकता है उसी एक ही क़ब्रिस्तानमें हो।

एडवर्ड स्टीफ़ेनसनने बादमें बहुत उन्नति की थी। कारख़ानेके गण्य मान्य मेम्बर होकर वे एक बार एक दिनके लिए फ़ोर्ट विलियमके एक्टिंग प्रेसिडेण्ट भी हुए थे।

ख़ोजा सरहद अंग्रेज़ोंको रुपये-पैसेका हिसाब-किताब नहीं समझा सकनेके कारण चुँचड़ा भागकर डचोंके इलाक़ेमें बने रहे। कलकत्तेमें उनका एक मकान था। उसे बिक्री कर देनेपर अंग्रेज़ोंके सिर्फ़ १५६४ रुपये वसूल हुए।

१९ अक्तूबर सन् १७१७ ई० को मुर्शीद कुली ख़ाँने बादशाह फ़र्रुख़ सियरको एक लाख रुपया नजराना देकर बंगालके सूबेदारी-पदका परवाना मँगा लिया। तभीसे नवाबका सरकारी नाम हुआ जाफ़रख़ाँ। लेकिन हम उन्हें मुर्शीद कुलीख़ाँ कहकर उल्लेख करेंगे। क्योंकि ऐसा देखता हूँ कि इतिहासमें बहुत जगह उन्हें जाफ़रख़ाँ कहा गया है और किसी-किसीने मीर जाफ़रके साथ उन्हें मिला-जुला भूल की है।

बादशाहके पाससे फ़र्मानका ले-आना उतना कठिन नहीं हुआ जितना कठिन उसे काममें लगाना हुआ। आजकलके अदालतसे डिग्री पाने जैसा। डिग्रीदारको परेशानी तो डिग्री पानेके बाद ही होती है।

फ़र्रुख़सियरके फ़र्मानमें स्पष्ट ही लिखा हुआ था कि अंग्रेज़ कम्पनी

पहलेकी तरह ही एक मुश्त तीन हजार रुपया लगानेका देकर सदा व्यापार साथ चलाते जाएँगे इसमें कोई बाधा नहीं दे सकता। फर्मानमें कलकत्तेके आसपासके अड़तीस ग्रामोंके खरीदनेकी भी अनुमति दी हुई है। उसमें और भी कहा गया है कि अंग्रेजोंका माल-रुपया बंगालमें जैसे पहले चलता था वैसे ही अब भी चलेगा। उसको चलानेमें किसी प्रकारका बट्टा नहीं देना होगा। जरूरत पड़नेपर अंग्रेज लोग अपना एक टकसाल भी बनवा सकते हैं।

लेकिन इतना सब करनेपर भी अंग्रेजोंके मस्तिष्कमें सुख तो जुटा नहीं उलटे जितनी कुछ शान्ति थी वह भी जाने जैसी हो गई। मुर्शिद कुलीखाँने अंग्रेजोंके पीछेसे कतराकर भाग खानेवाली नीतिको अच्छी दृष्टिसे नहीं देखा। उस समय देशकी अवस्था ऐसी थी कि लोग बादशाहकी अपेक्षा नवाबसे ही अधिक भय खाते। बंगालमें किसकी इतनी मजाल है जो नवाब मुर्शिद कुली खाँकी बातको नहीं मानेगा? नवाबका सख्त आदेश था कि अंग्रेजोंको जिसमें कोई जमींदार एक टुकड़ा भी जमीन बिक्री न करें बादशाही फर्मान हो या न हो।

कम्पनीके डायरेक्टरोंने भी कलकत्ताके अंग्रेजोंकी जमींदारी खरीदनेकी आतुरताका कारण अच्छी तरह नहीं समझा। इस बारेमें उनकी ओरसे कोई भी आग्रह नहीं था। बल्कि वे बारबार लिखने लगे कि हम लोग बनिया हैं हम लोगोंका काम व्यापार करना है, जमींदारी चलाना नहीं। हमारे कर्मचारी इस बातको ध्यानमें रखें तो हम लोग सुखी होंगे। हमलोगोंने जितनी भी जमीन पाई है वही हम लोगोंके लिए काफी है। और अधिक बढ़ानेपर उस जमीनकी रक्षा करनेमें ही प्राणोंपर आ बनेगी। आदमी सेना अस्त्रशस्त्र बहुत कुछ रखना पड़ेगा। उसमें जिस प्रकारसे खर्च है उसी प्रकारसे झंझट भी है।

कलकत्तेके अंग्रेज भी मूर्खता करनेमें कुछ कम नहीं थे। दोनों ओरसे संकट देखकर उन्होंने एक अच्छी चाल चली। अपनी आश्रित देशी प्रजा

को पट्टा देकर कलकत्तेके आसपासके ग्रामोंमें बसा दिया। ये लोग जमींदारकी सात्विक प्रजामें जिससे भी पाना संभव हो सका उसका घर-द्वार सब खरीद लिया। जिन लोगोंका नहीं खरीद सके उन्हें जबरदस्ती ठेलकर हटा दिया और उनके घर आदि दखल कर लिये। जमींदारोंकी परेशानी तो अन्तिम शिखरपर चढ़ गई। वे सरकारी सिरिश्तेमें खजानेका रुपया भरते मरते। लेकिन प्रजाके पाससे एक पैसा भी मालगुजारी नहीं वसूल कर पाते।

कलकत्तेके आसपास अंग्रेजोंने जिन ग्रामोंको खरीदनेकी अनुमति पाई थी उनमें चितपुर सिमले मिर्जापुर आरपुली कलिंगा चौरंगी और बिर्जितला थे। इन सबोंको धीरे-धीरे चालाकीसे उन लोगोंने अपने कब्जे में कर लिया। और अन्य जो थे जैसे बेलमेछे उस्टाडिंगी कामारपाड़ा कांकुड़गाछी बागमारी टांगरा शुंडो तिलजला गोबरा सेयालदा एष्टाली डिही श्रीरामपुर वैसे ही पड़े रहे। बहुत दिनों तक अंग्रेजोंने इन सबोंका दखल नहीं पाया। जब मीर जाफरने बंगालको नवाबीकी गद्दी पाई और चौबीस परगनाको अंग्रेजोंके हाथमें रख दिया उसी समय इन सबोंका व भोग कर सके। गंगाके उस पार हावड़ा सालके आदि जगहोंमें जो ग्राम अंग्रेजोंने पाये थे वहाँ जानेमें उन लोगोंको और भी देरी हुई।

अंग्रेजोंके रंग-ढंग देख मुर्शिद कुलीखांने भी एक चाल चली। अंग्रेजों-के जो पुराने तीन ग्रामों अर्थात् सुतोनुटि, कलकत्ता और गोविन्दपुरके लिए पाये जानेवाले सरकारी खजानेके रुपयेको नये सिरेसे निश्चित कर इन्होंने उसे प्रायः तीन गुना बढ़ा दिया और बारह वर्षका बकायाके बाबत चौंसठ हजार रुपये तलब किये।

अंग्रेज लोग तो बहुत ही चक्करमें पड़ गये। अवश्य ही अन्ततक यह बढ़ाया हुआ टैक्स उन्हें नहीं देना पड़ा तो भी उसके लिए बहुत दिनोंतक मरणांतिक संकटका भोग करना पड़ा। उसके लिए इधर-उधर घूसघास देते प्रायः उतने ही रुपये निकल गये। तब इससे यही हुआ कि जबरदस्ती

जमींदारी बढ़ानेकी अपनी चेष्टाको उस समय अंग्रेजोंको एकदम ही दबा रखना पड़ा।

मुर्शिद कुलीखाँ एक बातकी ओरसे खूब ही सावधान थे। अंग्रेजोंका वाणिज्य-व्यापार जिसमें बिलकुल बन्द न हो जाय इस सम्बन्धमें वे बहुत ही सतर्क थे। यद्यपि नाना प्रकारके छल-कपटसे मुर्शिद कुलीखाँ अंग्रेजोंसे अवश्य एक अच्छी खासी रकम वसूल लेते अथवा नहीं देनेपर उनका माल रोक रखते तथा उनके लिए व्यवसाय बन्द कर देते लेकिन यह सब बहुत ही थोड़े समयके लिए होता। शीघ्र ही कुछ रुपया लेकर निपटारा कर देते।

और दूसरी ओर जिसमें विदेशी व्यापारपर अंग्रेज लोग एकदम एकाधिपत्य न जमा लें इसीलिए दूसरे-दूसरे विदेशी बनियोंके लिए बहुत-सी सुविधाएँ कर देते। ऐसे ही मौकेमें उन्होंने अपना महसूल (Tariff) कम करा लिया। फ्रेन्च लोगोंने फिरसे आकर बंगालमें व्यापार करना शुरू किया। अस्टेण्ड कम्पनी नामकी एक जर्मन व्यापारी कम्पनी इसी समय बंगालमें आ जुटी। बैरकपुरसे तीन-चार मील उत्तर बांकीबाजार उनका अड्डा बना। मुर्शिद कुलीखाँने इन सबोंको समान रूपसे स्वीकार किया।

अंग्रेजोंका व्यापार इन्हीं कई वर्षोंमें इतना उन्नति कर गया था कि बहुत नाजायज रुपया देनेपर भी उनको बहुत लाभ होता। मिल साहबने अपने प्रसिद्ध इतिहास-ग्रन्थमें लिखा है कि फर्रुखसियरका फर्मान पानेके बादसे ही अंग्रेजोंके व्यापारकी अद्भुत उन्नति शुरू हुई।

इससे सबोंका लाभ हुआ। कम्पनीका तो हुआ ही। कम्पनीके स्टाक होल्डर प्रत्येक वर्ष सैकड़े दस पौण्ड डिविडेण्ड पाकर अत्यन्त खुश हुए। यहाँके अंग्रेज कर्मचारियोंके भी भाग्य खुल गये। वे अपने बचाये हुए रुपये से कुछ अच्छा-सा व्यवसाय करने लगे। अंग्रेजोंके साथ उनके सम्पर्कमें आये देशी लोग भी कुछ वंचित न रहे। लाभका अंश पानेके समय वे भी छूटे नहीं।

अंग्रेजोंकी व्यावसायिक बुद्धि बराबरसे ही कुछ तीक्ष्ण रही है। इसीसे

लिए तो नेपोलियन बराबर अंग्रेज जातिको मजाक उड़ाते । वे कहते अंग्रेज दुकानदारोंकी जाति हैं । आमदनी समस्त बजट बना सब स्थिर कर चलना अंग्रेजोंके स्वभावमें है । इकनामिक्स और फाइनान्सकी नीतिको वे अच्छी तरह समझते भी और कार्यक्षेत्रमें उसे ठीक मानकर चलते भी ।

लेकिन इन्हीं दो विषयोंमें हमारे देशी मालिक बिलकुल कोरे थे । क्या पठान, क्या मुगल क्या राजपूत क्या मराठा क्या जाट क्या सिक्ख किसीको भी यह ज्ञान नहीं था । फल यह होता था कि उन्हें बराबर अभाव ही बना रहता । बराबर ही मुफलिसों जैसी उनकी अवस्था बनी रहती जिसे अंग्रेजीमें क्रानिक इम्पास्नेस्सी कहते हैं । लेकिन उस अभावका सब धक्का गरीब प्रजाको सहना पड़ता । उस झंझटके मिटाते-मिटाते वे बिलकुल ठंडे पड़ जाते ।

बड़े-बड़े सेठ-महाजनोंने भी सिवा सूदपर रुपया देनेके देशकी साथ जनीन उन्नति हो ऐसे किसी काममें हाथ लगाया हो, ऐसा तो कहीं देखने-को नहीं मिलता । पर एक बात है । उन दिनों लोगोंके कर्मक्षेत्रका विस्तार कम था । इसके अलावा बराबर ही मनमें भय बना रहता कि कब राजा बादशाह लोग उनके रुपयेपर नजर लगायें ! उस समय केवल रुपयेके लिए ही नहीं प्राण लेकर भी खींचातानी होती ।

कोई भी सैनिक ठीक समयपर वेतन नहीं पाता। प्रायः सभीका कम-से कम तीन वर्षका वेतन तो बाकी पड़ा रहता । अतएव वे सभी सैनिक और सामन्त जो युद्धसे अधिक लूट बटोरनेकी ओर ही अधिक ध्यान देते तो इसमें आश्चर्य क्या था ? सरकारी कर्मचारी भी नियमानुसार वेतन नहीं पाते । वे भी प्रजाकी गर्दन मरोड़ उसे पूरा कर लेनेकी चेष्टा करते ।

अंग्रेजोंकी उन्नतिका एक और कारण था । वह पूराका पूरा चारित्रिक है । काममें दत्तचित्त लगे रहनेकी उनकी क्षमता मजबूत है । आपा-विपत्ति-से बहुत सहज ही वे घबराते नहीं बरन् उससे जैसे उनकी बुद्धि और अधिक खुलती है। अभी ही यह हो ऐसा कर कामको नष्ट करनेवाले अंग्र बाके

बच्चे नहीं होते। 'धनैः पन्था ः धनं पर्वतलंघनम्'—देखता हूँ कि इसी नीति-को पद-पदपर मानकर वे चले हैं चाहे व्यवसाय-वाणिज्य हो चाहे शहर की उन्नति करनी हो अथवा युद्ध-विग्रह हो।

इसी समय अंग्रेज लोग व्यवसायके क्षेत्रमें एक नयी चाल चलनेके फेरमें थे लेकिन मुर्शीद कुलीखाँने उस चालपर नहीं चलने दिया। अंग्रेज लोग फरुखसियरके फ़र्मानका एक मजेदार अर्थ लगानेके चक्करमें थे। उन लोगोंने कहा कि इस फ़र्मानके द्वारा बिना महसूल (tariff) दिये केवल विदेशी माल इस देशमें लाने भेजनेका ही अधिकार उन्होंने नहीं पाया है बल्कि देशी माल भी इस देशमें बिना महसूलके स्वतन्त्रतापूर्वक खरीदने-बचनेकी अनुमति पाई है। मुर्शीद कुलीखाँने उत्तरमें स्पष्ट रूपसे बतला दिया कि ये सब चालाकी नहीं चलेगी। कुशल चाहते हो तो रुक जाओ नहीं तो सामने ही समुद्र पड़ा हुआ है।

बादमें इसी बातको लेकर ही एक बड़ा-सा युद्ध हो गया था। उस युद्धमें बंगालके और एक नवाब मीरकासिमको बंगालकी गद्दी छोड़ देनी पड़ी थी। वह सन् १७६४ ई० का बक्सरका युद्ध था। यह कहानी मुझे नहीं कहनी है यह सर्वथा दूसरी कहानी है।

११

इसी समय अंग्रेजोंका बल तैयार हो गया है देखकर, कलकत्तेके पोर्तुगीज और आर्मिनियन लोगोंने भी अपने पुराने चाँचर टट्टीसे घिरे हुए लकड़ीके बने गिर्जाघरोंको गिराकर पक्का इंट-चूनेका गिर्जा उठानेकी इच्छा की। इसके पहले ईस्ट इण्डिया कम्पनीने मुर्गीहाटामें पोर्तुगीजोंको और आमराष्ट्रीमें आर्मिनियनोंको गिर्जा बनानेके लिए एक-एक टुकड़ा जमीन दिया था। पोर्तुगीजोंने अपने पुराने गिर्जाघरको तोड़कर वहींपर सन् १७२० ई० में नया पक्का गिर्जाघर बनाया। उसका नाम हुआ चर्च ऑफ दि वर्जिन

भरी आँख दि रोसारी। सन् १७२४ ई० में आर्मिनियनोंका चर्च सेण्ट नाजारेथ चर्च तैयार हुआ।

अंग्रेजोंका सेण्ट एन्स चर्च जब सिराजुद्दौलाके हाथों नष्ट हो गया तब बहुत दिनों तक उन्होंने पोर्तुगीजोंके इस चर्चपर अधिकार जमा अपने उपासनाके काममें लगाया था। इसके बाद लगता है उनके मनमें आया कि पोर्तुगीजोंके रोमन-कैथोलिक चर्चमें अंग्रेजोंके समान कट्टरपन्थी प्रोटेस्टैण्टों की प्रार्थना निश्चय ही स्वर्ग तक इतनी दूर नहीं पहुँच पाती। पोर्तुगीजोंको उनका गिर्जा लौटाकर फिर फोर्ट विलियमके उसी गम अन्धेरी कोठरीमें उन्होंने उपासना शुरू की।

इस देशके पोर्तुगीजोंकी सन्तान फिरंगीके नामसे प्रसिद्ध हुई थी। उनका अंग्रेजी नाम पहले ईस्ट इण्डियन था बादमें यूरेशियन हुआ और उसके बाद ऐंग्लो-इण्डियन। इस देशकी स्त्रीके गर्भसे अंग्रेजोंके जो बच्चे हुए व भी इसी दलके थे।

फिरंगी-समाजकी लड़कियोंमें एक अच्छा-सा लड़कीला सौन्दर्य था। वह अवश्य दो दिनोंका ही था। उनके मोहमें पड़कर बहुत-से अंग्रेज छोकरे विलायती मेमोंको छोड़कर उन्हींसे ब्याह कर लेते। उस समय कलकत्तेके अंग्रेजोंके समाजमें ब्याह करने लायक लड़की पाना अवश्य ही कठिन था। इसके करीब तीस-पतीस वर्षों बाद जब केवल वर जुटानेकी कोशिशमें ही दलकी दल विलायती लड़कियोंने इस देशमें आना शुरू किया तब भी अंग्रेज-छोकरोंका मन इन्हीं यूरेशियन छोकरियोंमें लगा रहता। उनकी कैसी छिपी-छिपी आँखें थी आधी-आधी बातें तथा कैसा एक नाजुक-नाजुक-सा भाव था। अच्छा सुन्दर मोहक चेहरा था। साँवले रंगपर सुन्दर दिखता।

किन्तु रिटायरकर घर लौटनेके समय इन सब स्त्रियोंको लेकर बड़ी मुश्किल होती। इस देशको छोड़कर वे विलायत जाना नहीं चाहतीं यहीं रह जातीं। उनके पतियोंका भी इंगलैण्ड ले जानेमें थोड़ी हिचक होती।

कारण यह था कि वे जिस ऐक्सेण्टसे अंग्रेजी बोलतीं वह खास विलायती लोगोंको बहुत ही विचित्र लगता। इसीलिए अंग्रेजोंकी गोष्ठीमें इसका नाम ही हो गया था—चि चि इंग्लिश। यह चि-चि शब्द अवज्ञा सूचक बंगलाके छी-छी शब्दसे ही निकला है। ऐसा बहुतोंका अनुमान है। इन सब स्त्रियों-के लड़के-लड़कियाँ अन्तमें इसी यूरेशियन दलमें ही जा जुटते।

दल वृद्धि होनेपर ये लोग मुर्गीहाटासे बाहर निकल बहूबाजार, वेलिंगटन स्क्वायर तथा धर्मतल्लासे लेकर पार्क स्ट्रीट तक फैल गये। पहले इन लोगोंमेंसे जो शिक्षित थे उन्हें अंग्रेजोंके सरकारी दफ्तर और फौजमें जगह मिलती। उसके बाद अभी कुछ दिन पहले तक रेल टेलिग्राफ कस्टम्स पुलिस सर्जेण्टकी नौकरीपर इन्होंने एकाधिपत्य कर रखा था।

थोड़ा सफेद चेहरा होनेपर ये अपनेको यूरोपियन जाहिर करनेकी कोशिश करते। यहाँ तक कि बहुतोंने पैतृक उपाधिका त्यागकर विशुद्ध अंग्रेजी उपाधि ग्रहण की है ऐसे उदाहरण भी कम नहीं हैं।

मैं जिस समयकी बात कह रहा हूँ उस समय इन दोगले वाले यूरोपियनोंमें निम्न श्रेणी वाले अंग्रेजोंके बाय-बावर्ची-आयाके रूपमें अति दास-दासी होकर रहते। पुराने विलों (वसीयतों) की पोथा उलटने-पुलटने पर यह देखा जा सकता है कि बहुतसे सज्जन अंग्रेज मरनेके पहले दयापर विल (वसीयत) करके उन्हें दास्यवृत्तिसे मुक्त कर गये हैं।

आर्मिनियनोंकी संख्या इस समय कलकत्तेमें बहुत ही कम है प्राय उँगलीपर गिने जाने योग्य। जो कई व्यापारको लेकर यहाँ हैं वे इस समय साहबोंके मुहल्लेमें ठीक अंग्रेजोंके समान ही चलते-फिरते हैं। वैसे एक ऐसा दिन भी था जब वे इस देशका पहनावा पहनकर, चाल-चलन बोलचाल यहाँ तक कि नाम उपाधियें भी मुगलोंका ढंग मानकर चलते थे।

बंगालियोंमें उन दिनों गोविन्द मित्तिरका खूब नाम था। वे बैरकपुरके पास अपने ग्राम कानकको छोड़कर कलकत्तेके पक्के वाशिंदा हुए। कुछ दिनों बाद कलकत्तेके जमींदारके नीचे ब्लैक जमींदारका पद जो उन्हें मिला।

उसी समयसे पलासी-युद्धके पहले तक लगातार गोविन्द मित्तिर उसी काम-पर बहाल रहे।

हालवेल साहब जब कम्पनीकी डाक्टरी छोड़कर काउन्सिलमें घुसे और कलकत्ताके जमींदार हुए तब गोविन्द मित्तिरको भगानेके लिए उनके पीछे जोरोंसे लग गये। मित्तिरके पुत्रपर वे अत्यन्त क्रुद्ध थे। लेकिन काउन्सिलमें मालिकका बल रहनेके कारण गोविन्द मित्तिरकी नौकरी नहीं गई। गोविन्द मित्तिरने हालवेलके मुँहपर ही काउन्सिलको साफ रूपसे कहला दिया कि कम्पनी जो वेतन उन्हें देती है उससे तो उनके पहनने-ओढ़नेका ही काम नहीं चलता पेट भरनेकी तो बात ही दूर है। उनके जैसे नामी गिरामी आदमीको अपनी इज्जत बचा रखनेके लिए रुपयेकी आमदनीके लिए अन्य उपायका अवलम्बन करना ही पड़ता है। काउन्सिलके छोटे बड़े सभी मालिक लोग उस समय अन्य अनेक उपायों द्वारा रुपया कमाते यह सब मित्तिरका अच्छी तरहसे जाना हुआ था। अतएव उन्होंने और गोविन्द मित्तिरको उत्तेजित नहीं किया जिससे कहीं उन सभीकी बहुत-सी गुप्त बातोंका बाजारमें ढिंढोरा न पीट जाय।

डिप्टी जमींदार होकर रहते समय गोविन्द मित्तिरने नाना उपायोंसे बहुत रुपया जमा कर लिया था। अपने नामसे अथवा बेनामी रोजगार द्वारा अच्छे-अच्छे बाजारोंका ठेका लेकर, सस्ते भावमें अपने आश्रितोंके बीच जमीन बन्दोबस्त कर वसूलीके रुपयेमें गड़बड़ी करके गोविन्द मित्तिर बिल्कुल रातोंरात बड़े आदमी बन गये।

उनका इतना रोब-दाब था कि गोविन्द रामेर छड़ि' (गोविन्द रामकी छड़ी) बंगालमें कहावत जैसा होकर रह गया है। उन दिनों देशी लोगोंके लिए प्रतिष्ठित होनेके दो उपाय थे। एक ऊपरवालोंका मन रखकर चलना और दूसरा नीचेवालोंपर अत्याचार करना। सरकारी काममें देशी लोगों-की यह नीति मुसलमानी अमल तथा बृटिश शासनमें करीब एक जैसी ही रही है। थोड़ी-सी क्षमता हाथमें आते ही निरीह देशवासियोंके सिरपर छड़ी

घुमाना आज भी नहीं है। यह देशी ढंग बहुत दिनोंसे ही चला आ रहा है। लगता है अभी भी बहुत दिनों तक चलता रहेगा।

यह लोगोंमें कहता है जैसे गोविन्दराम मित्तिर ही पहले-पहल गोविन्दपुरसे हटकर सुतानुटिमें रहने लगे। कुमोरटुलिमें उनका मकान था। इसीसे इनके वंशज लोग कुमोरटुलिके मित्तिरके नामसे परिचित हैं। बादमें गोविन्द मित्तिरके वंशके बहुत लोगोंने अंग्रेजोंकी सरकारी नौकरीमें आ नाम कमाया था। इनके वंशके कुछ लोग गृह-कलहसे क्षुब्ध होकर कलकत्ता छोड़कर काशीमें जाकर रहने लगे। वहाँ वे चौखम्भाके मित्तिरके नामसे प्रसिद्ध हैं।

किन्तु गोविन्द मित्तिरके नाती राधाचरण मित्तिर एक बार फाँसीपर चढ़ते-चढ़ते रह गये। खोजा सुलमान नामके एक यहूदीके पाससे कम्पनीके खरीदका कागज किसी-कवालाका अपने नामसे जाली कर लिया था। अदालतमें इसके साबित हो जानेपर उस समयके कानूनके अनुसार राधाचरणको प्राणदण्डका आदेश मिला। यह २७ फरवरी सन् १७६५ ई०की बात है।

उस समयके कलकत्तेके बहुत-से गण्यमान्य व्यक्तियोंने इस दण्डके विरुद्ध गवर्नर स्पेन्सरके पास एक अपील की। स्वयं नवाब नाजिम मीर जाफरके पुत्र नजमुद्दौलाने गवर्नरके पास अनुरोध भेजा कि जिसमें राधा चरणकी रिहाई दी जाय। सब देख-सुनकर गवर्नर और उनकी काउन्सिलने राधाचरणकी फाँसीको मौकूफ किया था।

लगता है जैसे गोविन्द मित्तिरने सन् १७३० ई० के आसपास कुमोर टुलीमें गंगाके किनारे एक बहुत बड़े मन्दिरकी प्रतिष्ठा की थी। उसका यह भी शिखरोंवाला नवरत्न मन्दिर इस लोगोंके अक्टरलोनी मानुमेन्टसे भी ऊँचा था। बहुत दूरसे यह लोगोंकी दृष्टिको आकर्षित करता। यही अंग्रेजोंके निकट उस समयके कलकत्तेका दि ब्लैक पैगोडा था। सन् १७१७ ई०की आँधीमें नष्ट एवं चकड़े शिखरके समान इस मन्दिरके भी बहुत-से शिखर टूटकर गिर गये थे। सन् १८४० के भूकम्पमें सारा-का-सारा चूर

हो गया। इसके बाद किसीने भी इस मन्दिरका संस्कार नहीं कराया। इसका थोड़ा-सा ध्वंसावशेष अभी भी किसी तरहसे खड़ा है।

पोर्तुगीजोंका भी गिर्जा रह गया है। पर उसे पूरी तरहसे नये रूपमें ढालकर सजाया गया है। आर्मेनियनोंका गिर्जा भी है। उसका आधार ठीक रहनेपर भी ऊपरवाला हिस्सा बहुत-कुछ बदल गया है। यही इस समय कलकत्तेका सबसे पुराना ईसाई धर्म मन्दिर है।

१२

व्यापारमें उन्नति होनेसे ही लोगोंके हाथमें रुपया आता है। हाथमें अधिक रुपया आते ही लोगोंका मिजाज गर्म हो उठता है। फलस्वरूप मामले-मुकदमे बढ़ जाते हैं। इस क्षेत्रमें भी यही हुआ।

पहले-पहल अंग्रेजोंके आपसके वाद-विवादको काउन्सिलके प्रेसिडेन्ट और दो-तीन मेम्बर मिलकर बैठ जाते और उसे तय कर मिटा देते। प्रारम्भमें यह व्यवस्था मोटे तौरपर ठीक नहीं रही। लेकिन अन्तमें इस कामके लिए लोग पाना कठिन हो गया। उस समय सभी अपने-अपने काममें व्यस्त थे। जैसे दो पैसेकी जगह चार पैसेकी आमदनी की जा सकती है इसीकी तालमें सभी घूमते। उस समय बिना पैसेके दूसरेके मामलेका किस्सा सुननेकी किसकी इच्छा होती? इसीलिए कामके समय बुलाने जाने पर सुननेको मिलता कि बारासतमें शिकार खेलने गया है तो कोई चूँचड़ा चन्दननगरमें मौज करने गया है अथवा कोई गंगामें बोटपर चढ़कर हवा खाता हुआ घूम रहा है।

हालत देख कम्पनीके डायरेक्टरोंने कलकत्तेमें न्याय-विचारकी सुव्यवस्थाकी ओर ध्यान दिया। उन्होंने इंग्लैंडके राजा जार्ज दि फर्स्टको पकड़ कर एक चार्टर निकलवा लिया। सन् १७२६ ई० में एक साथ ही एकदम चार-चार अदालतें बैठ गईं।

पहली मेयर्स कोर्ट थी। एक मेयर और नौ आल्डरमैनको लेकर यह सभा थी। इसका काम था कलकत्तेके यूरोपीयन वाशिन्दोंके बीच जो दीवानी मामले होते उन्हींका विचार करना।

इसके ऊपर एक अपील-कोर्ट थी। इसमें स्वयं प्रेसिडेण्ट और उनकी कौंसिल थी। इसके अलावा प्रेसिडेण्ट और कौंसिलकी मेंबरोंको जितने भी फौजदारी मामले थे उनका विचार करनेका भार मिला। एक राज द्रोहको छोड़कर अन्य सभी अपराधोंके लिए वे ही दण्ड देते। केवल राज द्रोहीको पकड़-बाँधकर जहाजपर चढ़ाकर न्यायके लिए इंगलैंड भेजा जाता।

छोटे-मोटे दीवानी मामलोंको शीघ्र निबटानेके लिए और एक कोर्ट बैठाई गई। उसका नाम कोर्ट आफ रिक्वेस्ट्स था, आजकलकी भाषामें छोटी अदालत। यद्यपि चौबीस कमिश्नर मिलकर इन सब मामलोंको सुनते तो भी ये मामले बीस रुपयेसे अधिक मूल्यके नहीं होते।

मेयर्स कोर्टका एक और बड़ा काम था। यह था मृत व्यक्तियोंकी छोड़ी हुई सम्पत्तिके वितरणकी व्यवस्था करना। जिनका प्रोबेट लेना जिन नहीं रहनेपर लेटर्स आफ एडमिनिस्ट्रेशनकी व्यवस्था करना मृत व्यक्तिके स्टेटका हिसाब तलब करना—ये सभी मेयर्स कोर्टके जिम्मे थे। इसके ऊपर पागल नाबालिग, विधाविधा आदि जितने अक्षम व्यक्ति थे उनका गार्जियन ठीक कर देने तथा उनकी सम्पत्तिकी हिफाजत करनेका भार भी मेयर्स कोर्टके ही ऊपर पड़ा।

मेयर्स कोर्टमें देशी लोगोंकी गवाही लेनेकी जरूरत पड़नेपर किस तरह उनसे हलफ कराना होगा इसे लेकर बहुत दिनों तक बहस-बहसी चली थी। अन्तमें डायरेक्टरोंने इसकी एक मीमांसा कर दी। उन्होंने कहा देशी लोगोंको क्रिश्चियानी ढंगसे शपथ दिलानेका क्या कुछ भी अर्थ होता है? इस प्रकारके हलफका मूल्य ही क्या है? इस तरहसे करनेके लिए बाध्य करनेपर उनके मनमें भय हो सकता है कि हम लोग शायद उनकी जाति

लेनेकी चेष्टामें हैं। अतएव तांबा-तुलसी-गंगाजल लेकर वे जिस तरह शपथ करते हैं उन्हें वही करने दो।

कलकत्तेमें देशी लोगोंके दीवानी और फ़ौजदारी दोनों प्रकारके मामलों-के विचारका भार जमींदारोंपर था यह हम पहले ही कह चुके हैं।

उनके दीवानी मामलेका विचार जिसमें देशी आईनके अनुसार ही हो इसके लिए देशी आदमियोंने एक दरख्वास्त दी। देशी आदमियोंकी मध्यस्थतामें ही उनके मामलेका फैसला होना चाहिए। डायरेक्टरोंने अपनी सम्मति बताई। तब फौजदारी मामलोंमें बाध्य होकर देशी लोगोंको जमींदारोंकी कचहरीमें दौड़ना पड़ता। उससे किसी प्रकार छुटकारा नहीं मिलता।

अंग्रेज-जमींदार जो देशी लोगोंके फ़ौजदारी मामलोंका विचार करते और उसके लिए सजा भी देते—यह हुगलीके फौजदारको बिलकुल ही पसन्द नहीं था। सच्ची बात तो यह है कि वह तो उन्हींका चुरिस्‌डिक्सन था। उन्होंने देखा कि अंग्रेज लोग उसे हथिया लेनेके फेरमें हैं। इसी-लिए, फ़ौजदारी मामलोंके विचार करनेके उद्देश्यसे हुगलीके फ़ौजदार बार बार कलकत्ते आने जाने लगे। लेकिन किसी तरह भी अंग्रेजोंने दखल नहीं छोड़ी। उनका कहना था कि अपने इलाकेमें वे ही एकमेवाद्वितीयम् हैं। और किसीका वहाँ स्थान नहीं। अन्तमें साल-साल एक मुश्त कुछ रुपया पानेका बन्दोबस्त कर फ़ौजदार साहब चुप हो गये।

वैसे कम्पनीके डायरेक्टरोंने एक अच्छी युक्ति निकाली। उन्होंने विशेष रूपसे कह दिया था कि अंग्रेज-जमींदार जिसमें किसी देशी प्रजा और विशेष रूपसे मुसलमान प्रजाको प्राणदण्ड न दें। वैसा करनेपर उसे लेकर मुगलों-से विवाद उठ खड़ा होगा। जिसमें किसी भी तरह ऐसा मौका न आय। अंग्रेज लोग भी जब तक प्रतिष्ठाशाली नहीं हुए अर्थात् जितने दिन पलासी का युद्ध नहीं हुआ उतने दिन इस उपदेशको अक्षर-अक्षर मानकर चले। इसीलिए बहुत दिनों तक यह देखनेको मिलता है कि चोर-बदमाशों खूनी

डकैतोंको कभी हाथ-पैर नाक-कान काटकर और कभी केवल दाग देकर गंगा पारकर मुगलोंके इलाकेमें छोड़ दिया जाता।

कोर्ट तो हुआ। लेकिन उसे कहाँ ले जाकर बैठाया जाय यही एक बड़ी चिन्ताकी बात हुई। कम्पनीके मकानोंमें लोग भर पड़े थे। किरायेपर लेने लायक एक भी मकान खाली नहीं था।

या जैसे बहुत दिनोंसे एक मकान पड़ा हुआ। लेकिन वह एकदम पुराना जर्जर जीर्ण-शीर्ण था। एक समय यह एक अच्छा मकान था। प्रारम्भके राजदूतके कलकत्ता आनेपर जिस मकानमें उन्हें रखा गया था यह वही मकान था। कार्टस्मिथने इस मकानको साढ़े छः हजार रुपयेमें खरीद लिया। इसके बाद उसका अच्छी तरह मरम्मत कराकर सन् १७२९ ई० में उन्होंने वहीं मेयर्स कोर्टको बैठा दिया। इसके लिए सब रुपया कलकत्तेके बाशिन्दोंसे फिर टैक्स बैठाकर वसूल करना पड़ा। कम्पनीने एक पैसा भी नहीं दिया। लेकिन महसूल जुर्मानेके जो रुपये वसूल होते वह सब अंग्रेज राजाकी अनुमतिके अनुसार कम्पनी बहादुर अपने ही तहवीलमें जमा कर लेती।

इस समयका सेण्ट ऐण्ड्रूज चर्च—दूसरा नाम स्काच कार्क तथा देशी नाम लाल गिर्जा—जो राइटर्स बिल्डिंग्सके पूर्वी हिस्सेमें खड़ा हुआ है ठीक वहीं पुराना एम्बेसेडर्स हाउस था। यहीं मेयर्स कोर्ट था। कामकी सुविधाके लिए इसी समय रास्तेके उस पार दक्षिणकी ओर थोड़ा जानेपर एक जेल भी बनाया गया।

सन् १७५६ ई० में कलकत्तेपर अधिकारकर राजधानी लौटनेके पहले बहुत मकानोंके साथ इसको भी सिराजुद्दौलाने ध्वंस कर दिया था। उस समय कार्टस्मिथने इस जगहको बेच देना चाहा और कलकत्तेके चैरिटी स्कूलने अपने फण्डसे इसे खरीद लिया। बादमें फिर उसी स्थानपर नये सिरेसे एक दो-तल्ला मकान बना। उस मकानके निचले तल्लेमें कोर्ट और ऊपरी तल्लेमें कलकत्तेका चैरिटी-स्कूल था।

दरिद्र यूरोपीयन लड़के-लड़कियोंको बिना फीसके कुछ लिखना-पढ़ना सिखानेके लिए चन्दा करके बहुत पहले ही से यह स्कूल खोला गया था। यह चैरिटी स्कूल ही बादम फ्री स्कूल हुआ। बादमें सदर स्ट्रीटके पूरबकी ओर एक रास्तेपर स्कूल उठकर चला गया। उसीसे वहाँके रास्तेका नाम फ्री स्कूल स्ट्रीट हो गया। और मेयर्स कोर्टके नामसे ही ओल्ड कोर्ट हाउस स्ट्रीट नाम पड़ा।

यहाँसे चैरिटी-स्कूलके हट जानेपर उस जगह मेयर्स कोर्टके खोलस्लेपर कलकत्तेका टाउन हाल बना। आजका टाउनहाल उस समय भी नहीं बना था। वह इसके बहुत बाद सन् १८१३ ई०में लाटरीके रुपयेसे तैयार हुआ।

सन् ईसवीकी अट्ठारहवीं शताब्दीके अन्तिम दिनोंसे सन् ईसवीकी उन्नीसवीं शताब्दीके प्रारम्भके पैंतीस वर्षों तक कलकत्ते में लाटरीकी खूब धूम थी। जभी कोई नया रास्ता बनाने अथवा सरकारी अध-सरकारी मकान बनानेकी जरूरत पड़ती तभी एक बड़ी-सी लाटरीका आयोजन होता। उससे बहुत रुपये आते। प्राइज देकर जो रुपये बचते उससे ही शहरके बहुतसे बड़े रास्ते बहुत-सी पब्लिक बिल्डिंग्स तैयार हुई थीं। साथ-साथ बहुतसे पोखरे खुदवाये गये तथा पार्क तैयार कराये गये।

पलासीके युद्धके बाद सन् १७५८ ई० में जब जमींदारका पद उठा दिया गया तब उसके साथ ही जमींदारी कचहरी भी उठ गई। देशी विलायती सबके मामले तब मेयर्स कोर्टके अधीन हो गये। लेकिन देखता हूँ कि इसके पहले ही किसी एक मौकेसे मेयर्स कोर्ट तो देशी मामलों और विशेष रूपसे उन मामलोंपर जिनमें एक पक्ष यूरोपीय और दूसरा पक्ष देशी होता विचार करना शुरू कर दिया था।

वैसे देशी लोग अपने बीचके मामलोंको मेयरके पास दरख्वास्त देकर देशी मध्यस्थके द्वारा ही निपटा लेते। सन् ईसवीकी अट्ठारहवीं शताब्दीके अन्तिम दिनोंमें दो व्यक्ति ही मुख्य रूपसे इस मध्यस्थका काम करते। एक

तो प्रसिद्ध महाराजा नवकृष्णदेव बहादुर थे और दूसरे, दीवान काशीनाथ बाबू थे।

नवकृष्णदेवका परिचय नये सिरेसे नहीं देना होगा। काशीनाथ बाबू पश्चिमके थे। वंशानुक्रमसे बहुत दिनों बंगालमें रहते-रहते वे बंगाली हो गये थे। इनके पूर्वजोंमें पालीराम टंडन कलकत्तेमें आकर सुंदरी लकड़ीके व्यवसायसे प्रतिष्ठित हुए थे। काशीनाथ बाबूके वंशवालोंने बादमें टंडन पदवी छोड़कर बमन उपाधि ग्रहण कर ली। इस समय इसी पदवीसे वे परिचित हैं।

सन् १७७४ ई० में जब दूसरे एक चार्टरके बलपर कलकत्तेमें सुप्रीम कोर्टकी स्थापना हुई तब मेयर्स कोर्टका अन्त हुआ। सुप्रीम कोर्टके जजोंने मेयर्स कोर्टके मकानमें ही बहुत दिनों तक अपना सेशन चलाया। इसी मकानमें बैठकर सन् १७७५ ई० के जून महीनेकी कड़ी-छड़ी-सी गर्मीमें सात दिन मामला चलनेके बाद महाराज नन्दकुमार रायको फाँसीकी सजा मिली थी।

सन् १७८२ ई० में सुप्रीम कोर्ट यहाँसे उठकर इस समय जहाँ हाई कोर्ट है, वहींपर एक मकानमें बैठने लगा। अवश्य ही उस समय हाईकोर्ट का मकान नहीं बना था। हाईकोर्टकी सृष्टि सन् १८६१ ई० में हुई और उसका मकान सन् १८७२ ई० में बना।

अंग्रेज लोग अदालतकी स्थापनाको अपने शासनका अच्छा फल कह अपनी खूब ही बड़ाई करते हैं। बहुत-से अंग्रेज लेखक इसे लेकर गर्व करते हुए खूब बढ़ा-चढ़ाकर मोटे-मोटे ग्रन्थ लिखकर अपने मनमें खूब तृप्तिका अनुभव कर चुके हैं।

यह बात सच है कि अंग्रेजी शासनमें भारतवर्षमें सर्वत्र एक ही तरह-की अदालत एक ही प्रकारके आईन-कानून और प्रायः सभी अदालतोंमें एक ही प्रकारकी कार्यप्रणाली होनेसे बहुत सुविधा हो गयी थी। इसके

भारतवर्षके भिन्न-भिन्न लोगोंको कुछ दूर तक एक सूत्रमें गूँथा जा सका इसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता।

किन्तु विलायती पुराने सड़े कुत्सित ढंगके एक जस्टिस प्रोसिक्यूटरको इस देशके सिरपर लाद देनेके फलस्वरूप अदालतमें जाकर अन्त तक कुछ सुविधा होती हो ऐसा तो नहीं लगता। इसीलिए तो यह प्रवाद चल पड़ा कि जो जीतता है वह हारता है और जो हारता है, वह मरता है। फौजदारी कोर्टमें मुद्दई होकर जानेके दो दिन बाद ही हैरान होकर वह महाजनकी कोटिमें आ पड़ता है, इसके उदाहरण भी तो कुछ कम नहीं है।

कानूनके नामपर पुराने सुप्रीमकोर्टके चीफ जस्टिस सर इलाइजा इम्पेके अत्याचारोंका ब्योरा इतिहासके बड़े-बड़े ग्रन्थोंमें छपा हुआ है। अंग्रेज लोग उन सब बातोंको कितना भी दबा देनेकी कोशिश क्यों न करें, वह अब किसीसे अज्ञात नहीं है। और कितने ही बड़े-बड़े नामधारी वकील लोग अदालतमें दीर्घ कालतक चलनेवाले मामलोंकी रसद जुटाते-जुटाते सब कुछ स्वाहा कर उजड़ गये। इसके उदाहरण पुरानी ला-रिपोर्टोंके पन्ने-पन्ने में भरे पड़े हैं।

एक ही दृष्टान्त काफी होगा। बड़ा बाजारके प्रसिद्ध मल्लिक वंशके नयनचाँद मल्लिकके पुत्र बापसे भी अधिक प्रसिद्ध निमाई मल्लिक जब सन् १८०७ ई० के २४ अक्टूबरको मरे तब देखा गया कि जमीन-जायदाद घर द्वार बर्तन भाँड़ाके अलावा नकद एक करोड़ रुपया छोड़ गये हैं। उनके उस विल (वसीयत) की शर्तोंका ठीक क्या मतलब होगा इसे स्थिर करनेमें लगातार इक्तालीस बरसका समय लगा था। वह नकद एक करोड़ रुपया किसके पेटमें गया इसे खोलकर नहीं कहनेपर भी किसीको समझना बाकी नहीं रहा।

इसीलिए तो इस देशमें एक आदमी दूसरेको शाप देते हुए कहता है कि तुम्हारे घरमें मामला-मुकदमा आरम्भ हो। किसीको अत्यधिक परेशान

करना चाहनेपर बात-बातमें एक नम्बर दो नम्बर ठीक देनेकी बात भी कहावत जैसी ही हो गई है।

ऐसा रंग-ढंग देखकर कुछ समय पहलेसे ही आजकलके अंग्रेज व्यापारी भी सब अपना मामला लेकर अदालतमें उपस्थित नहीं होते बंगाल चेम्बर आफ् कामर्सकी मध्यस्थतामें ही तय करा लेते हैं।

पर एक बात स्वीकार करनी पड़ती है कि अंग्रेजी अदालतोंमें मुसलमानी अदालतोंके समान मुँह देखकर न्याय नहीं होता कानून देखकर ही होता। लेकिन यह न्याय बहुत धीरे-धीरे बहुत समयके बाद बहुत पैसा खर्च करके ही सम्भव होता। काजीके न्यायमें हाथों-हाथ सर काटा जाता अवश्य लेकिन उसमें इस प्रकार तिल-तिल जलाकर मारा नहीं जाता।

: १३ :

१० जून सन् १७२७ ई० को मुर्शिद कुली खाँको परलोकके लिए बंगालकी नवाबी-गद्दीको छोड़कर जाना पड़ा।

मुर्शिद कुली खाँकी मृत्युके कुछ पहलेसे ही उनके दामाद शुजाउद्दीन खाँने सब इन्तजाम कर रखा था। श्वसुर महाशयके दिवंगत होनेके दो-चार दिन पहले ही उनकी अन्तिम अवस्था जानकर शुजाउद्दीन उड़ीसाकी डिप्टी गवर्नरीका भार अपने छोटे पुत्र तकी खाँके हाथमें दे बंगालकी ओर रवाना हुए। मेदिनीपुरके निकट आते ही उन्होंने सुना कि मुर्शिद कुली खाँ दिवंगत हो गये। साथ-ही-साथ दिल्लीके बादशाह मुहम्मदशाहके दरबारसे उनके नाम बंगालकी गवर्नरीका परवाना आ गया उन्होंने प्रसन्न चित्तसे मुर्शिदाबादमें प्रवेश किया।

शुजाउद्दीनकी स्त्री जीनतउन्निसा बेगम परस्त्रीके ऊपर पतिकी परम आसक्ति देखकर बहुत पहलेसे ही अपने पुत्र सरफराजको साथमें लेकर मुर्शिदाबादमें बापके घरमें वास करतीं। सरफराजको ही मुर्शिद कुली खाँ अपना

उत्तराधिकारी स्थिर कर गये थे। शुजाउद्दीनको मुर्शिदाबाद आते देख सरफराज द्विविधामें पड़ गये। अन्तमें नानी माँ और दूसरे-दूसरे हितैषियोंकी सलाह लेकर बापको ही बंगालकी गद्दी छोड़ दी। ᅟ ᅟ

शुजाउद्दीन शान्तिप्रिय थे। ऐसा होना ही था। विलास-व्यसन काम प्रवृत्तिमें वे इतने मस्त थे कि और किसी विषयमें लगे रहनेकी शक्ति आती ही कहाँसे? लेकिन बंगालकी गद्दी पाकर पहले-पहल राज-काजमें उन्होंने खूब मन लगाया था। न्यायोचित रूपसे कुछ दिनों उन्होंने शासन भी किया था। इसके बाद राज-काजका समस्त भार धीरे-धीरे अलीवर्दी खाँके बड़े भाई हाजी अहमद राय राय रायान आलमचन्द और जगत सेठ फतेचन्द इन तीन आदमियोंके ऊपर आ पड़ा। निश्चिन्त होकर शुजाउद्दीनने अपने-आपको आमोद प्रमोदमें पूरी तरहसे बह जाने दिया। मुर्शीद-कुलीके कठोर शासनमें देशमें बहुत सुशृङ्खलता थी। इसीलिए शासन चलानेमें शुजाउद्दीनको अधिक कष्ट नहीं उठाना पड़ा।

अंग्रेजोंके ऊपर कड़ी नजर रखनेपर भी शुजाउद्दीन खाँने उन्हें अधिक कष्ट नहीं दिया। वस्तुतः शुजाउद्दीनके शासन कालमें अंग्रेज लोग खूब आनन्दसे ही थे। पर बीच-बीचमें रुपयेका जोगाड़ करना पड़ता और वह थोड़ावेमें नहीं। यह तो चिरकालसे मुगलोंकी रीति थी उनका यह नित्य नैमित्तिक व्यापार था। इतने दिनोंमें अंग्रेजोंको यह सह गया था।

इसी समय अंग्रेजोंने डचोंसे मिलकर आमन अस्टेण्ड कम्पनीको बंगालसे बिलकुल हटा देनेका विचार किया। बिलकुल उच्छेद नहीं कर सकनेपर भी आमन कम्पनीको उन दोनोंने मिलकर बहुत दूरतक शक्तिहीन कर दिया था।

३० सितम्बर सन् १७३७ ई० को कलकत्तेके ऊपरसे एक प्रचण्ड आँधी बह गई। बातोंका बाँध-बैंध नहीं इस युगमें आँधी आई थी। आँधीके साथ मूसलाधार वृष्टि और वज्रपात हुआ था। गंगाके जलने करीब चालीस फीट ऊँचे उठकर समस्त शहरको बहा दिया। सारी रात वह ताण्डव लीला चलती रही।

सबेरे थोड़ा ठण्डा पड़ते देखा गया एक रातमें ही समस्त शहरको मानो कोई दैत्यकी तरह उलट-पुलट गया था। देशी मुहल्लोंके मिट्टीके मकान एक भी साबुत खड़े नहीं रहे। साहबोंके मुहल्लोंके भी दस-बारह पक्के मकान ढह गये थे। जो खड़े थे उनमें किसीका दरवाजा नहीं रह गया था तो किसीकी खिड़की नहीं रह गई थी किसीकी चौथाई तो किसी का आधा गिरकर लटक आया था।

शहरके गेट फिर दीवार सभी चूर्ण-विचूर्ण हो गये थे। गाय बकरी-भेड़, बतख-मुर्गी सभी बह गये। चारों ओर पेड़-पौधे उखड़े पड़े हैं। उन्हींके बीच जगह-जगह जंगलके बाघ हिरन जंगली सूअर जलके मगर मछली घड़ियाल मरे पड़े हैं। चारों ओर अनगिनत मरे हुए काग गिद्ध और नाना प्रकारके रंग-बिरंगे पक्षी पड़े हैं।

एक बहुत ही विचित्र बातका पता चलता है। सच-झूठका नहीं जानता। पर यह केवल जबानी ही नहीं है छापेके अक्षरोंमें भी लिखा हुआ है।

एक जहाजके तलेमें माल भरा हुआ था। सबेरे उस मालको उठानेके लिए उसके भीतर एक आदमीको उतारा गया पर फिर वह आदमी ऊपर नहीं आया। उसके बाद ऐसे दो और आदमियोंको उतारा गया। वे भी ऊपर नहीं आये। तब सब लोगोंने मिलकर मशाल जलाकर तलेके मुखसे भीतरके घेरेमें झांककर देखा कि उसके नीचे एक बहुत बड़ा छ फीट लम्बा घड़ियाल आँख-मुँदे औंधेसे ताक रहा है। किसी मौकेसे बहता हुआ आकर वह तलेमें घुसकर बैठा है। इसके बाद जब उस घड़ियालको मारा गया तब उसके पेटको चीरनेपर देखा गया कि तीन-तीन पूरेके-पूरे आदमियोंको वह निगलकर पेटमें भरे हुए है।

गंगाके ऊपर हरेक प्रकारके जहाज और बजरा छतवाली नौका डोंगी सभी बँधे थे। खोजनेपर उनमें दो-चारको छोड़ और किसीके अस्तित्वका चिह्न नहीं मिला।

इस दैव दुर्घटनाके हाथसे बंगाल होनेमें दो बर्षोंका समय लगा था। पटनाकी खबर पा कम्पनीके डायरेक्टरोंने वैसी प्रजाकी दो वर्षोंकी मालगुजारी माफ कर दी। अत्यन्त गरीब-दुखियोंको सरकारी खजानेसे थोड़ी थोड़ी सहायता देनेकी भी व्यवस्था की गई।

शहरमें जितने गोला गंज थे उनके कब्जेमें आ जानेसे दो दिनों बाद कलकत्तेमें दुर्भिक्ष पड़ा। यही देखकर कलकत्तेकी कौन्सिलने विदेशोंमें चावल भेजना बन्द कर उस चावलको कलकत्तेमें ले आये। शहरमें चावल लानेमें जो चुंगी देनी होती थी वह भी उस समयके लिए मौकूफ कर दी गयी।

थोड़ा-थोड़ा चावल प्रजाके बीच बिना मूल्यके वितरण भी किया गया। कितने स्वार्थी लोग इस तरहकी मुसीबतके समयको देखकर अधिक लाभकी आशामें चावल जमा कर रहे थे। लेकिन जमींदारके चटपट शहरमें चावल ला देने और चावलपरसे चुंगी उठा देनेके कारण उनकी वह आशा शीघ्र ही निराशामें परिणत हो गयी।

इस तरहका भैरव काण्ड शहरमें इसके पहले या बाद कभी हुआ था, न तो सुना ही जाता है और न पढ़नेको ही मिलता है।

सब देखनेपर न बहुत अच्छा और न बहुत खराब साधारण ढंगसे राजत्व कर ११ मार्च सन् १७६९ ई० को बंगालके नवाब सुजाउद्दीन खाँ सुजाउद्दौलाने देहत्याग किया।

: १४ :

अब देशकी स्थितिपर एक बार नजर डाल ली जाय।

सन् १७०७ ई० में बादशाह औरंगजेबकी मृत्युके प्रायः साथ-ही-साथ विशाल मुगल साम्राज्य बिलकुल टूटकर बिखर जाने जैसा हो गया। मृत देहके सड़-गल जानेपर जैसे उसके अंग प्रत्यंग थोड़ा-थोड़ा करके कट-कटके गिरने लगते हैं उसी प्रकारसे बहुत थोड़े समयमें ही एकदम मुगल शासन का बन्धन चारों ओरसे खुल-खुलकर गिरने लगा।

बादशाह औरंगजेबके शासन-कालके अन्तिम पाँच-सात वर्षोंसे ही बुद्धिमान् लोगोंने समझ लिया था कि टूटनेकी क्रिया आरम्भ हो गयी है। बादशाहने स्वयं भी अन्तमें समझा था लेकिन वे कुछ कर नहीं सके। अकबर बादशाहने जिसे गढ़ा था पचास वर्षों तक राज्य कर वे उसे तोड़-फोड़ ही गये।

सब प्रजाके ऊपर सम दृष्टि नहीं रखनेपर एक बड़ा राज्य तो कायम नहीं किया जा सकता। समस्त प्रजा सुखी नहीं होनेपर राजाको सुख नहीं मिलता। राज्यकी प्रजाके एक वृहत् समुदायको काफ़िर कह घृणासे दूर ठेल रखनेसे उस राज्यका कभी कल्याण नहीं हो सकता। वह राज्य आज-न-कल टूटेगा ही टूटेगा। यह सम-दृष्टि औरंगजेबको बिल्कुल ही नहीं थी और हुआ भी ठीक वही।

अन्तमें ऐसा हुआ कि नौ महीने छः महीनेके लिए एक-एक आदमी सम्राट् हुए। कोई उन्हें नहीं मानता कोई उन्हें नहीं पूछता कोई उनकी बात नहीं सुनता। इसके बाद एक दिन सिरका मुकुट गिर पड़ता, धूलमें देह लोट पड़ती। उनमें कोई निहायत बालक होता कोई अपरिपक्व बुद्धिका युवक अथवा अक्षम वृद्ध। किसीको बन्दी बनाकर कैदमें रखा जाता किसीको अन्धा बना दिया जाता और किसीको जहर खिलाकर मार डाला जाता।

चारों ओर अन्याय अत्याचार, अराजकता थी। डकैती, खून-खराबी मार-पीट, लूट-पाट षड्यन्त्र गुप्तहत्या ये सभी नित्यप्रतिकी घटनाएँ थीं। जितने निम्न श्रेणीके लोग अपने-आपको छिपाये हुए थे वे सभी शरीर झाड़कर ऊपर उठ खड़े हो अपने काममें जुट गये।

वाणिज्य-व्यवसाय बिल्कुल मन्दा था करीब समाप्त होने जैसा हो गया था। बादशाही पक्की सड़कपर भयसे कोई माल नहीं ले जाता। बिना घूस दिये एक कदम आगे बढ़ाना मुश्किल था। ठीक समयके मुताबिक कोई सरकारी काम करा लेना एक असम्भव-सी बात थी। साहित्य शिल्प ज्ञान

गाड़ीको चितपुरकी खाईसे पार नहीं कराया जा सका। पेरिन साहबके बागके उत्तरकी पेरिन्स पाएण्टकी छावनीसे बाहर होकर एन्साइन पिकार्डने अच्छी लड़ाई की। नवाबके बहुतसे सैनिक घायल हुए। आसपासके जंगल-में घुसनेपर भी छुटकारा नहीं था। रातके समय अंग्रेज चौकी छोड़कर आते और उनके ऊपर गोली चलाते रहते। मीर जाफ़र यहाँ मालिक थे। व पीछे हटने लगे। हटते-हटते एकदम दमदममें नवाबकी छावनीमें जाकर रुके। फर्स्ट राउण्डमें नवाबकी हार हुई। चितपुरके युद्धमें अंग्रेज लोग जीत गये।

नवाब किस तरहसे मराठा-डिच पारकर कलकत्तामें घुसें यही सोच रहे थे ऐसे समय गुप्तरूपसे, उमीचंदका जमादार जगन्नाथसिंह नवाबकी छावनीमें दीख पड़ा। मालिकके अपमानसे यह आदमी पहलेसे ही क्रोधसे भरा हुआ था। इस समय नवाबके आदमियोंको शहरमें घुसनेके दो रास्ते उसने बतला दिये।

दमदमसे कलकत्तेमें घुसनेके स्थानपर इस समयके प्राय टालाके पास एक छोटा-सा पुल था। उसके ऊपरसे लोग गाय-बैल घोड़ा आदि चरा लानेके लिए आते-जाते। गोलमालमें यह पुल तोड़ नहीं दिया गया था। जगन्नाथ सिंहने पहले यही रास्ता दिखलाया। जगन्नाथ सिंहके दिखलाये हुए रास्तेसे थोड़ी-बहुत फौज लेकर नवाब शहरमें घुसे।

दूसरे दिन सियालदहके पास मराठा-डिचके ऊपर नीचेकी ओर बने हुए पुलसे होकर बाकी सैनिक हाथी घोड़ा ऊँट भारी-भारी तोपोंसे भरी गाड़ी लेकर बहु बाजारके रास्तेपर आ गये। इसके बाद धड़ल्लेसे बड़ा-बाजारमें घुस वहाँ जो कुछ बचा था उसे लूट-पाट कर अन्तमें सारे मुहल्लेमें उन लोगोंने आग लगा दी।

इसी बीचमें नवाबने हाल्सी बगानमें अमीचन्दकी बागान बाड़ी (उद्यान-गृह) में जाकर अड्डा जमाया। वहीं उन्होंने रात बिताई।

दूसरे दिन १८ वीं जून शुक्रवार। मुसलमानी पत्रिकामें शुभ दिन। उसी दिन ही लालदीघीका युद्ध शुरू हो गया। नवाबकी फौजने देखी मुहल्लेको दखल कर लिया है देखकर अंग्रेजोंने समझा कि उत्तर-पूर्व दिशा से ही वह साहब-मुहल्लेपर आक्रमण करेगी। साहब मुहल्लेमें घुसनेके सिरे पर ही लाल बाजार है। इसीलिए अंग्रेजोंने फोर्ट विलियमको केन्द्र कर उसके ही पूरबकी और उत्तर-दक्षिणको घेर तोपोंकी दो चौकियाँ बैठाई थीं। एक लाल बाजारकी मोड़पर मेयर्स-कोर्ट—आजकलका सेण्ट ऐण्ड्रूज चर्च—से लेकर दक्षिण ओरके मार्ग अर्थात् आजकलके गवर्नमेण्ट हाउस तक और दूसरी चौकी ठीक फोर्टके सामने। सेण्ट एण्ड्रूज चर्च जो आजकल के राइटर्स बिल्डिंग्सका पश्चिमी भाग है से लेकर फोर्टकी दक्षिणी सीमा तक जो आजकलका कोयला घाट स्ट्रीट है। फिर और एक मोर्चा सेण्ट एण्ड्रूज चर्चकी पूरब तरफसे एक लाइन बनाकर गंगा पार तक ले जाया गया था। आजकलके पूरे फेयर्ली प्लेसको डलहौजी स्क्वायरके उत्तरी भागके साथ मिला देनेसे जो होता है, वही।

सवेरे ही से पूरबकी ओरसे नवाबकी फौजने लाल बाजारपर धावा बोल दिया। अंग्रेज लोग तोपें लेकर मेयर्स कोर्टके सामने ही खड़े हैं। कैप्टेन डेविड क्लेटन इस मोर्चेके सर्दार थे। उनके पीछे हालवेल साहब थे। लाल बाजारकी लड़ाई खूब जोरसे चली। नवाबके सैनिक लाल बाजार घुसनेके मोड़पर अंग्रेजोंके छोड़ दिये हुए मकानोंपर दखलकर उनके ही भीतर बैठे-बैठे आरामके साथ अंग्रेजोंकी फौजपर गोली चलाने लगे। बड़े-बड़े मकानोंकी ओटमें पड़नेसे अंग्रेजोंकी तोपोंके गोले शत्रुओंकी कोई हानि नहीं कर सके।

अंग्रेजोंकी तोपोंका मोर्चा बिलकुल खुला था। पटापट लोग मरने लगे। इस तरहसे और नहीं चलेगा। देखकर अंग्रेज मेयर्स कोर्टके भीतर घुस गये। सामान्य कई आदमी गोला चलानेके लिए तोपोंकी रक्षा करते हुए बाहर रहे। एक-एक आदमी गोली खाकर गिर पड़ते और एक-एक

आदमी मेगस कोर्टसे निकलकर उनका स्थान लेते। लेकिन और तो अब नहीं चलता। कैप्टन क्लेटन स्वयं चारों ओर घूमकर देखा कि हालत नाजुक है। उन्होंने हालवेलको बुलाकर कहा कि तुम फोर्टमें जाकर गवनर को बतला आओ कि अब और मोर्चेकी रक्षा नहीं हो पायगी।

हालवेल फोर्टमें जाकर बाहर लौटनेपर देखते हैं कि सब समाप्त हो गया। अंग्रेजोंका मोर्चा तितर-बितर हो गया है। तोपोंका मुंह बन्दकर सभी फोर्टमें लौट आनेका उद्योग कर रहे हैं। जल्दबाजीमें तोपोंके मुँह अच्छी तरह बन्द नहीं किये गये। एक छोटी-सी तोप साथ लेकर अंग्रेज लोग मेगस कोर्टका मोर्चा छोड़कर चले आये।

नवाबके आदमियोंने अंग्रेजोंकी तोपोंपर अधिकार कर लिया। अंग्रेजों-की छोड़ी हुई अच्छी-अच्छी तोपोंके जुड़े मुँह खोलकर उन लोगोंने अंग्रेजोंके ही विरुद्ध काममें लगाया। सास्सदीपीके युद्धका प्रथम अध्याय यहीं समाप्त हुआ। लेकिन रातभरमें अंग्रेज हारकर एक दम ढीले पड़ गये।

सन्ध्या होते ही फोर्टमें रोना-धोना शुरू हो गया। स्त्रियोंको और किसी तरह भी सँभाला नहीं जा रहा था। पासमें ही गंगामें नौका बँधी हुई थी। स्त्रियों और छोटे-छोटे बच्चोंको उसीमें चढ़ा दिया गया। प्रधान सेनापति मिन्चिन भी इस मौकेमें एक नावपर चढ़ बैठे। कौन्सिलके दो बड़े-बड़े मेम्बर विलियम फैकलैण्ड और चार्ल्स मेनिंगम स्त्रियोंको जहाजपर चढ़ाने जाकर स्वयं भी साथ ही जिस जहाजपर चढ़े फिर नहीं उतरे। मोड़की रैमपेलमें उस रातमें सभी स्त्रियोंको नौकामें नहीं चढ़ाया जा सका। प्रसिडेन्सीकी स्त्री और अन्य कई स्त्रियाँ फोर्टमें ही रह गये।

इसके बाद रातभर परामर्श होता रहा कि किया क्या जाय? सभी एकमत थे। इस हालतमें कलकत्ता छोड़कर हट जाना ही बुद्धिमानीका काम है। किसीने कहा इसी रातको हट जाया जाय। और किसीने कहा कि कम-से-कम कलका दिन देख लिया जाय। रातमें साढ़े चार बजे तक विचार विमर्श करनेपर भी कोई फैसला नहीं हो सका। होता कैसे? भयके मारे

सभीके पेट जल रहे थे। मानो अँतड़ी तक हजम हो जाने जैसा हो गया। खानेकी चीजें काफी हैं लेकिन भोजन बना देनेवाला एक भी आदमी नहीं है। बैरा बावर्ची सभी भाग गये हैं। ठीक इसी समय जिस कमरेमें मन्त्रणा चल रही थी उसी घरमें एक गोला आकर पड़ा। तर्क-वितर्क खतम होकर चारों ओर गोलमाल शुरू हो गया।

२० जून! किसी तरहसे सबेरा हुआ। मुँह-हाथ धोते-न-धोते ही फोर्ट के ऊपर गोले बरसने लगे। अंग्रेज सैनिक उस समय सामने ही दूसरे मोर्चे पर थे। मोर्चेके मुखपर सेण्ट एंस चर्चमें घुसकर मोर्चेकी रक्षा कर रहे हैं। एवन चुपकेसे गवनरके कानोंमें कह दिया कि गोला-गोली प्राय: समाप्त हो आये हैं। बात धीरे बोलनेपर भी स्पष्ट ही सुन पड़ी। उसे सुन जो स्त्रियाँ बच गई थीं वे दहाड़ मारकर रो पड़ीं। उसे सुन पुरुष भी बहुत अधिक विचलित हो गये। उस समय बाकी स्त्रियोंको भी नावोंपर चढ़ा दिया गया। गंगाके किनारे ऐसा धक्कमधक्का आरम्भ हो गया कि फिरङ्गी स्त्री और शिशु मिलकर प्राय: दो सौ व्यक्ति उसी समय गंगामें डूब मरे।

दोपहर खाने-पीनेमें लग जानेके कारण युद्धका वेग कुछ कम हो गया। गोलमाल कुछ रुकनेपर देखा गया कि स्वयं गवर्नर रोजर ड्रेक मौका पाकर सबको छोड़कर भाग गये हैं। घाटके पास दो-चार आदमी जो पहरा दे रहे थे उनमें-से एकने गवर्नरको भागते देख उनके सिरको लक्ष्यकर गोली मारी थी लेकिन दुर्भाग्यवश वह गोली गवर्नरकी कनपटीको छूती हुई निकल गई।

फोर्टमें बाकी सबने स्पष्ट देखा कि गंगाके ऊपर पंक्ति बाँधकर नावें दक्षिणकी ओर चली हैं।

२५

गवर्नर भागे सेनापति भागे जितने बड़े-बड़े गण्यमान्य काउन्सिलर थे सभी भाग गये। जिसको मौका मिला वे सभी भाग चले। जो बाकी रह गये अर्थात् भाग-जानेके लिए जो असमर्थ रह गये

इन सभीने मिलकर हालवेल साहबको गवर्नर चुनकर उस दिनके लिए युद्ध चलाये रखना स्थिर किया। अगर मौका लगे तो रास्तेमें वे भागेंगे यह बात निश्चित रही।

कम्पनीके कर्मचारियोंमें जान जेफनाया हालवेल उम्रमें सबसे बड़ा होने पर भी कलकत्तेकी काउन्सिलमें उसका पद बहुत छोटा था। उनसे सीनियर एक काउन्सिलर उस समय भी कलकत्तेमें उपस्थित थे। पहले उन्होंने मृदुभावसे कुछ आपत्ति की। लेकिन हालवेल उनके अधीन काम करनेको राजी नहीं हुए।

हालवेल कामके आदमी थे। लेकिन किसीके भी साथ उनकी बनती नहीं थी। कोई उन्हें खास पसन्द नहीं करता था। लेकिन उस समय और सोच-विचारका समय नहीं था। उपयुक्त आदमीका भी उस समय बहुत अभाव था। हालवेल एक साथ ही कलकत्ताके गवर्नर और कमाण्डर-इन-चीफ बन बैठे।

इक्कीस वर्षकी उम्रमें लन्दनके गाइस अस्पतालसे डाक्टरी सीखकर निकलनेपर हालवेल कम्पनीकी पटना और ढाका कोठी दोनोंमें रहकर सन् १७१२ ई०में कलकत्ताके प्रधान सर्जन हो गये। लेकिन डाक्टरीमें क्या देखकर आमदनी ही कितनी होती? महीनेमें पचास रुपये होते कि नहीं इसमें भी सन्देह था। उससे कम्पनीकी सिविल सर्विसमें बहुत अधिक पैसा था। वेतन कम होनेपर भी रुपया कमानेके दूसरे बहुतसे रास्ते थे।

सन् १७५२ ई०में हालवेल कलकत्ताके जमींदार अथवा मजिस्ट्रेट हुए। और उसी समयसे वे उसी एक ही पदपर बहाल रहे। लिखे-पढ़े आदमी होनेपर भी हालवेलकी कल्पनाकी दौड़ अत्यन्त अधिक थी। कुछ लिखने बैठने ही सच-झूठका बोध उनके मनमें बहुत अधिक नहीं रहता।

पर रातभरकी लड़ाई हालवेलने थमने नहीं दी। लोग इतने कम हो गये हैं कि हालवेलने सहज ही समझा कि बाहरवाले मोर्चोंको सँभालनेकी कोशिश बेकार है। उससे व्यर्थ आदमियोंकी नुकसानी होगी। अंग्रेज

खड़े-खड़े ही मरेंगे। इससे फोर्टकी आड़से जहाँ तक बने उतना ही युद्ध चलाना अच्छा है। उसमें जब तक साँस तब तक आस रहेगी।

हालवेलने आदेश दिया बाहर जितने सैनिक हैं उन सबोंको लाकर फोर्टमें घुसाओ। जो कुछ करना होगा यहींसे किया जायगा। किन्तु सभीने समझा कि करनेको विशेष-कुछ भी नहीं है। लड़ाई खतम होनेमें और अधिक देरी नहीं है। अंग्रेज चूहेदानीमें पड़े हुए चूहेके समान फोर्टमें बैठे-बैठे सोचने लगे कि कैसे यहाँसे छुटकारा पाकर भागा जाय।

सब व्यवस्था करते-करते सन्ध्या हो गई। फोर्टके भीतर घुप अन्धकारमें बैठे अंग्रेजोंने देखा किलेके बाहर रोशनी-ही-रोशनी है। आसपासके मकानोंमें नवाबके सैनिकोंने आग लगा दी है—यह उसीकी रोशनी है। अंग्रेजोंकी वह रात कैसे कटी उसका वर्णन करना कठिन है। रात और गम्भीर होनेपर और तिरपन पल्टनके सिपाही अन्धकारमें देह ढंककर खिसक गये। उसका अधिक भाग भाड़ा किये हुए डचोंका था। बाकी सैनिक नशेमें चूर होकर मनको कुछ सान्त्वना देनेकी चेष्टा करने लगे।

फिर सबेरा हुआ। कालका नियम कोई सुख-दुःख नहीं मानता। १९ जून बीता २० जूनका सबेरा आया। फोर्टमें बैठे-बैठे ही दीख पड़ा कि नवाबके सैनिक फोर्टकी ओर बहुत अधिक बढ़ आये हैं। और यह भी दीख पड़ा कि नवाबके पक्षमें फिरंगी और फ्रांसीसी गोलन्दाज गोला छोड़ रहे हैं अवश्य लेकिन वे गोले फोर्टकी दीवारमें आकर नहीं लगते। अंग्रेजोंकी दुर्दशा देखकर उनका निशाना क्या थोड़ा तिरछा हो जाता था?

ज्यों ही नवाबके सैनिकदल आगे आकर क्रमशः फोर्टको तीन ओरसे घेर लिया। वहीं उसीके बीच थोड़ी-बहुत लड़ाई हुई। फोर्ट विलियमके बुर्जके ऊपरसे लगातार गोली चलाकर अंग्रेजोंने बहुतसे शत्रुओंको मारा और बहुतोंको जख्मी किया। उनके भी उन थोड़ेसे सैनिकोंमें पच्चीस मारे गये और सत्तर जख्मी हुए। गोलन्दाजोंमें सिर्फ चौदह ही बचे। इस

प्रकारसे दोपहरके बारह बजे। वह ज्वारका समय था। युद्धका वेग थोड़ा धीमा हो आया।

उसी समय क्लाइव साहबको अचानक याद आ गया कि उमीचन्द तो फोर्टमें ही कैद है। साहबने स्वयं जाकर अत्यन्त अनुनयके साथ उमीचन्दसे अनुरोध किया जिससे वे सिराजुद्दौलाके प्रियपात्र सेनाध्यक्ष राजा मानिकचन्दको एक चिट्ठी लिखकर बतला दें कि अंग्रेज और युद्ध करना नहीं चाहते। जिससे नवाब भी दया कर युद्ध बन्द कर दें। अंग्रेज और युद्ध करना चाहते भी तो कैसे? जो गोली-गोला था वह सब तो बिल्कुल समाप्त हो गया।

उमीचन्द क्या सहज ही राजी होते? वे क्रोधसे गुमसुम बैठे हैं। उसके बाद जब सुना कि उनके परम शत्रु ड्रेक साहब भाग गये हैं तब क्रोध थोड़ा कम होनेपर वे कुछ ठण्डे हुए। हालवेल-साहबके बहुत अनुनय-विनय करनेपर अन्तमें उमीचन्द पत्र लिखनेके लिए राजी हो गये। हालवेलने उमीचन्दकी चिट्ठी मानिकचन्दके पास भेज दी।

इस बार और अधिक बाधा न पाकर नवाबके सैनिक फोर्ट विलियम-की दीवारको फाँदकर किलेके भीतर कूदनेका प्रयत्न करने लगे। दो बजे किसीने आकर हालवेल साहबको खबर दी कि नवाबके दलसे एक विशिष्ट व्यक्ति सेनाकी सामनेके बड़े रास्तेसे इशारा कर अंग्रेजोंको युद्ध करनेके लिए मना कर रहा है।

हालवेलने सोचा कि शायद है उमीचन्दकी चिट्ठीका फल फला है। अंग्रेजोंके शान्तिके उजले झण्डेको उन्होंने उड़ा दिया। हालवेलने-मन-ही मन ठीक कर रखा था कि थोड़ी-सी देर लगाकर सायंकाल कटा देनेपर अन्धकारमें सबको जहाजपर चढ़ाकर प्रस्थान करेंगे। लोग खूब कम ही हैं एक जहाज ही काफी होगा। लेकिन उस समय भी वे नहीं जान सके प्रिन्स जार्ज जहाज जिससे उनके भागनेकी बात थी वह रेतमें टकराकर आक्रमण हो गया है।

सन्ध्या होनेके पहले ही कठिन बात कुछ उदास-सी गई। सब ठंडा देखकर हालवेलने अपने आदमियोंको थोड़ा विश्राम करनेके लिए कहा। लेकिन तीसरे पहर चार बजे चारों ओर एकदम हो-हल्ला मच गया। विश्राम आदि ताकपर धरा रह गया।

सुननेमें आया कि एक डच पल्टन प्राणके भयसे भागकर बचनेके लिए या घूस खाकर अथवा बाहरके किसीके साथ षड्यन्त्र करके फोर्टके भीतरकी ओर गंगामें जानेका फाटकको तोड़कर भाग गई है। और उसी टूटे हुए फाटकसे चींटियोंकी तरह सैनिक किलेके भीतर घुस रहे हैं।

हालवेल और उनके कई साथियोंने स्थिर किया कि अन्त तक भी नहीं छोड़ेंगे लड़ाई करके ही मरेंगे। संगीन पिस्तौल तलवार सँभाल ली। उस समय भी छूटकर भागनेका मौका था। लेकिन साथियोंको छोड़कर वे भागनेको राजी नहीं हुए।

उसी समय नवाबके एक सेनाध्यक्षने आकर आश्वासन दिया कि अस्त्र त्याग करनेपर उनके ऊपर किसी तरहका भी अत्याचार नहीं होगा। अंग्रेजी कायदेके अनुसार हालवेलने अपना हथियार खोलकर अपने पैरोंके पास रख दिया। देखा-देखी दूसरोंने भी अस्त्र-शस्त्र डाल डाले। लड़ाई बन्द हो गई।

इसी समय दीख पड़ा कि एक डोलीपर चढ़कर बंगालके नवाब स्वयं सिराजुद्दौला किलेकी ओर बढ़े आ रहे हैं। उन्हींकी बगलमें और एक डोलीपर उनके छोटे भाई मिर्जा मेहदी हैं। खबर पाकर हालवेल साहब जल्दी जल्दी आगे आकर फोर्टकी दीवारपर चढ़कर देशी प्रथाके अनुसार नवाबको सलाम किया। नवाबने हाथ उठाकर प्रति नमस्कार किया।

इसके बाद किलेके भीतर घुसकर चारों ओर थोड़ा घूमघामकर नवाबने हालवेलसे कहा तुम लोगोंका पासा इस बार बिलकुल उलटा पड़ा है। जिद करके इतने सुन्दर शहरको नष्ट करनेके लिए मुझे बाध्य किया इससे मुझे सचमुच ही बड़ा दुःख हो रहा है।

मनीचन्द और हालवेल कलकत्तेमें प्रधान व्यक्ति रहकर अन्तमें अनिष्ट कारक या हो गये। आखिर इन दोनोंने ही मिलकर ऐसा षड्यन्त्र किया। इसके पहले ही नवाबके साथ राजवल्लभका विवाद छिड़ गया था। उन्होंने कृष्णदासको छोड़ दिया।

और भी बहुतोंने छुटकारा लिया। अंग्रेजोंमें बहुतेरे ईस्ट-इंडिया किला पार हो बाहर निकल भागे। उनमें कोई बड़ा गवर्नर साहब आदि की ओर, कुछ साहबके महानदी जहाज अगर जहाँ मिल जाय। और फिर कोई पूछता चन्दननगरको ओर फ्रांसीसियों और डचोंके इलाकेमें आश्रय लेनेके लिए गया। हालवेल और उनके साथ पूरे साठ अंग्रेज फोर्टमें ही रह गये। कहता है ये नवाबके आदमियों द्वारा नजरबन्द कर लिये गये थे, इसीलिए भाग नहीं सके। लेकिन कलकत्ता अब और अंग्रेजोंका नहीं रहा। यह नगर सिराजुद्दौलाके हाथमें आ गया।

हाल्वेल साहब हार जानेपर भी कलकत्ताके अफसर सिराजुद्दौलाको अँगूठा दिखाकर बाहर हो गये। बहुत बढ़ा-चढ़ाकर, बहुत नमक-मिर्च लगा कर उन्होंने गरम-गरम भाषामें इस कालकोठरीकी हत्याकी एक विचित्र कहानी गढ़कर प्रचार किया। वह कहानी डिटेक्टिव कहानीसे भी अधिक रोमहर्षक है। इतने दिनों बाद भी उसे पढ़ते-पढ़ते शरीर काँप उठता है। सिराजुद्दौलाकी कहानी बहुतोंको अच्छी तरहसे जानी हुई नहीं है, लेकिन कालकोठरीकी कहानी सबको सुनी-सुनाई है। चाहे वह बूढ़ा हो या बच्चा।

अंग्रेजोंकी धारणा है कि १४६ आदमियोंको कालकोठरीमें बन्द किया गया था। और उनमें १२१ आदमियोंकी मृत्यु हुई थी। किन्तु वैसी एक छोटी कोठरीमें १४६ मुस्टंडे यूरोपीयनोंको एक साथ भरना जो असंभव-सी बात है। इसके अलावा उस समय इतने यूरोपीयन एक साथ पाये ही कहाँ से गये?

प्रारंभसे ही तो कलकत्तेमें यूरोपीयनोंकी संख्या खूब कम थी। इसपर चितपुरके युद्धमें लालबीबीके प्रथम युद्धमें फोर्टके पास लालदीघीके द्वितीय युद्धमें कुछ कम लोग तो मारे नहीं गये थे। और फिर उससे भी अधिक लोग भाग गये थे। फोर्टका युद्ध खतम होनेपर भी बहुतसे यूरोपीयन छुट कारा पाकर इधर-उधर निकल गये थे। कुल मिलाकर साठसे अधिक लोग किसी भी तरह फोर्टमें नहीं हो सकते। असली बात यह है कि बादमें जिनका भी कोई पता नहीं चलता उसे ही काल-कोठरीमें डालकर हत्या कराई गई है। ऐसा करनेपर गणितके नियमके अनुसार अंक तो बढ़ ही जायगा।

पता चलता है कि मिसेस कैरी नामक एक स्त्री अपने पतिको छोड़कर नहीं गई उन्हें पतिके साथ ही काल-कोठरीमें जाना पड़ा था। भाग्यवश सबेरे वे जिन्दा बाहर निकलीं थीं और बादमें भी वह बीस वर्ष रहीं थीं नहीं तो लोग अभी भी हाल्वेल साहबकी कहानीपर विश्वास करते कि वे नवाब सिराजुद्दौलाके अन्तःपुरमें नवाबके भोगके लिए रहीं।

केवल कहानी गढ़कर ही हालवेल नहीं रुके। कालकोठरीकी हत्याकी कहानीको चिरस्मरणीय बनानेके लिए उन्होंने अपनी जेबसे पैसा खर्चकर एक स्मृति-स्तम्भ बनवा दिया था। इसीका अंग्रेजी नाम ब्लैक होल मानुमेण्ट है। सन् १७६० ई० में नवाबके बाद कलकत्ताका गवर्नर हालवेलने राइटर्स बिल्डिंग्सके बिल्कुल पश्चिमकी ओर इस मानुमेण्टको बनवा दिया था।

यह आँखोंमें बहुत खटकनेवाला था। इसलिए जब मार्क्विस आफ हेस्टिंग्स् सन् १८२१ में बंगालके गवर्नर जेनरल होकर आये तब उन्होंने उसे हटवा दिया था फिर १९०२ ई० में लार्ड कर्जन जब भारतके बड़े लाट थे तब उन्होंने बहुतसे कागज पत्रसे उलट-पुलटकर हालवेलके मानुमेण्टका पता लगाकर ठीक उसी प्रकारका एक मानुमेण्ट पूरा मार्बल पत्थर का बनवाकर, डलहौसी स्ट्रीट और डलहौसी स्क्वायरकी मोड़पर उसके पुराने स्थानपर ही स्थापित करा दिया। सन् १९३९ ई० में सुभाष बोसकी चेष्टासे उसे उस स्थानसे हटाकर सेण्ट जोन्सके कब्रिस्तानमें रखा गया है। लगता है कि अब फिर कोई उसे खोज ढूंढकर कहीं स्थापित करनेकी चेष्टा नहीं करेगा।

दूसरे दिन २१ जूनको। भोरके समय हालवेलको ब्लैकहोलसे सीधे नवाबके सामने हाजिर किया गया। नवाब उस समय फोर्टके पास ही एक साहबके मकानमें थे उमीचन्दकी बागान बाड़ी (उद्यान-गृह) में फिर लौट कर नहीं गये।

हालवेलने प्रारम्भमें ही पिछली रात्रिकी घटना नवाबके कानमें डाली। लेकिन सिराजुद्दौलाने उसपर कान नहीं दिया। वे भी क्या जान गये थे कि हालवेल तिलका ताड़ बना रहे हैं।

बहुतसे अंग्रेज लेखक क्षोभ प्रकट करते हुए लिख गये हैं कि काल-कोठरीकी हत्याकी बात हालवेलके मुँहसे सुननेपर भी नवाबने उसके प्रति कारकी कोई व्यवस्था नहीं की। जो हो यह सभीको स्वीकार करना

पड़ेगा कि इस विषयमें सिराजुद्दौलाका कोई हाथ नहीं था। जब घटना घटी तब वे बड़े आरामसे नाक बजाकर सो रहे थे। उन्हें जगानेका साहस कौन करता? अथवा कौन उनका हुक्म लेता?

बहुत खोजने-ढूंढनेपर कलकत्तेसे सिराजुद्दौलाको केवल पचास हजार रुपये मिले। अंग्रेजोंने निश्चय ही रुपया-पैसा कहीं गुप्त स्थानमें छिपा रखा है ऐसा सोचकर वे हालवेलको बहुत अधिक सताने लगे। लेकिन गुप्त धनका कुछ भी पता नहीं चला। था ही नहीं तो मिलता कहांसे? कीमती माल जो कलकत्तेमें था वह सब चार महीने पहले ही जहाजपर लादकर विलायत चालान हो गया था। और जिन मालोंके कलकत्ता आनेकी बात थी वे तब तक भी मुफस्सिलसे कलकत्ते नहीं पहुंचे थे। कम्पनीकी तहवीलमें रुपये भी नाममात्रको थे। नवाब क्रोधके मारे फुंफकार करने लगा। उनकी इतनी बड़ी युद्ध यात्राकी मजदूरी तक भी नहीं निकली। क्या यह क्रोधकी बात नहीं थी?

क्रोधके मारे नवाबने कलकत्तका उस आदिकालके नामको भी उड़ा दिया। उसके स्थानपर शहरका नाम अलीनगर रखा। बहुतसे मकान आदि जलाकर भस्म कर दिया। सबसे अधिक क्रोध प्रेसिडेण्टके मकानपर था। उसे ड्रेकका अपना मकान समझकर उसको बिलकुल पूर्ण-विधूम खतम कर दिया। किलेके भीतर ही एक मस्जिद बनानेका हुक्म हो गया।

पीछेसे जो अंग्रेज उस समय भी फोर्टमें थे उन्हें उसी समय कलकत्ता छोड़कर चले जानेके लिए कहा गया। नवाबने दण्ड देनेका भय दिखाया कि जल्दी भाग नहीं जानेपर उनके हाथ-पैर नाक-कान काट लिये जायेंगे। केवल हालवेल और उनके दो साथियोंको मुक्ति नहीं मिली। सेनापति मीर मदनको हुक्म मिला कि वे जिसमें हालवेल आदिको बन्दी बनाकर मुर्शिदाबाद भेज दें। बन्दी अवस्थामें रहते-रहते वे शायद गुप्त धनका संधान बतला दें।

फुली बाजारमें हुरमैन साहबके बागसे लगे हुए ही गंगामें ड्रेकका दल उस समय भी बोटमें रहकर प्रतीक्षा कर रहा था। जहाजमें बैठे हुए ही

उन्होंने खबर पाई कि कलकत्ता अब और अंग्रेजोंका नहीं रहा। फोर्ट विलियम नवाबके कब्जेमें है। लंगर उठाया गया। अंग्रेज उस अंचलको छोड़कर चले।

सिराजुद्दौलाने राजा मानिकचन्दको कलकत्तेका गवर्नर बना दिया। मानिकचन्द भी बंगाली कायस्थ थे। कोन्नगरके एक घोष वंशमें उनका जन्म हुआ था। प्रारम्भमें वर्धमान राजके मुमाश्ता होकर काम करना शुरू किया था। बेहालामें सामन्त हारकर रोडपर राजाकी ही एक बहुत बड़े बागानबाड़ी (उद्यान-गृह) में बैठकर इस ओर की राजाकी जमींदारी की उसकी ही मैनेजरी करते। बादमें अलीवर्दीखांकी अमलदारीमें उनके सिरिश्तामें सरकारी काममें लगे। पहले सिराजुद्दौलाके साथ मानिकचन्दका विशेष प्रेम नहीं था। लेकिन अन्तमें मानिकचन्दने मधुराईसे नवाबको हाथ में किया था। बहुतसे बड़े-बड़े अमीर-उमरावोंको लेकर कलकत्तेकी नजरी पर थी। उनके माम्मने साथ नहीं दिया और मानिकचन्दके उसे पा जानेसे उनमें कोई भी विशेष सन्तुष्ट नहीं हुआ।

२४ जून सन् १७५६ ई०। अपन दलबलको लेकर सिराजुद्दौलाने कलकत्ता छोड़ा। कासिमबाजारके वाट्स और कलेट साहबका साथमें ले लिया।

राजधानी लौटनेके रास्तेमें ही चन्दननगर पहुंचना पड़ता है। इससे फ्रांसीसियों और डचोंपर एक साथ विपत्ति आई। भय दिखाकर नवाबने उनसे लगभग आठ लाख रुपये वसूल कर लिये। बन्धु-बान्धवोंको बुलाकर हँसते-हँसते बोले मेरे जैसा बहादुर कौन है? मैंने अंग्रेजोंके विरुद्ध युद्ध किया और लड़ाईका खर्च फ्रांसीसियों और डचोंकी गर्दन मरोड़ कर वसूल किया।

पता नहीं क्या समझकर नवाबने वाट्स और कलेटको नहीं छोड़ दिया। लगता है, उन्होंने सोचा कि अंग्रेज तो अभी ढोंढ़ा सांप जैसे हैं। उनमें अब सिर्फ फुंफकार रह गई है। फिर भी चन्दननगरके गवर्नरको विशेष

करने लगे कि शीघ्र ही फिरंगी वाट्सन और क्लाइवको खतम कर दिया जाय।

कलकत्ता जीतकर खूब समारोहके साथ नवाब सिराजुद्दौलाने ११ जुलाईको राजधानी मुर्शिदाबादमें प्रवेश किया। दिल्लीके बादशाह आलमगीर द्वितीयको कलकत्तेकी विजयकी खबर देते हुए लिखा कि तैमूरलंग के बाद हिन्दुस्तानमें विजयका इतना बड़ा गौरव कभी भी किसीके भाग्यमें नहीं हुआ। दरबारके सभासदोंको बुलाकर बोले कि टोपीवालोंको मसलनेमें अस्त्र-शस्त्रकी जरूरत नहीं है। केवल मेरे इस पट्टे-जूतेके होनेसे ही काम चल जायगा तो भी करम अली लिखते हैं कि इस युद्ध-यात्रामें नवाबको केवल बदनामी ही हासिल हुई।

खुश होकर सिराजुद्दौलाने प्रसन्न ही अनुकूल रास-रंगमें अपनेको बहा लिया। इस उद्दाम उन्मत्त उच्छ्वासमें क्या उन्होंने एक बार भी सोच कर देखा कि इसके ठीक एक वर्षके अन्दर ही उनकी हड्डियोंको श्मशान सुलानेके लिए समाप्त हो जानदी?

: २७

कलकत्तेसे चालीस मील दूर गंगाके किनारे ही एक छोटा-सा गाँव है। फल्तो बदहवास भागते गये अंग्रेजोंने वहीं जाकर आश्रय लिया।

किसी समय यहाँपर डचोंका एक छोटा-मोटा अड्डा था। कई टूटे फूटे मकान और एक मिट्टीके किलेका आधा हिस्सा उस समय भी वहाँ किसी प्रकारसे टिके हुए था। बंगाल प्रान्तमें जहाँ जितने अंग्रेज थे सभी एक-एक कर वहाँ आ जुटने लगे। बंगालमें तो अंग्रेजोंका व्यापार एकदम बन्द हो गया।

क्रमशः वाट्सन और क्लाइव आये। ढाका कोठीके सभी आ पहुँचे। कासिमबाजार कोठीवाले भी वहीं चले आये। अन्तमें हालवेल भी मुक्ति पाकर

मुर्शिदाबादसे सीधे वहाँ आ गए। वारन हेस्टिंग्स पुपकेसे कासिमबाजारसे फल्ता भाग आये।

कलकत्तामें नवाब ड्रेकने अपनी काउन्सिल खोल दी। काम कुछ भी नहीं था। ड्रेक साहबके कलकत्ता छोड़कर भाग आनेकी बाबत लिए एक अच्छी-सी कैफियत तैयार करनेके प्रयत्नको देखकर बहुतसे लोग चिढ़ उठे। उसीको लेकर नित्य ही काउन्सिलमें बकवाद होने लगी।

ड्रेक किसी भी तरह काबूमें नहीं आते। उस समय असली फोर्ट विलियमके गवर्नर तो राजा मानिकचन्द थे। लेकिन उससे क्या? फोर्ट विलियम नामका अंग्रेजोंका एक जहाज था। उसीपर चढ़कर ड्रेक साहबने एक इश्तहार निकाला फोर्ट विलियम जहाज ही अब तकके लिए अंग्रेज गवनरका गवर्नमेंट हाउस है।

इधर फल्तामें मच्छर-मक्खियोंकी तरह लोग मरने लगे। फल्ताकी जलवायु अत्यन्त ही खराब थी। चारों ओर घोर जंगल था। खान-पीने की कोई भी चीज नहीं मिलती। नवाब उस समय भी कलकत्ते ही में मौजूद थे। इसी भयसे कोई अंग्रेजोंके लिए खाना नहीं जुटाता और अपनी चीजें भी नहीं बेचते। किसी प्रकार भिक्षा माँगकर डचोंके पाससे कुछ खानेकी चीजें संग्रह की गई।

और भी एक विपत्ति थी। कलकत्तेसे भागनके समय अंग्रेज केवल पहने हुए वस्त्रके साथ ही जहाजमें चढ़कर रवाना हो गये थे। इसलिए मैला कुर्तेका कपड़ा पहनकर ही निपट-दिन काटने पड़ रहे थे। उसी अवस्थामें ही जहाजपर भी सभीको एक जगह धक्कम-धुक्की कर रहना पड़ा। स्त्रियों की सामान्य लज्जाका भी निवारण नहीं हो सका।

जीते हुए भी मृतक ऐसी अवस्थामें केवल आशा-आशामें ही अंग्रेज लोग वहीं रह गये। मद्राससे सेना आनेकी बात थी। उनके ही सहायतासे अगर फिर कलकत्तेका उद्धार किया जा सके।

कुछ दिनोंके बाद सामान्य कुछ सैनिक साथमें लेकर मेजर जेम्स किल-पैट्रिक मद्रासले आये अवश्य। लेकिन फलताकी आबहवामें बीमार होकर उनकी फौजके अधिकांश लोग ही दो दिनोंमें अधमरे हो गये। इसलिए फिर मद्रासले आदमियोंके न आ जाने तक फलतामें बैठकर ही अंग्रेज लोग दिन गिनने लगे। काम-काज कुछ भी नहीं रहनेसे झगड़ा विवाद और बढ़ गया।

थोड़ा-थोड़ा करके फलतामें अंग्रेज जमा हो रहे हैं यह जानकर भी सिराजुद्दौलाने कुछ नहीं कहा। पहलेसे ही यूरोपियनोंके प्रति उनमें अत्यन्त अवज्ञाका भाव था। और अभी कलकत्ता के लेनेके बाद वह बढ़कर चौगुना हो गया था। अल्पबुद्धि नवाबकी धारणा थी कि सारा यूरोप मिलाकर केवल दस हजार लोग हैं। वे सभी मिलकर एक ही साथ बंगालमें आवें, तो भी नवाब सिराजुद्दौला जब हुक्म होगी तभी उन्हें पीटकर समुद्र पार करा दे सकते हैं। इतनी घबड़ानेकी क्या बात है? अंग्रेजोंपर और किसी प्रकारका अत्याचार नवाबने नहीं किया।

फलतामें बैठे-बैठे ही अंग्रेजोंने सुना कि सिराजुद्दौलाके मौसेरे भाई पूर्णियाके नवाब शौकतजंग बंगालका नवाब होनेके लिए जोर-शोरसे लग गए हैं। सुनकर अंग्रेज खूब खुश हुए। केवल अंग्रेज ही क्यों? सिराजुद्दौला-के दरबारके बहुत लोग मन-ही-मन इससे बहुत ही सन्तुष्ट हुए। क्योंकि कलकत्तासे लौट आनेके बाद नवाबके चित्तकी अद्भुत अस्थिरताकी मात्रा जैसे अब और अधिक बढ़ गई है। एक दिन दरबारमें बैठे क्रुद्ध होकर उन्होंने सबके सामने ही जगत सेठ जैसे नामी-गिरामी आदमीके गालपर एक थप्पड़ जमा दी थी। गरीब प्रजाकी तो कोई बात ही नहीं थी। उनके लिए तो निश्चिन्त हो रुपी दामी लेकर घरमें रहना भी मुश्किल था।

लेकिन लगता है उनमेंसे कोई यह नहीं जानता था कि दुर्बुद्धि आलम लगाया और मनोबाजीमें शौकतजंग सिराजुद्दौलाका ही मौसेरा भाई था। यह कहता है मुझे देख, वह कहता है मुझे देख। दोनोंमें कोई भी टसका नहीं

जा सकता। इसी बीच शौकत जंग एक करोड़ घूस देनेकी बात मानकर दिल्लीके बादशाह वजीर गाजीउद्दीनके पाससे बंगाल बिहार उड़ीसाकी नवाबीका एक हुक्मनामा ले आकर गर्वसे अन्धे हो गये। बादशाही परवाना नहीं फर्मान नहीं मुहर नहीं केवल वजीरका हुक्मनामा है। इसीपर इतनी उछल-कूद है। ढीठ होकर वे सिराजुद्दौलाको पत्र लिख बैठे तुम शीघ्र ही बंगालकी गद्दी छोड़कर मुर्शिदाबादसे अलग हट जाओ। तुम मेरे अपने हो। तुम्हारे प्राण लेनेकी इच्छा नहीं। यदि तुम सम्मानपूर्वक ढाका जाकर वहीं भले आदमीकी तरह रहने लगो तो मैं तुम्हारे लिए कुछ मासिक वृत्तिका बन्दोबस्त कर दूँगा।

ऐसे समय मीर जाफरके पाससे गुप्त रूपसे एक चिट्ठी आई। शौकत जंगको उसी समय बंगालपर आक्रमण करनेका परामर्श उन्होंने दिया है। लिखा है विशिष्ट अमीर-उमराओं सभीका इसमें समर्थन है। इस चिट्ठीको पाकर शौकतजंगके अहंकारका जोर जैसे और बढ़ गया।

इस बार सिराजुद्दौला भी रणमें उतरे। उन्होंने बिहारके डिप्टी-गवर्नर को चिट्ठी लिख दी कि तैयार हो जाओ। दूसरे-दूसरे जमींदारोंको भी सेना संग्रह कर रखनेकी खबर भेज दी। सिराजुद्दौलाका दल क्रमशः भारी हो उठा। शौकतजंगसे ज्यादा।

सन् १७५६ ई० के १६ अक्टूबरको मनिहारीके पास दोनों पक्षोंमें खूब जोरकी लड़ाई हुई।

शुरूसे ही अपनी मूर्खतासे शौकतजंगने सब मिट्टी कर दिया। लड़ाईके दौरानमें ही खूब भंग खाकर हाथीपर सवार हो युद्ध करने चले। घोर नशेमें दूरसे किसको देखते किसको देख समझ लिया कि लगता है सिराजुद्दौला ही उनकी ओर बढ़ते आ रहे हैं। वैसे ही शौकतजंग अत्यन्त क्रुद्ध होकर अपनी जगह छोड़ सिराजुद्दौलाको मारनेके लिए गरजते हुए बढ़े। ऐसे समय एक गोला आकर उनके सिरपर लगा और वे युद्धक्षेत्रमें ही ठंडे हो गये। हीरा-जवाहर-खचित सिरकी पगड़ी जमीनपर धूलमें लोट

गई। बंगालकी नवाबी करनेकी मीरजाफरकी आशा इसी तरह इसी समझपर खतम हुई।

कलकत्तामें अंग्रेजोंको खबर मिली पूर्णियाके नवाब युद्धमें मारे गए। सुनते ही तो उनकी खुशी खतम हो गया। फिर नवाब शौकतका तमगा भेजा गया।

२८

जिस दिन नवाब सिराजुद्दौलाने कलकत्तापर अधिकार किया था उसके दो महीने बाद ही कर्नल राबर्ट क्लाइव बम्बईसे मद्रास आकर उतरे।

इसके कुछ दिनों पहले एडमिरल वाट्सनके साथ मिलकर बम्बईके दक्षिण तीन ओर समुद्रसे घिरे हुए पहाड़के ऊपर बने हुए मराठा जल-दस्युओंके सर्दार तुलाजी आंग्रियाके विजयदुर्गको उन्होंने जीत लिया था। इस समय वे कर्नल क्लाइव हो गये थे। व मद्रासके डिप्टी गवर्नर थे।

क्लाइव बाप-मांके द्वारा तिरस्कृत पुत्र थे। उनके ऊधम और उत्पातसे तंग आकर उनके बापने किसी तरहसे ईस्ट इण्डिया कम्पनीके एक साधारण मुंशीका काम उनके लिए जुटाकर तथा उन्हें भारतवर्षकी ओर रवानाकर निश्चिन्तताकी सांस ली। उस समय क्लाइवकी उम्र केवल सत्रह वर्षकी थी।

क्लाइव कम्पनीके मुंशी होकर मद्रासकी अंग्रेजी कोठीके दफ्तरमें बैठे-बैठे माल वजन करते कपड़ा पसन्दकर अलग करते और उन सबका हिसाब-किताब रखते। यह काम बिल्कुल ही उनके मनके अनुकूल नहीं था।

एक जगह बैठे-बैठे काम करना क्लाइवकी प्रकृतिके विरुद्ध था। एक दिन मनके दुःखसे वे आत्महत्या कर रहे थे। लेकिन अपने माथेपर लगातार दो-दो बार पिस्तौल छोड़नेपर भी गोली नहीं चली। क्लाइव विरत हुए

उन्होंने सोचा कि स्वयं ही कोई बड़ा काम करानेके लिए विधाताने उन्हें बनाया है।

शीघ्र ही वह कामका एक सुअवसर उपस्थित हुआ। मनुष्यके जीवनमें कब किस प्रकारसे बड़ा काम करनेके लिए आह्वान आता है, उसका पता न्याय-शास्त्रके किसी भी प्रकरणमें नहीं मिलता।

फ्रान्सके साथ इंग्लैण्डकी सदा ही शत्रुता है। इस शत्रुताके कारण शताब्दियोंके बाद शताब्दी वाटरलूके युद्धतक दोनोंके बीच कितना लड़ाई कितनी मारकाट और कितना वाद-विवाद हो चुका है।

फ्रान्सने जब देखा कि पूर्वके देशोंमें वाणिज्य-व्यापार जमाकर इंगलैण्ड खूब मजेमें फूल उठा है तब खींचा-तानी और बढ़ गई। अंग्रेजोंकी देखा देखी फ्रान्सीसियोंने भी ईस्ट इण्डिया कम्पनीके समान एक व्यापारी कम्पनी खोल डाली। दक्षिण भारतके पाण्डिचेरीमें उनका प्रधान अड्डा हुआ।

क्लाइव जब कम्पनीके मुंशी थे उस समय फ्रान्सोया डुप्लेक्स नामके एक फ्रान्सीसी साहब पाण्डिचेरीके गवर्नर थे। उनके पहले वे चन्दननगरमें भी गवर्नर रह चुके थे। डुप्लेक्स साहब अद्भुत प्रकृतिके आदमी थे। भारतवर्षमें आकर ही वाणिज्य-व्यवसायकी बात एकदम भूलकर वे इस देशमें एक बड़ा फ्रान्सीसी राज्य जमानेका स्वप्न देखने लगे। नवाब-बादशाहोंके समान ही उनकी चाल-ढाल हाव-भाव, वेश भूषा थी। पाण्डिचेरीके गवर्नमेण्ट हाउसमें नवाबी ढंगका एक दरबार उन्होंने शुरू कर दिया।

कुछ दिन बीतते-न-बीतते डुप्लेक्स खुल्लम-खुल्ला इस देशकी पालिटिक्समें उतर पड़े। उन्होंने देखा इस देशके नवाब-बादशाह राजा-रजवाड़े क्रमशः एकदम गये-गुजरे होते जा रहे हैं। उनसे उनका राज्य छीन लेनेमें अधिक कष्ट नहीं उठाना पड़ेगा और समय भी अधिक नहीं लगेगा। लेकिन इस पथके काँटे अंग्रेज हैं।

इसलिए सहज ही दक्षिणभारतमें अंग्रेजोंके साथ फ्रान्सीसियोंका संघर्ष आरम्भ हो गया। इस संघर्षके फलस्वरूप बहुत-से छोकरे-केरानियोंको

बाध्य होकर कलम छोड़ हथियार पकड़ना पड़ा। क्लाइव तो जी उठे। युद्धकी जगह उनके मनमें उस समय उत्साहका अत्यधिक स्फुरण दीख पड़ा।

एकके-बाद-एक अनेक युद्धोंमें फ्रान्सीसियोंके विरुद्ध विजय पाकर क्लाइवने खूब नाम कमाया। उनका सितारा उस समय ऊँचेपर था। जैसे वे भाग्यलक्ष्मीके वरद पुत्र हों।

मद्रास लौटकर आते ही क्लाइवको मालूम हुआ कि कलकत्ता अब अंग्रेजोंके हाथमें नहीं है। गवर्नर ड्रेकके भागनेकी कहानी सुनी। काल-कोठरीकी उस विचित्र कहानीसे लोग अवाक् रह गये। हालवेल साहबकी मनको उत्तेजित कर देनेवाली भाषामें लिखी हुई वह लोमहर्षक कहानी थी। चारों ओर तैयार हो तैयार हो की आवाज गूँज उठी।

सौभाग्यवश एडमिरल वाट्सन उस समय भी अपनी नौवाहिनी लेकर मद्रास बन्दरगाहमें उपस्थित थे। चार्ल्स वाट्सन लेकिन राबर्ट क्लाइव और उनके सैन्य दलको थोड़ी अवज्ञाकी दृष्टिसे ही देखते। भले ही क्लाइव कर्नल हों तो भी कम्पनीके ही तो नौकर हैं? और चार्ल्स वाट्सन स्वयं इंगलैण्डके राजासे कमीशन पाये हुए एडमिरल थे।

और किसी समय मान-अभिमान करनेपर भी संकटके समय अंग्रेज एक साथ मिलकर काम करना जानते हैं। यह विद्या फ्रान्सीसियोंको बिल्कुल जानी हुई नहीं थी।

पाँच-सौ-पचास गोरे नौ सौ चालीस तैलंग सिपाही और चौदह तोपें लेकर पाँच-पाँच युद्ध पोत तैयार हुए। इसके अलावा वाट्सन अपने सैन्य सामान खाद्य-सम्भार अलगसे साज-सरंजाम लेकर और पाँच युद्धपोतोंपर चढ़े। उन लोगोंके साथ मद्रास अवस्थितकी कम्पनीके पाँच माल ढोनेवाले जहाज दिये जिन्हें इण्डियामैन कहा जाता था।

सन् १७५६ ई० के १६ अक्तूबरको क्लाइव और वाट्सन कलकत्ताका पुनरुद्धार करनेके लिए जहाजपर चढ़कर चले। मन-ही-मन वे सब समय सोचते-फिरते थे कि अंग्रेजोंकी प्रतिष्ठाकी स्थापना होगी। क्या करनेसे फिर

कम्पनीका व्यापार बंगालमें बिना किसी झगड़ा-झंझटके चालू किया जा सकेगा।

१५ दिसम्बर सन् १७५६ ई०। क्लाइव और वाट्सन बंगाल होकर कलकत्ते आ पहुँचे। उन लोगोंको देखकर कई भूखे रोगग्रस्त निराश मुमूर्षु प्राणियोंके मनमें जो अपूर्व आनन्दका संचार हुआ उसे वाणीके द्वारा प्रकाश करना असम्भव है। परस्परके कलहको तबतकके लिए बन्द रख कलकत्तेके उद्धारके लिए विचार-विमर्शमें सभी लग गये।

मालूम हुआ कि कम्पनीके डायरेक्टरोंने खबर भेजी है कि और कौंसिलका काम नहीं है। अबसे एक छोटी सेलेक्ट कमिटीके ऊपर सब कामका भार दिया गया। वे सभी मिलकर जो अच्छा समझें ठीक उसी तरहसे काम करेंगे। तब तकके लिए उस कमिटीके प्रेसिडेन्ट रोजर ड्रेक ही रहेंगे। ड्रेकके चाचा कम्पनीके एक बड़े डायरेक्टर थे। उनके भतीजेकी नौकरी इसीलिए उसी समय नहीं गयी। वाट्सन और क्लाइव दोनों ही सेलेक्ट कमिटीमें रहे।

फल्तामें बैठे ही क्लाइवने पहले कलकत्तेके गवर्नरके पास चिट्ठी लिख कर बतला दिया कि कौन-सा संकल्प लेकर वे इतनी दूर आये हुए हैं। स्वयं नवाबको वे जो बतलाना चाहते थे उसका भी एक मसविदा तैयार कर मानिकचन्दके पास भेज दिया। इस मसविदेमें बहुत काट-छाँटकर क्लाइवके पास वापिसकर मानिकचन्दने लिखा कि चिट्ठी नवाबके पास भेजने लायक उपयुक्त भाषामें बिलकुल ही नहीं लिखी गयी है। इसीलिए उन्होंने उसको थोड़ा संयत कर दिया है।

क्लाइवने कहला भेजा कि नवाबका पैर पकड़नेके लिए मद्राससे उतनी दूरका रास्ता तै कर वे बंगालमें नहीं आये हैं। इसलिए उनका पत्र नरम न होकर थोड़ा गरम तो होगा ही। फिर मानिकचन्दके द्वारा चिट्ठी न भेज उन्होंने एकदम सीधे नवाबके पास भेजनेका बन्दोबस्त किया।

एडमिरल वाट्सनने भी उसके साथ उसी तरहकी नवाबको लिखी हुई अपनी एक चिट्ठी शामिल कर दी।

यह सब देख-सुनकर मानिकचन्द भी और चुप नहीं रह सके। अंग्रेजोंसे वे बहुत प्रसन्न नहीं थे लेकिन ऊपर जो नवाब थे। चुप बैठे रहनेसे क्या काम चलता है? शिवपुरके थाना दुर्गको साफ-सॉफकर उन्होंने ठीक कर रखा। इसके बाद दो हजार सैनिक लेकर वे कलकत्ते चले। वहाँके रास्तेको पारकर ही तो अंग्रेज कलकत्तेमें पहुँचे।

सेलेक्ट कमिटीने तै कर रखा था कि अभी शीघ्र ही कलकत्तेकी ओर जाना ठीक नहीं होगा। मद्रासले और कुछ फौज और कई जहाजोंके आनेकी बात थी। उन सबोंके आ जानेपर ही यात्रा मंगलमय होगी। लेकिन फल्तामें जिस प्रकारसे बीमारीका दौरा है उससे और एक क्षणके लिए भी फल्तामें रहनेकी इच्छा क्लाइवकी नहीं हुई। हाल हीमें व भी खूब ज्वर भोग चुके हैं।

मेजर किलपैट्रिकने देशी सिपाहियोंको लेकर जमीनके रास्ते जाना शुरू की। क्लाइव और वाट्सन गोरोंको लेकर जहाजपर सवार हो जल मार्गसे चले।

बजबज पहुँचनेके कुछ पहले ही मायापुर नामक एक स्थानपर वाट्सन साहबने क्लाइव और उनके सैनिकोंको एक ऊँची-सी जगहपर उतार दिया। मेजर किलपैट्रिक भी वहाँ शीघ्र ही आ पहुँचे। क्लाइव और मेजर दोनोंकी वहीं भेंट हुई।

इसके बाद खूब जोर-शोरसे पैर पटकते मार्च करते सभी बजबजकी ओर चले।

२६

सारी रात मार्च कर सबेरे आठ बजे करनल क्लाइव और मेजर किलपैट्रिक सेना सहित बजबजमें आ पहुँचे।

२९ दिसम्बर सन् १७५६ ई०। एडमिरल वाट्सन भी जहाज लेकर साढ़े आठ बजे वहाँ आ पहुँचे।

क्लाइवके आदमी वाट्सनके जहाजोंको देख नहीं पाये। वे जहाँ खड़े थे उसके चारों ओर घना जंगल था। लेकिन जहाजी गोरोंने मस्तूलपर चढ़कर उस स्थानपर कहाँ क्या है इसकी खोज करते-करते देखा कि थोड़ेसे कुछ चुने हुए सैनिकोंको लेकर किला दखल करनेके लिए क्लाइव बजबज फोर्टकी ओर अग्रसर हो रहे हैं।

क्लाइवको मालूम नहीं हुआ कि दो मीलके भीतर ही मानिकचन्दने अपना अड्डा जमाया है। क्लाइवने अपने सैनिकोंको इधर-उधर बिखराकर तैयार रखा और युद्धके लिए प्रस्तुत होने लगे। इसके बाद दो सौ चुने हुए गोरोंको लेकर गंगाकी ओर आगे बढ़ने लगे। ठीक उसी समय मानिकचन्द के दो हजार सैनिकोंने उन लोगोंके ऊपर आक्रमण किया। उस समय दस बजा होगा।

मानिकचंदकी फ़ौज कलकत्तामें अंग्रेजोंके साथ लड़ी थी। इसीलिए व कुछ अनुभवके साथ ही क्लाइवके साथ लड़ने गये थे। लेकिन क्लाइवको तो वे जानते नहीं थे। आधे घण्टेके भीतर ही क्लाइवने उस दो हजारकी फ़ौजपर दो बार प्रहारकर बिल्कुल उसकी पंक्ति भंग कर दी। मानिक चंदके प्राय दो सौ लोग हताहत हुए। चार बड़े-बड़े सेनापति युद्धक्षेत्रमें ही मार गये।

मानिकचंदके सिरके ऊपरसे एक गोली निकलती हुई उनकी पगड़ीको उड़ा ले गई। उसीसे युद्ध छोड़ वे इस प्रकार भागे कि कहीं भी एक क्षणके लिए भी नहीं रुके। सीधे एकदम कलकत्ते हो आ पहुँचे।

इसी बीच गोले-गोलीकी आवाजसे लड़ाई हो रही है, ऐसा अन्दाज लगा वाट्सनकी फौज जहाजसे उतर उस ऊँचे मैदानमें आ क्लाइवकी फौज के साथ मिल गई। इसे देख नवाबकी फौजमें जो अभी भी बचे थे व युद्ध छोड़ सीधे बजबज फोर्टमें जाकर छिप गये।

उस तरफ फ़ौजमें मानिकचन्दके जो मोसाहब थे उन्होंने इसके पहले ही वाट्सनके जहाजोंको लक्ष्यकर गोला दागना आरम्भ कर दिया था। अपने जहाजसे वाट्सनके दो गोले चलाते ही सब शान्त हो गये। इतने बड़े गोले इसके पहले बंगालमें किसीने नहीं देखे थे। बाप रे कैसा उसका गर्जन है! कैसा उसका तेज है!

शामको सात बजे वाट्सनने देखा कि सब कुछ बिलकुल शान्त है। उन्होंने बजबज किलेके ऊपर धावा बोलकर उसे ले लेनेके लिए सौ जहाजी गोरोंको नदीके किनारे उतार दिया। उनके सहकारी कैप्टेन बायर कूटकी इच्छा थी कि उसी रातको बजबजके किलेपर अधिकार कर लें। किन्तु कर्नल क्लाइवने कहलवाया कि वे और उनके मेजर तथा उनके सैनिक-गण सम्पूर्ण रात्रि मार्च करनेके कारण इस समय अत्यन्त थके हुए हैं। आज वे और किसी भी तरह लड़ नहीं सकेंगे। इस समय कुछ विश्रामकी जरूरत है।

रातमें ग्यारह बजे। सभी मजेमें नाक बजाकर सो रहे हैं, ऐसे समय एक जबरदस्त घोर-गुलसे सबकी नींद टूट गई। बजबज किलेकी ओरसे ही आवाज आ रही थी।

जल्दी-जल्दी सबोंने वहाँ जाकर देखा। वह एक विचित्र दृश्य था। स्ट्रेन नामका एक जहाजी गोरा शराबके नशेमें किलेके सामनेकी खाईको तैरकर किलेकी दीवारके ऊपर जाकर खड़ा है। उसके एक हाथमें पिस्तौल है और एक हाथमें एक छोटी तलवार। और जोरके आवाजमें स्ट्रेन चिल्ला रहा है हुर्रे देहि हुर्रे देहि, यह किला मेरा है मेरा। फूटी हुई थालीके समान उसके गलेकी आवाज कर्कश थी। उसकी वह आवाज निकलते ही लगता जैसे एक आदमी नहीं एक सौ आदमी एक साथ चिल्ला रहे हैं।

फोर्टमें नवाबकी फ़ौज संख्यामें बहुत कम थी। सन्ध्याके अन्धकारमें उनमेंसे बहुत भाग गये हैं। दीख पड़ा कि स्ट्रेनने एकको गोली मार दी

है। और एकको तलवारसे काट दिया है। और एकको जो स्ट्रेनके हाथसे तलवार छीन लेनेकी चेष्टा कर रहा था उसे स्ट्रेनने एक घूसेसे धराशायी कर दिया है। अंग्रेजोंकि बहुतसे आदमियोंके वहाँ आ जानेसे बाकी फ़ौज किला छोड़कर जिससे जिस ओर बना भाग गई।

स्ट्रेनन जब सुना कि इसके लिए उसे कोर्ट मार्शल किया जायगा तब उसका नशा एक दम छूट गया। माफ़ी माँगते हुए स्ट्रेनन कहा मेरी पूरी शिक्षा हो गई है। मैं अब कभी भी अकेले कोई भी किला फ़तह करनेकी चेष्टा नहीं करूँगा।

बजबजका किला प्राय बिना लड़ाईके अंग्रेजोंके हाथमें चला आया। यह एक मजाक-सा ही फ़ोर्ट था। पीछे उसे फिरसे दखल कर नवाबकी फ़ौज अंग्रेजोंके जलमार्गके यातायातमें विघ्न न डालें इसी भयसे उसे तोड़ फोड़कर एकदम भूमिसात् कर दिया गया।

फिर मार्च शुरू हुआ। इस बार कलकत्तेकी ओर।

बीच रास्तेमें गंगाके एक ओर मटियाबुर्जका मिट्टीका किला पड़ता है उस समय उसका नाम आलोगढ़ था। उस ओर शिवपुरका वही पुराना थाना दुर्ग है जिसका नाम मक्का था। दोनों ही बिना किसी बाधाके वाट्सनके हाथमें आ गये। अंग्रेजोंके जहाजी गोलेके प्रतापकी बात इसके पहले ही एक मुँहसे दूसरे मुँह हो फैल चुकी थी। दूरसे जहाजको आते देख कर ही एक क्षणमें दोनों किले खाली हो गये।

थाना दुर्गसे चालीस सजी सजाई अच्छी तोपें गाड़ीके साथ अंग्रेजोंको मिल गईं। ये सभी एक समय उन्हींकी थीं। अंग्रेज आ रहे हैं सुनकर मानिकचन्दने उन सबोंको कलकत्तेसे लाकर वहाँ ठीक कर रखा था।

फ़ौज लेकर क्लाइव मटियाबुर्जमें उतर पड़े। वहाँसे पैदल कलकत्ता-की ओर चले। वाट्सन अपने जहाजपर गये।

। ३० ।

दूसरी जनवरी सन् १७५७ ई०। एडमिरल वाट्सनने दूरसे ही गंगाके ऊपर जहाजसे फोर्ट विलियममें दो गोले छोड़े। स्वल्पमात्रमें दरोगा वगैरह लोगोंकी साधारण-सी थोड़ी मारकाट हुई। दस बजे वाट्सनके जहाजके फोर्टके सामने आते ही सब शान्त हो गया। फोर्ट खाली हो गया। कलकत्तेकी मजलिसोंमें फैल-फैलकर मामले-मामले मानिकचन्दने एकदम दूरको जाकर ही साँस ली। सेना सहित जहाजसे उतरकर कैप्टेन आयर कूट और कैप्टेन आयर किलने फोर्ट विलियमको दखल कर लिया।

उस घोर दक्षिणकी ओरसे मार्च करते-करते क्लाइवके सिपाही और गोरे पल्टन फोर्टके पास आ गए। किन्तु उनमेंसे किसीको सन्तरियोंने फोर्ट में घुसने नहीं दिया। एडमिरल साहबका सख्त हुक्म था उनकी अनुमतिके बिना कोई किसमें फोर्टमें न घुसे। आगे आकर क्लाइवने सुना कि वाट्सनने आयर कूटको फोर्ट विलियमका गवर्नर बना दिया है।

इधर जो लोग फोर्टके पहरे पर थे वे सभी क्लाइवको पहचानते। उनके आदमियोंको ठोकनेपर भी बिना कुछ कहे सुने उनके लिए उन्होंने रास्ता छोड़ दिया। फोर्टके भीतर जाकर क्लाइवने आयर कूटसे फोर्टकी चाबी माँगी। एडमिरल वाट्सनके कानों तक बात पहुँचानेके लिए कैप्टेन कुल्न जहाजपर आदमी भेजा। वाट्सनने कहलवा भेजा कि क्लाइव अगर फोर्टमें रहनेके लिए जिद करें, तो हमें ऐसा उपाय अख्तियार करना पड़ेगा जो किसीके लिए भी सुखदायी नहीं होगा।

क्लाइवने वाट्सनको बता दिया कि एडमिरल साहब स्वयं आकर फोर्टको अधिकारमें लेना चाहें, तो उन्हींके हाथोंमें फोर्ट छोड़ दिया जायगा। लेकिन कम्पनीके फौजको वे और किसीके हाथों किसी भी तरह नहीं छोड़ेंगे। हितैषी मित्रोंने वाट्सनको समझाया कि इस समय मानापमानका समय नहीं है। क्लाइव जो कह रहे हैं वही युक्तिसंगत है।

नवाबके जोर पकड़नेके पहले ही दूसरे दिन सबेरे वाट्सन जहाज छोड़ कर फोर्टमें आये। क्लाइवने उन्हींके हाथोंमें चाबी लौटा दी। ड्रेकको बुलाकर वाट्सनने उस चाबीको उन्हींके हाथोंमें सौंप दिया।

कलकत्ता फिर अंग्रेजोंका हो गया। फलतासे आकर फिर सभी कलकत्तामें आकर जमा हुए। ऐसे होनेके कलकत्ता शहरको ठीक प्रेतपुरीके जैसा बड़ा देख अंग्रेजोंको आनन्दके बदले दुःख ही उमड़ आया। छः महीनेके भीतर ही क्या उसका चेहरा हो गया है। पहचानना भी मुश्किल है।

क्लाइव लेकिन उस टूटे फोर्ट विलियममें रहनेको राजी नहीं हुए। वहाँ फौजका रखना बिलकुल निरापद नहीं है। इसके अलावा जरूरत पड़नेपर उस किलेमें बैठकर लड़ाई करना एक असम्भव सी बात है, यह तो पहले ही प्रमाणित हो गया है। इसके ऊपर एक ओर वाट्सन क्लाइवके ऊपर उनकी अवज्ञाका भाव किसीसे भी छिपा हुआ नहीं था और दूसरी ओर सेलेक्ट कमिटी—इसके मेम्बर भी क्लाइवके प्रतापको देख ईर्ष्यासे जर्जरित थे—इन लोगोंके साथ खींचातानी कर एक जगह एक साथ रहनेको क्लाइव किसी भी तरह तैयार नहीं हुए।

दोनों ओर इन दो दलोंके बीच पड़ क्लाइव कुछ निराश हो गये। वे बड़ा काम करनेके लिए आये हैं। इन सब छोटी-मोटी बातोंको लेकर तर्क-वितर्क करना तथा मनोमालिन्य करना क्या उन्हें शोभा देता है? इनलोगोंसे बचकर काशीपुरसे कुछ उत्तर बरानगरके सुनसान खाली मैदानमें अपने आदमियोंको लेकर उन्होंने खेमा गाड़ा।

लेकिन जब भाग्यलक्ष्मी ही स्वयं क्लाइवकी सहायक है, तब दूसरे लोग उनसे उलझकर क्या करेंगे? क्लाइवके हाथमें धूल भी सोना हो उठता है।

कलकत्ता अच्छी तरह दखल होते-न-होते ही तीसरी जनवरीको वाट्सन और क्लाइवने अलग-अलग नवाब सिराजुद्दौलाके विरुद्ध युद्धकी घोषणा कर दी।

कारसिमबजी सेलेक्ट कमिटी भी अपने कार्यमें लगी। नवाबका दिया हुआ कलकत्ताका नाम अलीनगर उठा दिया गया। फोर्टके भीतर जो नई मस्जिद बनी थी, उसे भी तोड़ डाला गया। फोर्टके बाहर-भीतर जितने मकान अब सिराजुद्दौलाने तोड़-फोड़ कराकर एकदम साफ़ कर दिये थे, उनका और कुछ नहीं किया जा सका। तब तकके लिए वे सब पड़े ही रहे। तब जिन-सब मकानोंके दरवाजे, खिड़कियाँ निकालकर नवाबके आदमियोंने चूल्हा जलानेके काममें लगा दिया था उनको कुछ मरम्मत कर रहने लायक़ बना लिया गया था। माल-असबाब अवश्य फिर नहीं मिला।

सबसे अधिक नुकसान देशी मुहल्लेका हुआ था। उसका आधा तो अंग्रेज़ोंने स्वयं ही जलाकर भस्म कर दिया था। बाक़ीको नवाबके आदमियोंने अच्छी तरहसे ही खतम कर दिया था। वहाँ लूटने ले जानेके लिए जो कुछ भी था सब ही ग़ायब हो गया था।

जो हो मिलिटरी सम्बन्धी कामसे छुटकारा पाकर सेलेक्ट कमिटीने शहरकी उन्नतिकी ओर ध्यान दिया। धीरे-धीरे फिरसे शहरकी श्री लौटने लगी।

क्लाइव बारासतके मैदानमें ही रह गये। उस समयका बारासत आजका बारासत नहीं था। उस समय उसके चारों ओर बड़ी भारी जमीन जंगल और बनैले सूअर भरे हुए थे। एक दिन तेज़ीसे दौड़ते हुए आकर एक बनैले सूअरने क्लाइवके एक सिपाहीको झपट्टा मार कर एकदमसे घायल कर दिया।

क्लाइव वहाँ भी चुपचाप बैठनवाले आदमी नहीं थे। दक्षिणापथके युद्धमें उन्होंने एक बात अच्छी तरह ही सीखी थी कि इस देशके लोगों को भय दिखाकर उनके मनमें आतंक पैदा कर देनेपर बारह आना काम हासिल हो जाता है। उस समय केवल चार आना युद्ध करनेसे ही कार्योद्धार हो सकता है।

काउन्सिलके साथ परामर्श कर क्लाइवने हुगलीमें एक बड़े पैमानेपर धावा बोलनेका प्लैन बना डाला। इस बार और सुतारकी टुक-टुक नहीं एकदमसे लोहारकी एक चोट।

उस समय मद्राससे बाल्मोल जहाज आ गया था। उसमें क्लाइवके अपने हाथोंसे तैयार किये हुए तीन-चार सौ सिपाही और प्रचुर युद्ध सामग्री थी—तोप बन्दूक गोला गोली बारूद। उसे देख अंग्रेजोंका साहस और बढ़ गया। हुगलीपर आक्रमण करनेकी सभी तैयारियाँ अग्रसर होने लगीं। बाध्य होकर तब हुगलीमें बैठे मानिकचन्दने भी तैयारी शुरू कर दी।

कासिमबाजार-कोठीके सर्जन डाक्टर विलियम फोर्थ भागकर उस समय चुँचड़ामें डचोंके आश्रयमें रह रहे थे। उन्होंने लिख भेजा रोज ही बङ्गालमें स्वरूपगंजसे लोग हुगलीसे भाग रहे हैं। इस समय मौका अच्छा है—हुगलीपर आक्रमण करनेपर अंग्रेजोंकी इज्जत खूब बढ़ जाएगी। और उससे थोड़े सामग्री भी आशा है। चालाकीसे चिट्ठीके साथ उन्होंने हुगली शहर का एक प्लैन भी भेज दिया।

चौथी जनवरी। वाट्सनने अपनी फ़ौजसे १२० गोरोंको चुनकर भेजा। क्लाइवने भी कुछ दिये। तीन सौ देशी सिपाही गोरोंके साथ चले। उन्हें लेकर तीन जहाज सजाये गये। क्लाइवके सहकारी मेजर किलपैट्रिक इस अभियानके नेता होकर ब्रिजवाटर जहाज पर सवार हुए। साथमें दो निपुण सेनापति कैप्टेन मायर कुट और कैप्टन किंग थे।

कठिन दरो हो गई। हुगली-अभियानके प्रारम्भमें ही ब्रिज वाटर जहाज बाग बाजारके पेरिन साहबके बागके बराबर आते ही रेतमें अटक गया। इससे एक पूरा दिन ही नष्ट हो गया। अंग्रेज आ रहे हैं सुन कर हुगलीमें पहले ही से रोना-धोना शुरू हो गया था। देरी होनेसे बहुत लोगोंको सुविधा हो हुई। वे माल असबाब ले भागकर बचनेका थोड़ा और समय पा गये।

विजवाटर जब रेलीसे निकलकर बरानगर पहुँचा तब और-एक नई विपत्ति आई। मेजर किलपैट्रिक आदि कोई भी तो इस ओरकी गंगाकी परिस्थितिको नहीं जानते। जो जाना हुआ था वह उन डचोंका था। डचों-से पाइलेट चाहनेपर उन्होंने दिया नहीं। दें कैसे? नहीं उस दिन नवाबके हाथों उनका कितना अपमान हुआ था? यह तो छः महीने पहलेकी बात है। डच-गवर्नर एड्रियन बिसडोम साहब उस बातको क्या इतने सहजमें भूल जाएँगे।

अंग्रेज भी किसी तरह पीछे पैर रखनेवाले नहीं थे। डचोंका एक जहाज उस समय बरानगरमें ही गंगामें बँधा हुआ था। विजवाटरके कैप्टेन स्मिथ साहब सीधे इस जहाजपर चढ़कर एक डच आफिसरको बहुसि धप की तरह उठाकर अपने जहाजपर ला पटके।

इसके बाद तो और कोई कठिनाई नहीं रह गई। ९ जनवरीको अंग्रेजोंके जहाज हुगली कोटके सामने जा पहुँचे। एक दल जहाजी गोरों-को उसी समय किनारेपर उतार दिया गया। मैदानमें उतर कोई बात किये बिना उन लोगोंने एकदमसे सभी घर-द्वारको जलाना शुरू कर दिया। उनके चेहरोंको देखकर ही तो लोगोंके प्राण-पखेरू उड़ गये। ऐसी लम्बी चौड़ी देह। ऐसी छाती। लाल-लाल गोल-गाल मुँह। एक-एक जैसे साक्षात् एक-एक यमदूत हो। डर किसे कहते हैं वे नहीं जानते। काली हाथ केवल पूँजीके बलपर ही दस-दस जवानोंको काबूमें कर लेते हैं।

तीसरे पहर भर हुगली-कोटके ऊपर जहाजसे गोला-बरस होता रहा रातको दो बजे अंग्रेजी फौजने हुगली किलेको घेर लिया। दुम से के अधिक कष्ट नहीं उठाना पड़ा। नवाबके दो हजार सैनिक जो किले रक्षाके लिए थे वे किलेको छोड़ भाग गये।

उसके बाद शुरू हुई ताण्डव लीला। १० से १९ जनवरी तक गोरोंने हाथके पास जहाँ भी जो कुछ पाया सबको जलाकर भस्म डाला। हुगलीसे बैंडेल तक एक भी मकान एक भी गोला साबुत

रहा। अंग्रेजोंने खूब क्षति की। ऐसा नहीं करनेपर भी चलता। लेकिन उस समय तो खून सिरपर चढ़ गया था। हालवेलने कालकोठरीकी कहानी व्यर्थ ही तो नहीं लिखी थी। हुगली-पर्वको समाप्त कर १९ जनवरीको अंग्रेज कलकत्ते लौट आये।

इसके बाद नवाब सिराजुद्दौला चुप नहीं रह सके। लेकिन चुप रहना ही अच्छा होता। जब तक एक युद्ध ही नहीं होता तब तक अंग्रेज लोग बंगालमें व्यापार नहीं कर पाते। खाने-पीनेकी चीजोंको भी जुटाना उनके लिए कठिन होता। व्यापार मिट्टीमें मिल रहा है देखकर कम्पनीके डायरेक्टर अधिक दिन बैठे नहीं रहते जल्दी कुछ करनेके लिए कहते। लाचार होकर अपनसे ही अंग्रेज लोग एक समझौतेकी व्यवस्था करनेको बाध्य होते। उस समय नवाबको अच्छा मौका मिलता।

लेकिन 'नियति केन बाध्यते ?' सिराजुद्दौला कलकत्ते रवाना हुए। वे नहीं समझे कि इस बार करैत साँपके सिरपर पैर रखने जा रहे हैं।

१९ जनवरीको कलकत्तेमें बैठे अंग्रेजोंने सुना कि नवाब सिराजुद्दौला मिचेली तक आ गये हैं। उनके साथ चालीस हजार घुड़सवार तथा साठ हजार पैदल सेना है। पचास हाथी और तीस तोपें हैं। इस ओर अंग्रेजोंके पास तो सात सौ ग्यारह गोरे, एक सौ गोलन्दाज तेरह सौ सिपाही और चौदह तीन-सेरी गोलेकी तोपें हैं।

अंग्रेज सचमुचमें ही कुछ डर-सा गये। डरनेकी बात ही थी। नवाब-की सेनावाहिनीका विस्तार तो कम नहीं था। इसके बारेमें खूब काना-फूसी चल रही है कि लगता है उनके देशमें फ्रांसीसियोंके साथ अंग्रेजोंकी लड़ाई छिड़ ही गई। सचमुचमें अगर छिड़ गई हो तो दोनों ओर सँभा लना तो बहुत कठिन है।

अंग्रेजोंने नवाबके पास एक सन्धिका प्रस्ताव भेजा। नवाब भी इसीको लेकर थोड़ा सोचकर रुके। उन्हें भी ठोक-बजाकर देख लेनेकी इच्छा थी कि सचमुचमें अंग्रेजोंमें कितनी शक्ति है। इसके पहले ही माणिकचन्द्र स्वयं

मुर्शिदाबाद आकर खबर दी है कि उस बार फ्रान्सीसीयोंके युद्धमें नवाब जिन अंग्रेजोंका परिचय पाकर भागे थे इस बार और वे सब लोग अंग्रेज नहीं हैं। क्लाइवके आदमी बिलकुल दूसरी जातिके हैं। समय बितानेके लिए नवाबने जगत सेठसे ही क्लाइवके पास चिट्ठी लिखवाई। डचों और फ्रांसीसियोंकी मध्यस्थता मांगी।

अंग्रेज टूट जायें तो टूट जायें लेकिन झुकते नहीं। बाहरसे वे खूब उछल-कूद मचाने लगे। सन्धिकी ऐसी-ऐसी शर्तें भेजने लगे कि जैसे नवाब ही चोरीके अपराधमें पकड़े गये हों। डच लोगोंने इस सन्धिमें मध्यस्थ होना नहीं चाहा। फ्रांसीसियोंका विश्वास कर इस विषयमें उन्हें बीचमें डाल-देनेको अंग्रेज ही स्वयं राजी नहीं हुए। अन्तमें क्लाइवने स्वयं अपने दो विश्वस्त आदमियों जान वाल्श और ल्यूक स्क्राफ्टनको शान्ति दूत बनाकर नवाबके पास भेजा। धीरे-धीरे मुग्रवर तक जानेपर भी नवाब से नहीं मिल सके। सिराजुद्दौला उस समय कलकत्तेके रास्ते रवाना हो गये हैं।

३ फरवरी सन् १७५७ ई०को नवाब सिराजुद्दौला बरानगरमें क्लाइव का फौजको डराकर बारासातका रास्ता पकड़ दमदम होकर फिर कलकत्तेमें घुसे। फिर उसी अमीचन्दके हालसी बागवाले मकानके चारों ओर नवाबका तम्बू पड़ा।

दूसरे दिन वाल्श और स्क्राफ्टन वहीं आकर नवाबको पकड़ा।

: ३१ :

सन्ध्या समय अमीचन्दके बगान बाड़ी (उद्यान-गृह) में सिराजुद्दौला दरबारमें वाल्श और स्क्राफ्टनकी मुलाकात हुई। कोर्निश कर उन लोगोंने नवाबके सामने क्लाइवके सन्धि-प्रस्तावोंको पेश किया। नवाबने अब बुरा कुछ भी नहीं कहा। उँगलीसे मन्त्रियोंकी ओर इशारा कर दिया।

क्लाइवके सन्धि प्रस्तावोंमें पहला ही था कि नवाबको अभी कलकत्ता छोड़कर चला जाना पड़ेगा। नहीं तो सन्धिकी बात उठ ही नहीं सकती। नवाबके मन्त्री तो अंग्रेज-दूतोंकी स्पर्धा देखकर आश्चर्यचकित रह गये। बात और आखिर तक नहीं चल सकी।

ऑर्म अपने संस्मरणमें कहा है कि वास्तवमें क्लाइवने इन दो शान्ति दूतोंको जासूसी करनेके लिए ही नवाबके पास भेजा था। उद्देश्य था गुप्त रूपसे नवाबकी फ़ौजकी असली खबरका संग्रह करना। इनके साथ थे फ़ारसीके जानकार कायस्थ वंशके नवकृष्ण देव जो बादमें महाराजा नवकृष्ण बहादुरके नामसे विख्यात हुए।

ठीक-ठीक बात क्या हुई इसका पता नहीं चलता। लेकिन देखा गया कि वाल्श और स्क्रैफ्टनने अपने तम्बूमें लौटकर बत्ती बुझा दी। उन्होंने ऐसा दिखलाया जैसे वे सोन गये हैं। थोड़ी रात होते-न-होते वे दोनों शान्तिदूत धीरे-धीरे पैर दबाकर अपने तम्बूसे बाहर हुए और एकदम सीधे बरानगरमें क्लाइवके तम्बूमें हाजिर हुए। उनके मनमें अवश्य कोई खोट था इसीलिए उन्होंने यह समझ लिया कि शायद नवाबको उनके मनकी असली बातका पता चल गया है। नहीं तो सन्धिकी बातको पूरा किये बिना इतनी जल्दी भागनेमें ही क्यों?

क्लाइवने समझ लिया और देरी करना बिलकुल ही उचित नहीं होगा। शुभस्य शीघ्रम्। जैसा पहले हुआ था इस बार भी वही हुआ। नवाबके कलकत्ता आनेकी बात सुनकर ही देशी लोग मिस्त्री कारीगर नौकर-चाकर सभीने वहाँसे हटना आरम्भ कर दिया। छावनी फौजके लिए रसद जुटाना कठिन हो गया। क्लाइवने देखा कि और देरी करनेपर हो सकता है कि अन्तमें बरानगरके मैदानमें उन्हें भूखों मरना होगा। चाहे इधर या उधर अभी ही तै हो जाना जरूरी है।

रात बीतनेके पहले ही क्लाइवने वाट्सनके पास कुछ गोरे सिपाहियोंकी सहायता माँग भेजी। इस बार और झगड़ा न कर वाट्सनने साढ़े पाँच

सौ गोरे क्लाइवके पास भेज दिये। एक बजे रातमें वे कोप जहाजसे बागबाजारके पेरिन साहबके बागमें उतरे। क्लाइवके तम्बूमें पहुँचकर देखते हैं कि इससे पहले ही क्लाइवके सैनिक हथियारसे लैस तैयार हैं।

तीन बजे रातमें मार्च शुरू हुई। दलबल लेकर क्लाइव नवाबके हालसी बागकी छावनीकी ओर चले। साथमें पाँच सौ गोरी पल्टन साढ़े पाँच सौ जहाजी-गोरे, आठ सौ देशी सिपाही साठ सिभायती गोलन्दाज और दो तोपें थीं।

पाँच फरवरी सन् १७५७ ई०। भोर होते-होते क्लाइव दलबल सहित हालसी बागके पास पहुँचे। लेकिन आसपासके धानके खेतोंमें ऐसा कुहरा छा रहा था कि चारों ओर अन्धकारसे एकदम काला-ही-काला दिखाई देता था। रास्ता भूलकर क्लाइव इधर-उधर हाथसे टटोलते घूम रहे हैं इसी समय उधरसे एक हवाई आतिशबाजी अंग्रेजोंके बारूदकी गाड़ीपर आकर पड़ी। उसी समय बारूद फटकर धड़ाका हुआ।

क्लाइवकी ओरके कितने लोग मरे। साथ-ही-साथ नवाबके घुड़सवार अचानक अंग्रेजोंकी फ़ौजपर टूट पड़े।

इसके बाद घमासान युद्ध हुआ। अंग्रेज गोलन्दाज यथाशक्ति गोला दागने लगे। इससे नवाबके घुड़सवारोंके आक्रमणकी तेजी कुछ कम हो गई। लेकिन अन्धकारमें कौन शत्रु है, और कौन मित्र यह पहचानना कठिन था। बहुत अपने ही दलकी गोलीसे मरे, जख्मी हुए। सबेरे नौ बजे कुहरा हटनेपर चारों ओर साफ होनेपर मालूम हुआ कि अंग्रेजी फौज एकदम नवाबकी छावनीके भीतर आ पड़ी है। तब क्लाइवने दुगुने वेगसे मार काट शुरू कर दी।

क्लाइवकी इच्छा थी कि किसी तरह नवाबको पकड़ लिया जाय। वैसा होनेपर तो पौ बारह। और युद्ध नहीं करना पड़ेगा। लेकिन नवाब पकड़े नहीं जा सके। पासके बहुत अंग्रेजोंके दूतोंके आनेकी खबर सुनकर अपने पार्षदोंकी सलाह कर वे अपना तम्बू छोड़कर गोविन्द मित्तिरके

बागानबाड़ी (उद्यान-गृह) में चले गये थे। क्लाइवको अपने बलका केवल भय ही हाथ लगा। अब इस विपत्तिसे किसी तरह उबार हो जाय। देखा गया कि लौटनेके रास्तेमें मराठा-डिचके किनारे ही नवाबके मोहनलाल तोपें ऊँचीकर बैठे हुए हैं।

नवाबकी फ़ौजके बीचसे लड़ाई करते करते रास्ता बनाकर बड़ी मुश्किलसे क्लाइव सियालदहकी ओरपर आये। थोड़ा और आगे बढ़कर मराठा-डिचको पारकर उन्हें बहूबाजारका रास्ता मिला। उसी रास्तेको पकड़कर जल्दी-जल्दी पैर चलाकर बारह बजेके लगभग दलबल लेकर क्लाइव फोर्ट विलियममें घुसे।

इस साधारण-सी बातमें अंग्रेजोंकी ओरके सत्तावन गोरा सिपाही बारह जहाजी गोरे और अट्ठारह देसी सिपाही मारे गये। सत्तर गोरे सिपाही बारह जहाजी गोरे और पचपन देसी सिपाही जख्मी हुए। दो अच्छी तोपें नवाबकी छावनीमें छोड़ आनी पड़ीं। पलासीके युद्धमें भी अंग्रेजोंका इतना नुकसान नहीं हुआ।

इस प्रकारसे दुःसाहस कर क्लाइवके धावा करने जानेको किसीने भी अच्छा नहीं कहा। नहीं कहनेसे क्या क्लाइवके स्वभावमें सब समय थोड़ी नाटकीयताका भाव रहता जिसे वे किसी भी तरह सँभाल नहीं पाते। बहादुरी दिखलानेके लिए वे ऐसे-ऐसे सब असम्भव काममें कूद पड़ते जिनका युद्ध शास्त्रकी नीतिके मुताबिक किसी भी तरहसे समर्थन नहीं किया जा सकता। लेकिन क्लाइवका भाग्य अद्भुत तुल्य था कि घोर विपदसे वे बराबर ही सही-सलामत निकल आते।

फोर्ट विलियममें घुसकर थोड़ा विश्राम करते-न-करते क्लाइवने नवाब को एक चिट्ठी लिख डाली। उन्होंने लिखा कि आज सुबह आपकी छावनीमें घुसकर दिखला आया हूँ कि मैं क्या कर सकता हूँ। अंग्रेजोंकी शक्तिको कभी भी नगण्य न समझियेगा। समझनेपर आप ही धोखा खाइएगा।

इसके बाद थोड़ा विश्राम कर ठण्डा होकर तीसरे पहर पाँच बजे अपने मातहतियोंको साथमें लेकर क्लाइव फिर बागानपरके तम्बूमें लौट आये।

क्लाइवकी इच्छा पूरी नहीं होनेपर भी अर्थात् नवाबको बन्दी बनाकर यहाँ ला सकनेपर भी भय दिखानेका काम काफी सफल हुआ था। नवाबके अन्यमी भयभीत होकर बिल्कुल घबराकर बार-बार कहने लगे कि अब किसी भी तरह वे क्लाइवके विरुद्ध नहीं जायेंगे। दगाबाजोंका राज-नैतिकताका ज्ञान नहीं है। न दूसरा कोई नियम ही नहीं मानते। वाटसनेस कनिंघम अतएव उनसे एक भी शब्द दूर रहना ही उचित है। इसलिए बाग छोड़कर नवाब एकदम जहाँ मानिकचन्द ठाकुर रहते हैं वहीं जाकर पहुँचे।

अच्छा मौका समझकर, इस बार क्लाइव और वाट्सन दोनों ही मिलकर एक साथ नवाबके पास अंग्रेजोंका दावा पेश करने लगे। इस बार अंग्रेजोंके चुने हुए अपने सेठ माणिकके वकील रणजीत राय और उनके परिचित उमीचन्द। उमीचन्द अंग्रेजोंके पहलेके सब बातोंको भूलकर नन्दकुमार क्लाइव और सेलेक्ट कमिटीकी कभी-कभी जी-हुजूरी कर फिर अंग्रेजोंके विश्वास बन गये थे। अमीरोंसे मेल रखनेसे उन्हें बड़े-बड़े काम थे। यह तो मानी हुई बात है कि कामके लिए कभी-कभी कष्ट सहने पड़ते हैं।

सन्धिके प्रस्तावको लेकर बहुत खींचातानी बहुत सोच-विचार चला। सिराजुद्दौलाके मनमें था कि बातचीत चला टाल-मटोलकर कुछ समय काट दिया जाय। दक्षिणमें फ्रांसीसी जेनरल बुसीको चिट्ठी भेजी गई है। वे अगर इस बीच आ जायें तो नवाब अंग्रेजोंको एक बार एक हाथ देख लेंगे। बुसीके ऊपर ही आशा बंध थी। इसलिए हीले-हवाले करते हुए नवाब समय बिताने लगे।

लेकिन ठीक लोग तो दक्षिणसे आये ही नहीं उल्टा यह खबर मिली कि दुर्दमनीय पठानी बादशाह अहमदशाह अब्दाली मथुराको लूट दिल्लीकी दहलीज पर आ बैठे हैं। ख्याल है अन्त तक बंगालको भी नहीं छोड़ेंगे। इसलिए

बाध्य होकर एक सन्धि करनी पड़ी। ९ फरवरीको अंग्रेजोंके सभी दावे स्वीकार कर नवाब सिराजुद्दौलाने सन्धिपत्रपर हस्ताक्षरकर सील मुहर लगा दिया। बंगालके विभिन्न स्थानोंमें ठीक पहलेकी तरह कोठी बनाकर अंग्रेज लोग अपना व्यापार चला सकेंगे। बादशाह फर्रुखसियरने जो फर्मान दिया था उसकी सभी शर्तें पूरी-की-पूरी वैसे ही रहेंगी। अंग्रेजोंका जो भी नुकसान हुआ है उसका हर्जाना नवाब चुकायेंगे। और जो सबसे अधिक जरूरी दो बातें थीं अर्थात् अंग्रेज जैसी उनकी इच्छा कलकत्तेके किलेको बना सकते हैं और कलकत्तेमें ही एक टकसाल खोलकर हिन्दुस्तानी सिक्के बना सकेंगे इन दोनों व्यवस्थाओंका भी सन्धि-पत्रमें उल्लेख किया गया।

सन्धिके साथ एक लेन-देनकी बात भी जुड़ी हुई थी। लेकिन वह प्रकट रूपसे नहीं थी छिपे रूपसे ही थी। इस मामलेमें नवाबके पाससे क्लाइवने क्या पाया उसे सेलेक्ट कमिटीको बता देनेकी उन्होंने कोई भी जरूरत नहीं समझी। लेकिन सौभाग्यसे उसे विलायतमें कम्पनीके डायरेक्टरोंकी सिक्रेट कमिटीको बतला रखा था इसलिए बादमें अनेक मुसीबतोंसे बच पाये। उन दिनों किन्तु इस प्रकारसे छिपे रूपसे लेन-देनको कोई भी बुरा नहीं समझता था। बल्कि घूस कहकर कोई उसे लौटा देता या नहीं लेना चाहता तो लोगोंको सन्देह होता कि उसका दिमाग खराब हो गया है।

इस सन्धिके फलस्वरूप और एक व्यवस्था हुई। यह व्यवस्था अगर सिराजुद्दौला नहीं करते तो लगता है कि अच्छा होता। तै हुआ कि नवाबके दरबारमें अंग्रेजोंके एक प्रतिनिधि रहेंगे। दोनों पक्षोंमें जो कुछ भी बातचीत होगी उन्हींके द्वारा चलेगी। नवाब स्वयं ही विलियम वाट्सको अंग्रेजोंकी ओरसे एजेण्ट नियुक्त कर अपने दरबारमें भेज देनेके लिए कह गये। वाट्स का गोल-मटोल गबदा-सा चेहरा देखकर नवाबने समझ लिया था कि वाट्स लगता है कि एक निरीह सीधा-सादा अच्छा आदमी है। इसमें नवाब अभी बिल्कुल बच्चे थे। किसीका बाहरी चेहरा ही उनको समझने कर

नहीं है नवाब तब तक भी यह सीख नहीं पाये थे। यही वाट्स नवाबके दरबारसे नवाबके घरकी सब खास बात राजधानीमें क्या हो रहा है क्या नहीं इसका पूरा-पूरा लेखा-जोखा बिना किसी त्रुटिके कलकत्ता लिख भेजते-यह काम और जिसका भी हो लेकिन किसी सीधे-सादे अच्छे आदमीका तो किसी भी प्रकार नहीं था।

। ३२ ।

नवाबके साथ सन्धि होते-न-होते अंग्रेज बहुत चिन्तामें पड़ गये। मद्रास से खबर आई कि यूरोपमें सचमुचमें फ्रांस और इंगलैंडके साथ लड़ाई छिड़ गई है।

खबर भेजनेके साथ ही मद्रासके गवर्नरने सेलेक्ट कमिटीके पास लिखा कि उनका अनुरोध है कि अभी ही कलकत्तेके अंग्रेज फ्रांसीसियोंके चन्दन नगरको दखल कर लें। क्लाइवको इसमें कोई भी आपत्ति नहीं थी। लेकिन एडमिरल वाट्सनको लेकर झंझट हुआ। उन्होंने एक आपत्ति की कि नवाबने तो अभी भी सन्धिकी कोई बात तोड़ी नहीं है। तब कैसे बिना उनकी अनुमतिके उनके राज्यके भीतर चन्दननगरपर आक्रमण किया जाय?

इसके पहले अमीचन्दके मददसे नवाबने एक असतर्कताके क्षणमें अंग्रेजों-के पास लिखा था जो मेरे शत्रु हैं वे तुम्हारे भी शत्रु हैं। और जो तुम्हारे मित्र नहीं हैं वे हमारे भी मित्र नहीं हैं। क्लाइवने वाट्सनको समझाया कि तब यही कहकर नवाबसे अनुमति माँगी जाय फ्रांसीसी तो अभी हम लोगोंके शत्रु हैं इसलिए इस समय वे नवाबके भी शत्रु हुए।

सेलेक्ट कमिटीके बड़े-बड़े मेम्बर और स्वयं क्लाइव भी इस नाकरी सीधमें चलनेवाले एडमिरलसे धोखा करकर ही चलते। इसलिए और छेड़-छाड़ करनेका साहस उन लोगोंने नहीं किया। अगर वे बिगड़ उठे हों और अपने जहाजोंको लेकर चल दें तो फिर कुछ कहनेको नहीं रहेगा। एक

मिरज़ा वास्तु बादुमन तो कम्पनीके तावेदार नहीं हैं। उनकी इच्छा अनिच्छा-का सम्पूर्ण भार उन्हींके ऊपर है। उनको बालकी मानकर क्लाइव चन्दन नगरपर आक्रमण करनेके लिए नवाबकी अनुमति मँगानेके उद्देश्यसे उन्हें लिखा-लिखाकर बारबार चिट्ठी लिखने लगे।

लेकिन केवल चिट्ठी-पत्री लिखकर समय नष्ट करनेवाले आदमी राबर्ट क्लाइव नहीं थे। उस समय नन्दकुमार राय—बादके महाराजा नन्दकुमार—हुगलीके फ़ौजदार थे। अमीचन्दकी मध्यस्थतामें क्लाइवने नन्दकुमारके साथ एक व्यवस्था कर ली। उपयुक्त परिमाणमें दक्षिणा देनेसे ठीक हो गया कि क्लाइव जब अपनी फ़ौज लेकर चन्दननगरकी ओर आयेंगे तब फ़ौजदार नन्दकुमार हुगलीकी मुगल फ़ौजको चालाकीसे अन्यत्र हटा रखेंगे। तब क्लाइव चन्दननगरमें बिना किसी बाधाके जो खुशी कर सकेंगे।

प्रतिदिन इसी समय सीधे-सादे बेचारे वाट्स मुर्शिदाबादसे चिट्ठीपर चिट्ठी भेजकर सेलेक्ट कमिटीका पारा चढ़ाने लगे। उन्होंने लिखा नवाबसे किसी प्रकारकी अनुमति माँगना बेकार है। वे आज इस ओर चल रहे हैं, कल उस ओर। उनकी किसी बातका ही कोई ठिकाना नहीं है। फिर उन्होंने लिखा कि दक्षिणमें फ्रान्सीसी जेनरल बुसीको नवाबने फिर पत्र लिखा है कि जिसमें वे और देरी न कर बगालमें आ उपस्थित हों। जेनरल बुसी दक्षिणसे चल आ ही चले हैं।

खबर सुनकर एडमिरल वाट्सन भी कुछ विचलित हो गये। तो भी अपनी जिदपर अड़ उन्होंने स्वयं नवाबको एक चिट्ठी लिखी। उसमें उन्होंने लिखा कि आप अगर अपनी बात न रखें और इंग्लैण्डके शत्रु फ्रान्सीसियोंके विरुद्ध अपने मित्र पक्षके अंग्रेजोंकी सहायता न करें तो आप जान रखें कि आपके राज्यमें एक ऐसी आग लगा दूँगा कि उस आगको गंगाका सब पानी उँडेलकर भी आप बुझा नहीं सकेंगे। और कृपा करके यह भी याद रखिएगा कि यह बात एक ऐसे आदमीके मुँहसे निकल रही है कि जिसकी एक बात भी आजतक अन्यथा नहीं हुई है।

नहीं है नवाब तब तक भी यह सीख नहीं पाये थे। यही वाट्स नवाबके दरबारसे नवाबके घरकी सब बात जान राजधानीमें क्या हो रहा है क्या नहीं इसका पूरा-पूरा लेखा-जोखा बिना किसी त्रुटिके कलकत्ता लिख भेजते यह काम और जिसका भी हो लेकिन किसी सीधे-सादे सच्चे आदमीका तो किसी भी प्रकार नहीं था।

३२

नवाबके साथ सन्धि होते-न-होते अंग्रेज बहुत चिन्तामें पड़ गये। मद्रास-से खबर आई कि यूरोपमें सचमुचमें फ्रांस और इंगलैंडके साथ लड़ाई छिड़ गई है।

खबर भेजनेके साथ ही मद्रासके गवर्नरने सेलेक्ट कमिटीके पास लिखा कि उनका अनुरोध है कि अभी ही कलकत्तेके अंग्रेज फ्रांसीसियोंके चन्दननगरकी दखल कर लें। क्लाइवको इसमें कोई भी आपत्ति नहीं थी। लेकिन एडमिरल वाट्सनको लेकर संकट हुआ। उन्होंने एक आपत्ति की कि नवाबने तो अभी भी सन्धिकी कोई शर्त तोड़ी नहीं है। तब कैसे बिना उनकी अनुमतिके उनके राज्यके भीतर चन्दननगरपर आक्रमण किया जाय?

इसके पहले अब्दालीके भयसे नवाबने एक असतर्कताके क्षणमें अंग्रेजों-के पास लिखा था जो मेरे शत्रु हैं, वे तुम्हारे भी शत्रु हैं। और जो तुम्हारे मित्र नहीं हैं वे हमारे भी मित्र नहीं हैं। क्लाइवने वाट्सनको समझाया कि तब यही कहकर नवाबसे अनुमति माँगी जाय फ्रांसीसी तो अभी हम लोगोंके शत्रु हैं इसलिए इस समय वे नवाबके भी शत्रु हुए।

सेलेक्ट कमिटीके बड़े-बड़े मेम्बर और स्वयं क्लाइव भी इस मामलेमें बीचमें पड़नेवाले एडमिरलसे थोड़ा डरकर ही चलते। इसलिए और छेड़-छाड़ करनेका साहस इन लोगोंने नहीं किया। अगर वे बिगड़ जाते हों और अपने जहाजोंको लेकर चल दें तो फिर कुछ कहनेको नहीं रहेगा। एक

सिराज बारम्बार वाट्सन तो कम्पनीके ताबेदार नहीं हैं। उनकी इच्छा मनिच्छा-का सम्पूर्ण भार उन्हींके ऊपर है। उनकी बातको मानकर क्लाइव चन्दन-नगरपर आक्रमण करनेके लिए नवाबकी अनुमति मँगानेके उद्देश्यसे उन्हें दिखा-दिखाकर बारबार चिट्ठी लिखने लगे।

लेकिन केवल चिट्ठी-पत्री लिखकर समय नष्ट करनेवाले आदमी राबर्ट क्लाइव नहीं थे। उस समय नन्दकुमार राय—बादके महाराजा नन्दकुमार—हुगलीके फ़ौजदार थे। अमीचन्दकी मध्यस्थतामें क्लाइवने नन्दकुमारके साथ एक व्यवस्था कर ली। उपयुक्त परिमाणमें दक्षिणा देनेसे ठीक हो गया कि क्लाइव जब अपनी फ़ौज लेकर चन्दननगरकी ओर आयेंगे तब फ़ौजदार नन्दकुमार हुगलीकी मुग़ल फ़ौजको चालाकीसे अन्यत्र हटा रखेंगे। तब क्लाइव चन्दननगरमें बिना किसी बाधाके जो ख़ुशी कर सकेंगे।

प्रतिदिन इसी समय सीधे-सादे बेचारे वाट्स मुर्शिदाबादसे चिट्ठीपर चिट्ठी भेजकर सेलेक्ट कमिटीका पारा बढ़ाने लगे। उन्होंने लिखा नवाबसे किसी प्रकारकी अनुमति माँगना बेकार है। वे आज इस ओर चल रहे हैं, कल उस ओर। उनकी किसी बातका ही कोई ठिकाना नहीं है। फिर उन्होंने लिखा कि दक्षिणमें फ्रान्सीसी जेनरल बुसीको नवाबने फिर पत्र लिखा है कि जिसमें वे और देरी न कर बंगालमें आ उपस्थित हों। जेनरल बुसी दक्षिणसे चल आ ही चुके हैं।

ख़बर सुनकर एडमिरल वाट्सन भी कुछ विचलित हो गये। तो भी अपनी ज़िदपर अड़ उन्होंने स्वयं नवाबको एक चिट्ठी लिखी। उसमें उन्होंने लिखा कि आप अगर अपनी बात न रखें और इंगलैण्डके शत्रु फ्रान्सी-सियोंके विरुद्ध अपने मित्र पराके अंग्रेजोंकी सहायता न करें, तो आप जान रखें कि आपके राज्यमें एक ऐसी आग लगा दूँगा कि उस आगको गंगाका सब पानी उँडेलकर भी आप बुझा नहीं सकेंगे। और कृपा करके यह भी याद रखिएगा कि यह बात एक ऐसे आदमीके मुँहसे निकल रही है कि जिसकी एक बात भी आजतक अन्यथा नहीं हुई है।

सब विचार-वितर्ककी मीमांसा १२ मार्चको हो गई। कलकत्तेमें नवाब-की चिट्ठी आ गई। उन्होंने लिखा था कि कई दिन हुए कि मेरे राज्यमें अशान्तिकी आग बुझी है। देशमें फिर लड़ाईकी आग नहीं जलने दे सकता। उस समयके अहमदशाह अब्दाली दिल्लीको लूटकर अपने देशमें लौटनेकी बात सोच रहे हैं यह खबर मुर्शिदाबादमें पहुँच गई थी। इस समय उनके बंगालमें आनेकी कोई सम्भावना नहीं है। अतएव नवाब सिराजुद्दौलाकी चिट्ठी कुछ नरम-कड़ी जैसी होती ही।

नवाबकी चिट्ठी पढ़कर सेलेक्ट कमिटीने उसी समय एडमिरल वाट्सन-से अनुरोध कर भेजा कि एडमिरल साहब जिसमें इंगलैण्डके राजाके नाममें अपनी नौवाहिनी लेकर इंगलैण्डके शत्रु फ्रान्सीसियोंके विरुद्ध अभी अभियान कर दें। वाट्सनने उत्तर दिया कि जिस क्षण पाइलट बतलायेगा कि जहाज चलेगा उसी क्षण वे चन्दननगरकी ओर रवाना हो जायेंगे।

इधर वाट्सनकी प्रतीक्षा किये बिना उसी दिन बराहनगरसे डेरा-डण्डा उठाकर फौजके साथ गंगा पार कर क्लाइवने मार्च शुरू कर दिया। एक-दम चन्दननगरके पास ही गोरिटी बागमें आकर खेमा गाड़ दिया १२ मार्च सन् १७५७ ई०। हुगलीके फौजदार नन्दकुमार सब जान-सुनकर भी चुप रहे।

दूसरे दिन क्लाइवने चन्दननगरके गवर्नर पियर रेनो साहबको अंग्रेजों-के हाथमें फ्रान्सीसी-किला छोड़ देनेके लिए हुक्म भेजा। रेनो साहबने कोई जवाब नहीं दिया। यद्यपि उनके पास न आदमी हैं न रुपया-पैसा है और न रसद आदि है फिर भी जान जाके साथ बिना एक बार लड़े किला न छोड़ेंगे ऐसा उन्होंने स्थिर किया।

अपनी फौज लेकर चन्दननगर शहरके दक्षिण-पूर्वी हिस्सेको क्लाइवने घेर लिया। चन्दननगर कोटके ऊपर उन्होंने ही पहले गोला-गोली चलाई। लेकिन अधिक गोली-बारूद नष्ट नहीं किया। क्योंकि वे जानते थे कि असली लड़ाई गंगाके ऊपरसे ही होगी। उसके लिए एडमिरल वाट्सन

पहुँचना ही चाहते हैं। जबतक वे नहीं आ जाते हैं तबतक क्लाइवका काम युद्धकी भूमिकाको ठीक कर रखना है।

कासिमबाजार कोठीके फ्रान्सीसी अध्यक्ष ला-साहबके अनुरोधपर मुर्शिदाबादमें बैठे हुए नवाब सिराजुद्दौला फ्रान्सीसीकी सहायताके लिए बहुत-से आदमी भेजनेका उपाय कर रहे थे। दुर्लभराम मानिकचन्द मोहनलाल सबको तैयार रहनेके लिए कह दिया। लेकिन चन्दननगर फोर्ट के ऊपर क्लाइवका पहला मौका पड़ते ही नन्दकुमारने नवाबके पास खबर भेज दी कि फ्रान्सीसी किला फतह हो गया। नवाबके आदेशसे हुगलीसे प्राय दो हजार मुगल फौजने चन्दननगरमें अंग्रेजोंके विपक्षमें लड़ाई करनेके लिए फ्रान्सीसियोंका साथ दिया था। वे भी इस पहले आक्रमणमें ही फ्रान्सीसियोंको छोड़कर निकल भागे।

नन्दकुमारकी चिट्ठी पाकर नवाबने सोचा कि अब और आदमी भेजना बेकार है। बहुत कुछ समझानेपर भी ला-साहब सिराजुद्दौलासे किसी प्रकार भी कुछ भी नहीं करा सके। फ्रांसीसी लोग बिलकुल अकेले पड़ गये। कूटनीतिज्ञ नन्दकुमारने एक ही चालमें अंग्रेजोंका काम बहुत दूर तक आगे बढ़ा दिया। उससे साँप भी मरा और लाठी भी न टूटी।

१५ मार्च। वाट्सनके तीन युद्ध जहाज—केन्ट, टाइगर और सालिसबेरी—एक-एककर चन्दननगरके उस पार चौपाटीमें जमा होने लगे। क्लाइव देशी चरित्र जितनी अच्छी तरह समझते थे ठीक उसी प्रकारसे फ्रांसीसी चरित्र भी उनका जाना हुआ था। वे अच्छी तरह जानते थे कि अब फ्रेंच लोग आपसमें ही मान-अभिमान शुरू कर लड़ेंगे और काम नष्ट करेंगे। इसी मौकेपर उन्होंने चारों ओर प्रचार कर दिया कि जो कोई भी फ्रेंच अपना दल छोड़कर अंग्रेजोंकी ओर आयगा उसे अंग्रेज क्षमा तो कर ही देंगे इसके अलावा उसके लिए यथोचित पुरस्कारकी भी व्यवस्था है।

यह सुनकर फ्रांसीसियोंके गोलन्दाज-फौजके सर्दार लेफ्टिनेण्ट मुखार अपने फ्रांसीसियोंको छोड़कर अंग्रेजोंके दलमें मिल गये। तरानोके अप्रेज्ञ-

की ओर चले जानेसे फ्रांसीसियोंकी गोलन्दाज फौज प्राय: अन्धी हो गई। अंग्रेजोंको अवश्य ही खूब सुविधा हुई।

अंग्रेजोंके जहाज जिसमें उस पारसे आकर इस पार चन्दननगरमें सहज ही पहुँचने न पावें इसके लिए फ्रांसीसियोंने अपने शहरके सामनेके मार्गको गंगाको घेरकर उसके ऊपर पंक्तिकी पंक्ति देशी डोंगियोंको डुबा कर बेगसे बीच और रस्सीसे बांध (buoy) के साथ अटका रखी थीं। इस व्यवस्थासे अंग्रेजोंके बड़े-बड़े जहाजोंको उस ओर बढ़नेमें बाधा होगी। केवल एक गुप्तमार्ग खुला रखा गया था कि अपने लिए आवश्यकता पड़नेपर केवल फ्रांसीसी लोग ही उस रास्तेसे गंगामें आ जा सकें। वैरनने अंग्रेजोंको वह पथ दिखला दिया।

२२ मार्चके भीतर वाट्सनके अन्य सभी जहाज चन्दननगरके उस पार आ पहुँचे। साथ-ही-साथ एडमिरल पोकक अपना एक जहाज लेकर दक्षिण भारतसे यहाँ आ पहुँचे। मद्राससे कलकत्ते आकर उन्होंने सुना था कि वाट्सन चन्दननगरकी ओर गये हैं। वे भी और कहीं नहीं रुक सीधे वाट्सनके पीछे पहुँचे।

२३ मार्च। सवेरेसे पूर्व-दक्षिणकी ओरके स्थलमार्गसे क्लाइवने चन्दन-नगरपर आक्रमण किया। उस ओर गंगाके ऊपरसे जलमार्गसे अंग्रेजोंके युद्धके जहाजोंसे एक साथ ही एकसी तोपें गगन-समपर गरज उठीं। दो घण्टे तक भीषण गोलाबारी हुई। और कैसे-कैसे भयंकर तोपें थे वे! उसके सामने खड़े होनेकी हिम्मत किसमें थी? साढ़े नौ बजेके भीतर ही फ्रेञ्च गवर्नर रेनोने शान्तिका सफेद झण्डा फहरा दिया। चन्दननगरका युद्ध यहीं समाप्त हुआ।

। ३३ ।

आग जल गई। इस आगको बुझते बहुत दिन लगे। सन् ईसवीकी अठारहवीं शताब्दीका बाकी समय भी उसके लिए पर्याप्त नहीं हुआ

उन्नीसवीं शताब्दीके भी प्रथम दस वर्ष बीत गये। पलासीका युद्ध उसीके बीचकी एक घटना मात्र है।

क्लाइवमें यह बड़ा गुण था कि वे दूर-द्रष्टा थे। कलकत्तेमें उतर जरा-सा हीमें उन्होंने समझ लिया था कि कलकत्ता वापिस पानेपर भी उनका काम वहीं खतम नहीं होगा। अब फांसीसियोंको हराकर उन्होंने समझा कि उनका काम अभी शुरू हुआ।

चन्दननगरकी ओर जानेके पहले ही क्लाइव सेलेक्ट कमिटीसे स्पष्ट रूपमें कह गये थे कि अब चन्दननगरको ले लेना निश्चित हुआ है तो और वहीं रुकनेसे नहीं चलेगा। और बहुत दूर तक आगे बढ़ना होगा। चन्दन-नगरके हाथमें आते ही क्लाइवने सेलेक्ट कमिटीको फिर लिखा कि बिना नवाबकी अनुमतिके यहां तक कि उनकी इच्छाके विरुद्ध ही केवल बल प्रयोगसे हम लोगोंने चन्दननगरको ले लिया। अब नवाब भी बल प्रयोगसे हम लोगोंको भगानेके लिए यथाशक्ति चेष्टा करेंगे। तब जो शुभ काम एक बार शुरू हो गया है, उसको लापरवाहीसे मिट्टी होने देना किसी भी प्रकारसे बुद्धिमानीका काम नहीं होगा।

उस ओर नवाब सिराजुद्दौला क्या करेंगे यह किसी भी तरहसे निश्चय नहीं कर पा रहे थे। एक तो लड़कपनसे ही व अत्यन्त अस्थिर चित्तके थे और उसके ऊपर सर्वसमयके फलस्वरूप जरा भी उनके मनका जोर नहीं था। इसके अलावा अपने विशिष्ट सामन्तों जैसे जमींदारों सामदानी अमीर-उमरावों तथा सरकारी कर्मचारियों आदि सभीको अपना दुर्व्यवहार के कारण अत्यन्त ही नाराज कर रखा था। इस समय किसीपर भी वे पूरी तरह विश्वास नहीं कर पा रहे थे। इसलिए एक बार सोचते कि अंग्रेजोंके साथ मित्रता कर उन्हें ही बुलावें और फिर दूसरे ही क्षण सोचते कि फ्रेंच लोग ही हमारे मित्र हैं, उन्हींके ऊपर निर्भर करें। असमंजसमें पड़कर आखिर तक किसीकी भी कोई भी व्यवस्था नहीं हुई।

दूसरे हो नवाबके मनको स्थिर कर देनेका भार क्लाइवने लिया।

वाट्सनके मारफत अदृश्यमें उन्होंने नवाबके साथ एक ऐसी लड़ाई चलाई जिसका नाम शीत युद्ध है अर्थात् आजकलकी सुपरिचित भाषामें कोल्ड वार। इसमें अस्त्र शस्त्रका प्रयोजन नहीं सैन्य सामन्तकी भी जरूरत नहीं। इसकी क्रिया शरीरके ऊपर नहीं होती मनके ऊपर होती है। केवल भय दिखाकर और भयभीत कर देनेकी विद्या जानी हुई होनेपर यह युद्ध अच्छी तरहसे हो चलाया जा सकता है। असलमें मनुष्यकी स्नायुओंपर सूक्ष्म भावसे इसका प्रभाव होता है, इसलिए इसका एक और नाम स्नायविक युद्ध दिया जा सकता है। अंग्रेजीमें इसका और भी अच्छा नाम है—वार आफ नर्वस।

वाट्सनके जरिये क्लाइव नित्यप्रति नवाबको तंग करने लगे। नवाब सन्धिकी इन शर्तोंको मान रहे हैं इन-इन शर्तोंको तोड़ रहे हैं, यह नहीं किया वह नहीं किया ऐसा-रोज नये-नये अभियोग उपस्थित करने लगे। वाट्सन अब वह वाट्सन नहीं थे। फ्रांसीसियोंको हराकर अंग्रेजोंके चन्दननगर ले-लेनेपर वे एकदम दूसरेके अवतार हो गये। अत्यन्त उत्साहके साथ व नवाबके पीछे पड़ गये। रोज एक-एक नया-नया अनुचित दावा उपस्थित करने लगे। हुगलीका रुपया दो पीछा-पीछी वापस करो कम्पनी-के कर्मचारियोंके खाये हुए माल-असबाबका दाम चुका दो आदि कितने प्रकारके दावोंका ब्यौरेवार चिट्ठा।

लेकिन बहुत खींचातानीसे जिसमें रस्सी टूट न जाय उस ओर भी क्लाइवकी सतर्क दृष्टि थी। नवाबका ठण्डा करनेके लिए बीच-बीचमें खूब विनम्रता भी दिखलाते। क्लाइवने नवाबको पत्र लिखा आपकी मित्रता ही हम लोगोंकी एकमात्र काम्य वस्तु है। ठीक मानिएगा कि आपके अनुग्रहको हमलोग अत्यन्त मूल्यवान् समझते हैं। लेकिन हालमें आपकी ओरसे इस अनुग्रहका परिचय कुछ कम मिला। इससे मैं अत्यधिक चिन्तित हो उठा हूँ।

कुछ ही बाद क्लाइवने फिर नवाबको लिखा कि आपके प्रति हमलोगोंका मनोभाव ठीक पहलेकी तरह ही है। हम लोगोंके बीच सन्धि होनेके

पहले जो कुछ भी हुआ था वह सब हम लोग भूल गये हैं। अब हम लोगों का मन बिल्कुल साफ है, आपके प्रति बिल्कुल सद्भावसे भरा हुआ है। पर अगर अन्ततक हम लोगोंमें प्रीतिका कोई लक्षण न देख पायें तब समझ लीजिएगा कि हम लोगोंके ऊपर आपकी कृपाके अभावसे ही वैसा हुआ है। चिरकालसे ही अंग्रेजोंका एक हाथ मस्तेपर और एक हाथ पैरपर रहता है गला दबानेमें जितना समय और फिर पैर पकड़नेमें भी उतना ही समय लगता है।

इसके बाद क्लाइवके उकसानेसे वाट्सन फिर नवाबके कानमें वही पुरानी एक ही बात सुनाने लगे कि हम लोगोंके शत्रु हैं इसलिए आपके भी शत्रु हैं। हम लोग नवाबके मित्र हैं अतएव हम लोगोंके शत्रु फ्रांसीसी लोग किसी तरह भी नवाबके मित्र नहीं हो सकते। इसलिए फ्रांसीसियों-का बंगालसे बिना देरी किये उखाड़ कर देना नवाबका परम कर्तव्य है। कासिम बाजारकी उनकी कोठीको अभी ही दखल कर लेना उचित है। वाट्सन हरदम सीखे हुए तोतेकी तरह रट लगाने लगे।

उस समय भी कासिम बाजारकी फ्रांसीसी कोठीके सर्दार ल-साहब थे। व सचमुचमें ही नवाबके हितैषी मित्र थे। किन्तु वाट्सनके लोगोंका मारनसे सिराजुद्दौला उन्हें भी मौके-बेमौके सन्देह करने लगे। ल-साहब कामके आदमी थे। क्लाइवने देखा नवाबके निकटसे इनको नहीं हटा सकनेपर व बादमें अंग्रेजोंको बहुत कष्ट देंगे। क्लाइव वाट्सनके द्वारा नवाबके प्रिय पात्रोंको रुपया देकर हाथ करनेकी चेष्टा करने लगे जिसमें कि व भी फ्रेंचों-के विरुद्ध नवाबके कानमें फूँकते रहें। लने स्वयं भी इसी प्रकारका रास्ता पकड़ा था। लेकिन पार कैसे पाएंगे ? अंग्रेजोंके समान फ्रांसीसियोंको रुपये का बल कहाँ है ?

दोनों ओरके खिंचावमें पड़कर नवाब बराबर इतस्ततः करने लगे। अन्तमें क्लाइवकी ही विजय हुई। एक ओर नवाबके जैसा अशिक्षित अविवेकी तथा कुकर्ममें आसक्त युवक और दूसरी ओर क्लाइवके जैसा

पुरन्दर पाण भी किसी तरह हार नहीं मानता किसी तरह पीछे पैर
हटाता। और इस पर अत्याचार, अनाचार, अधर्मसे नवाबके स्वास्थ्य, सु
दोनों ही शरीर बिल्कुल जर्जरित हो गये हैं। वे और कितनी देर
जूझते ?

[illegible] अन्तमें जाना ही पड़ा। १८वीं जूनको कासिम बाजारकी को
को छोड़कर स-सामान पटना-कोठीको चल। जानेके पहले विदा होने
सिराजुद्दौलासे कहते गये कि मित्र! यह अन्तिम विदा है और कभी
दोनोंकी भेंट होगी इसमें सन्देह है। भेंट हुई भी नहीं।

[illegible] अधीर होकर वाट्सनने एक दिनमें ही दस चिट्ठियाँ लिख
कलकत्तेमें सबको खबर भेज दी। एकके बाद एक पत्र जा रहे हैं।

• २४

घटनाएँ क्रमशः खूब पेचीदा हो उठीं। समस्या कठिन होनेपर
क्लाइवकी बुद्धि और तीव्र हो उठती है। अन्तमें क्लाइव खूब अच
तरह समझ रहे थे कि गुप्त रूपसे सिराजुद्दौलाके विरुद्ध एक जबर्द
षड्यन्त्र चल रहा है। उसके लिए नवाब सिराजुद्दौला एकदम असह्य
गये हैं। इसलिए शत्रुओंकी दृष्टि मन्त्रियोंकी ओर गई है। इस नवाबके हाथ
उन्हें अगर कोई बचा सकता है तो वह यही कप्तान [illegible] बहादुर है
और तो कोई नहीं दीख ही नहीं पड़ता। मैंच कोस चले गये हैं, इस सम
एकमात्र आशाके केन्द्र अंग्रेज लोग हैं।

क्लाइवके इसे मजबूत करनेपर भी षड्यन्त्र असलमें हिन्दुओंका
षड्यन्त्र था। पश्चिमी बंगालमें उस समय वीरभूमिको छोड़कर और सा
बड़े-बड़े परगनोंमें हिन्दू जमींदार ही थे। सिराजुद्दौलाके मारे उनके नाम
दम था। प्रकट रूपमें नहीं होनेपर भी भीतर-भीतर प्रायः सभी जमींदा
इस षड्यन्त्रमें शामिल थे। उनमें प्रधान नदियाके राजा कृष्णचन्द्र थे

बड़मानके राजाके बाद इज्जत-मानमें कृष्णनगरके राजा कृष्णचन्द्रका ही नाम था। वे अत्यन्त ही गुणग्राही थे। उस समयके लोग कहते हैं कि बंगालमें जो ब्राह्मण कृष्णचन्द्रकी दी हुई जमीन अथवा वृत्तिका भोग नहीं किये हुए हैं वह ब्राह्मण ही नहीं है।

जगत सेठके घरानेके मालिक महताबचन्द बंगालके महाजनोंके सिर मौर थे। जगत सेठ आदि जैन सम्प्रदायके होनेपर भी बहुत दिनों तक पुश्त-दर-पुश्त बंगालमें रहनेसे वे एक प्रकारसे हिन्दू समाजमें ही अन्तर्भुक्त हो गये थे। सिराजुद्दौलाके हाथों महताबचन्दको रोज ही कुछ न कुछ अपमान सहना पड़ता। उनको नाना प्रकारसे अपमानित करनेपर भी सिराजुद्दौला शान्त नहीं होते थे। उस दिन उनको पकड़कर मुसलमानी रीति-रिवाजके अनुसार सुन्नत करानेके लिए ले गये थे। अपने वकील रणजीतरायके मारफत गुप्त रूपसे वही अंग्रेजोंसे बात चलाने लगे। अंग्रेजोंकी ओर उमीचन्द थे। इस समय उमीचन्द अधिक समय मुर्शिदाबादमें ही रहते। नवाबके साथ भी उन्होंने अच्छी दोस्ती गाँठ ली थी। रुपया कमाकर उमीचन्दकी इच्छा इस बार पालिटिक्समें नाम कमानेकी थी। इसलिए पालिटिक्सके गुप्त मार्गपर उन्होंने आना-जाना शुरू कर दिया। लेकिन बादमें कहीं लोगों-को सन्देह न हो इसलिए बाहर व्यवसायीका रूप भी उन्होंने एकदम उतार नहीं फेंका।

हिन्दू सरकारी कर्मचारियोंमें इस दलके अगुआ हुए राय दुर्लभराम। सिराजुद्दौलाके शासनकालमें वे अपने ऊँचे पदसे बहुत नीचे उतार दिये गये थे लेकिन उस समय भी वे नवाबका नमक खाते थे। सिराजुद्दौलाके दरबारमें उस समय काश्मीरी हिन्दू मोहनलालकी खूब इज्जत थी। वे अवश्य ही इस ओर शामिल नहीं हुए। लेकिन कम उम्रके छोकरे इस विदेशी मोहनलालकी मुसाहिबी सभी पुराने कर्मचारियोंको असह्य हो उठी थी चाहे वे हिन्दू हों या मुसलमान।

हुगलीमें नन्दकुमार थे। अंग्रेजोंका होकर उमीचन्दने उन्हें काम

उसीका लोभ दिखा रखा था। अंग्रेजोंकी गतिविधिके सम्बन्धमें जितनी सब अविश्वसनीय खबरोंको नवाबके दरबारमें भेजनेका भार नन्दकुमारने लिया।

प्रधानतः हिन्दुओंका षड्यन्त्र होनेपर भी उनमें एक बड़ा-सा मुसलमान भी तो चाहिए। नहीं तो सिराजुद्दौलाके स्थानपर नवाब कौन होगा? जगत्सेठ स्वयं तो हो नहीं सकते। हिन्दू गवर्नर भी सब लोग पसन्द करेंगे इसमें सन्देह है। अकबर बादशाहके शासनमें मानसिंह जो एक बार बंगालके गवर्नर होकर आये थे उनके बाद और कोई हिन्दू बंगालके गवर्नर हुए, ऐसा नहीं देखा जाता। दिल्लीके बादशाह किसी हिन्दूको बंगालकी गवर्नरीका परवाना देंगे ऐसा तो किसीका विश्वास नहीं होता। इसलिए नवाबी गद्दी देनेके लिए एक मुसलमानको तो चुनना ही होगा।

जगत सेठ आदिने पहले ही आश्रित इयार लुत्फ खाँको सिराजुद्दौलाके बदले बंगालकी गद्दीपर बैठानेका मनमें निश्चय किया था। अमीचन्द भी सहमत थे। लेकिन क्लाइवने अन्य प्रकारसे निश्चित किया। वे ऐसे आदमीको नवाब बनाना चाहते थे जो अंग्रेजोंके अधीन रह उन्हींकी बात मानकर चलेगा। अवश्य ही मनकी बात उन्होंने मनमें ही रख ली। प्रकट रूपसे बोले ऐसे आदमीका नवाब होना उचित है जिसको सब लोग मानें। इयार लुत्फ कामके आदमी होनेपर भी खानदानी नहीं है। उनके नवाब होनेपर फिर नवाबी-पदके लिए लड़ाई छिड़ जायगी। अन्तमें जगत सेठने भी क्लाइवकी बातको युक्तिसंगत समझकर मान लिया।

क्लाइवने मन ही मन मीर जाफरको बंगालका भावी नवाबी-पदके लिए मनोनीत कर रखा था। उन्होंने मीर जाफरको उस समय तक भी आँखोंसे देखा नहीं था केवल वाट्सका विवरण सुनकर ही उन्होंने तय किया था। विचित्र बुद्धि थी। उन्होंने अंग्रेजोंके पक्षके लिए उपयुक्त व्यक्तिको ही चुना।

मीर जाफर सिराजुद्दौलाके रिश्तेदार थे। अलीवर्दी खाँकी एक सौतेली

बहनके साथ उनका विवाह हुआ था। मीर जाफर निरक्षर किन्तु विश्वास-घाती थे। बंगालका नवाब होनेकी उनकी कामना बहुत दिनोंकी थी। वर्गियोंके उपद्रवके समय अलीवर्दीका खून कर बंगालकी गद्दी लेनेकी चेष्टा भी उन्होंने एक बार की थी। लेकिन अन्त तक सफल नहीं हुए। इसके बाद शौकत जंगसे मिलकर सिराजुद्दौलाके सर्वनाशकी कोशिशमें थे। इस बार फिर बंगालके नवाबीके पदके लोभसे सिराजुद्दौलाके विरुद्ध चरम विश्वासघात करनेके लिए राजी हो गये। परिणामकी अच्छी तरहसे बिना जमा किये गये अनिष्टोंमें जो जो जानें दीं उन सबोंका मीर जाफरने कबूल कर लिया। राज्य-लाभ ऐसी ही लोभकी वस्तु है।

मीर जाफरको अपने भी बहुतसे सैनिक थे। अवसर आते ही व नवाबका छोड़ अंग्रेजोंसे सम्मिलित साथ होकर सिराजुद्दौलाके विरुद्ध युद्ध करेंगे यही तै हुआ। इसके अलावा उस समय यद्यपि मीर जाफर नवाबी फ़ौजके बख्शी नहीं थे—सिराजुद्दौलाने उन्हें उस पदसे हटा दिया था—फिर भी सरकारी फ़ौजपर उनका प्रभाव उस समय भी कुछ कम नहीं था।

जब सब प्राय ठीक हो गया तब उमीचन्दने झंझट पैदा किया। उनके साथ मीर जाफरका मेल नहीं था। उन्होंने सोचा कि मीर जाफरके नवाब होनेपर उनके हाथसे व एक पैसा भी निकाल नहीं सकेंगे। राज-काजमें भी उन्हें कोई सुविधा नहीं मिल सकेगी। उसमें उनका कोई हाथ ही नहीं रहेगा। उनका सारा परिश्रम ही व्यर्थ जायगा। इधर लुत्फ खाँके नवाब होनेसे उन्हें दो पैसेकी प्राप्तिकी बड़ी आशा है। पालिटिक्समें बड़ा एक गुट होनेकी भी उम्मीद है।

पहले अपना हिस्सेका पक्का बन्दोबस्त कर लेनेके लिए उमीचन्दने अंग्रेजोंको सूचित किया कि सिराजुद्दौलाकी जो धन-राशि अंग्रेजोंके हाथमें आयेगी उसमें उनको सैकड़े पाँच रुपया अथवा एक मुश्त तीस लाख रुपया देना होगा। नहीं तो षड़यन्त्रकी बात वे नवाबके पास खोल देंगे।

अमीचन्दको मालूम नहीं था कि वे किससे कमन गये हैं। सत्रठामें क्लाइव सर्वं सात कम्पलक छिपा दे सकते थे। क्लाइवने पहले तो ऐसा दिखलाया कि उमीचन्दके प्रस्तावसे वे बिल्कुल असहमत हैं। तुरन्त सम्मत हो जानेपर बादमें कहीं उमीचन्दको सन्देह न हो जाय इसीलिए क्लाइवने पहले उनकी बातोंपर ध्यान नहीं दिया। इसके बाद दस्तूर करनेका थोड़ा स्वाँग भरनेके बाद क्लाइव तीस लाखके बदले उमीचन्दको एक मुश्त बीस लाख रुपये देनेको राजी हो गये।

क्लाइवने दो शर्तनामे बना डाले। एक असली और दूसरा जाली। पहचानके लिए एक सफेद कागजपर लिखा हुआ था और दूसरा लाल कागजपर। लाल कागजपर उमीचन्दके हिस्सेमें लूटके मालका अंश बीस लाख रुपये और सफेद कागजपर उनके हिस्सेमें बिल्कुल शून्य उनका नाम-निशानतक नहीं था।

दोनों शर्तनामोंपर अंग्रेजोंकी ओरसे दस्तखत किया गया और सील-मुहर लगाया गया। मीर जाफरने पहले हीसे लाल कागजपर अपने दस्तखत कर दिया था। लेकिन एडमिरल वाट्सन जाली कागजपर दस्तखत करनेके लिए राजी नहीं हुए। तब क्लाइवने लुशटन नामक एक छोकरा केरानीसे लाल कागजपर वाट्सनके नामका जाल करा लिया। बेचारा लाशिंगटन कालकोठरीसे बच गया था लेकिन बादमें सन् १७६३ ई०में मीर कासिमके पटनाके हत्याकाण्डमें उसने प्राण गँवाये।

लाल कागज पढ़कर उमीचन्द खुशीसे फूले नहीं समा रहे थे। वे कल्पनाकी उमंगमें सात राजाकी सम्पत्ति हीरा जवाहर आदिका स्वप्न देखने लगे।

इसके बाद मीर जाफरका दस्तखत करा लेनेके लिए सफेद कागज कासिम बाजारमें वाट्सके पास भेजा गया। ४ जूनको एक ढकी हुई डोली में बैठकर जनानी सवारीके रूपमें वाट्स गुप्त रूपसे मीर जाफरके अन्तःपुरमें जा उनसे भेंट कर उनका दस्तखत करा लाये। वाट्सका भेजा हुआ

शर्तनामा कलकत्तेकी सेलेक्ट कमिटी ११ जूनको पा गई। उधर और कुछ बाकी नहीं रहा।

शर्तनामेमें बहुत कुछ लिखा हुआ था। उसका सारांश यही था कि मीर जाफरको बंगालकी गद्दीपर शिखण्डीकी तरह बैठाकर अंग्रेज ही असलमें राज्य चलायेंगे और नवाबकी गद्दीके बदले राज्य चलानेका अंग्रेजों-का खर्च नवाब मीर जाफर खाँ जुटायेंगे। बहुत तरहके डिवीजन आफ लेबरकी बात इतिहासकी किताबोंमें पढ़नेको मिलती है लेकिन इस प्रकारकी हिस्सेदारीकी बात तो कहीं भी देखनेको नहीं मिलती।

षड्यन्त्रकी बात विस्तारसे नहीं जाननेपर भी गुप्त रूपसे उसकी चर्चा चल रही थी उसकी भनक सिराजुद्दौलाके कानोंमें भी अवश्य पड़ी। लेकिन दूसरी कोई व्यवस्था न कर सकनेपर क्रुद्ध होकर उन्होंने अंग्रेजोंके देशी वकीलको दरबारसे अपमानित कर निकाल दिया। अंग्रेजोंको डरानेके लिए फौजकी एक टुकड़ी दुर्लभरामके साथ पलासीके मैदानमें भेज दी। १२ जून को इस खबरके बरानगर पहुँचते ही क्लाइवने हुक्म दिया स्ट्राइक दि टेन्ट। दूसरे दिन गंगा पार कर मुर्शिदाबादकी ओर मार्च शुरू हो गया।

सेलेक्ट कमेटीने वाट्सको लिख दिया कि समय रहते कासिम बाजार की अंग्रेजी कोठीके सभी अंग्रेज जिसमें कलकत्ता चले आवें। कलकत्तेमें जो फौज थी उसे ही सेलेक्ट कमिटीने क्लाइवकी सहायताके लिए मेजर किलपैट्रिकके साथ रवाना कर दी। इन लोगोंको चन्दननगर तक पहुँचा जानेके लिए एडमिरल वाट्सनने एक जहाज छोड़ दिया।

इसके पहले ही कासिमबाजारके अंग्रेजोंने एक-दो करके भागना शुरू कर दिया था। बाकी रह गये थे केवल वाट्स और उनके साथी मैथ्यू कलेट और वर्मी साइक्स। इसके पहले लूक स्क्राफ्टन भागते समय उमीचन्दको साथ लेते गये। जिसमें बादमें मुर्शिदाबादमें और कुछ गड़बड़ी न करे।

नवाबके दरबारमें जाकर वाट्सने बतलाया कि वे शिकार खेलने

मारीपर आ रहे हैं। मादापुरमें अंग्रेजोंकी एक बागानबाड़ी (उद्यान-गृह) थी। बीच-बीचमें कासिमबाजारके अंग्रेज वहाँ जाकर आमोद प्रमोद करते दिखाई पड़ने। सिराजुद्दौला कुछ भी सन्देह नहीं कर सके। वाट्सकी विनम्रतासे सन्तुष्ट होकर उन्होंने जानेकी अनुमति दी। लेकिन क्या शिकार समझा था इसका बिन्दुमात्र भी अन्दाज सिराजुद्दौला न लगा सके।

सुबे मैदानमें आ वाट्स और उसके साथियोंने सईसोंको विदा कर दिया। एक नौकरका साथ ले घोड़ा दौड़ा दे अग्रद्वीपके पास आ पहुँचे। नदीके किनारे नौकरके हाथमें घोड़ा छोड़ एकदम नावमें जा बैठे। गंगा पार कर उनको वे कालना आ गये। वहाँ जाकर उन लोगोंने देखा कि क्लाइव १४ उनको वे कालना आ गये। वहाँ आकर उन लोगोंने देखा कि क्लाइव सेना दल बल लेकर पहले ही वहाँ पहुँच चुके हैं। वाट्स वगैरह क्लाइव के पास ही रह गये। फिर कलकत्ता नहीं गये।

वाट्सके भागनेकी खबर पाकर सिराजुद्दौलाकी आँखें खुलीं। इस दिन कभी भय दिखाकर कभी विनम्रतासे मुग्ध कर वाट्स और क्लाइवने उन्हें मोहाच्छन्न कर रखा था। इसपर वे स्वभावसे ही अस्थिरचित्त मन-मानी करनेवाले व्यक्ति थे। उनके मिजाजका ठीक ठिकाना पाना कठिन था। इसके कुछ दिन पहले एक बार क्रुद्ध होकर मीर जाफरको कैद करनेकी कोशिशमें थे। आज फिर उसी मीर जाफरके पास दीनभावसे क्षमा माँग कर अंग्रेजोंके विरुद्ध सहायता करनेकी भिक्षा माँगी। बनवासकी प्रीति वालूकी भीति है जनम हाथमें झपकी पड़ती है और जब होने हाथमें चाँद आ जाता है।

इसी समय नवाबके पास क्लाइवकी चिट्ठी आई कि वे न्याय कराने के लिए मुर्शिदाबाद आ रहे हैं। इस बार सन्धिकी सभी शर्तोंको अच्छी तरह समझ एक निश्चयपर पहुँचना चाहिए। मुर्शिदाबादमें बहुतसे मान्यमान्य व्यक्ति हैं वे जो न्याय करेंगे क्लाइव उसे ही सर-आँखोंपर ले लेंगे।

सिराजुद्दौलाने देखा अंग्रेजोंके साथ लड़ाई करनेके सिवा दूसरा कोई चारा नहीं है। नवाबके हितैषियोंने सलाह दी कि क्ल-साहबको पलटेस पु

भेजा जाय। उनके यहाँ आने तक युद्ध छेड़ना उचित नहीं होगा। इस बीच मीर जाफरको बन्दी बनाकर रखा जाय यह सलाह भी बहुतोंकी थी। दुविधामें पड़े-पड़े सिराजुद्दौला कुछ भी नहीं कर सके।

नवाबने देखा कि उनके सेनापति और उनकी फ़ौज किस प्रकारसे विभ्रान्त हो गयी है, उसमें और अधिक देरी करनेपर सभी उनके विरुद्ध षड्यन्त्रमें शामिल हो जायेंगे। राजधानी छोड़कर वे पलासीके मैदानकी ओर चले। उन्हीं मार्गसे होकर ही क्लाइवको मुर्शिदाबादमें घुसना पड़ता। मैदानसे दो मील उत्तर भागीरथी नदीके घुमावदार किनारेपर उनके सैन्य सामन्तने पहलेसे ही मिट्टी काटकर सुरंग बनाकर अड्डा जमाया है। क्रूर नियति सिराजुद्दौलाको उसी ओर खींच ले गई। यमराज मूर्तमति से उनकी ओर भाग लगे।

३५

१४ जून सन् १७५७ ई०। गंगाके किनारे-किनारे अपनी फ़ौज लेकर क्लाइव काल्ना पहुँच गये। मुर्शिदाबादसे आकर मीर जाफरके यहींपर क्लाइवके साथ शामिल होनेकी बात थी। लेकिन वे नहीं आये।

क्लाइवने एक बार सोचा भूल तो नहीं की? केवल मीर जाफरकी बातपर ही इतना निर्भर करना क्या उचित हुआ? जो भी हो वे हैं तो विश्वासघाती। ऐसे आदमीकी बातपर विश्वास कर इतनी दूर बढ़ना क्या बुद्धिमानी हुई?

कलकत्ते सेलेक्ट कमिटीके पास क्लाइवने लिखा कि जब तक मीर जाफर आ नहीं जाते तब तक वे गंगा पार करें या नहीं यही सोच रहे हैं। सेलेक्ट कमिटीने लिखा था भी। कुछ चिन्ता नहीं आगे बढ़ जाओ। लेकिन चिट्ठी ऐसी घुमावदार भाषामें लिखी गई थी कि आगे बढ़नेपर विनाश पीछे हटनेपर भी वही। अर्थात् आगे बढ़नेपर युद्धमें अगर हार हो तो भी क्लाइवका दोष और पीछे हटनेपर कोई विपत्ति आवे तो

यही बर्गीका कसूर। सौभाग्यवश यह चिट्ठी जब नवाबके हाथमें आई, तब सब खतम हो गया था।

और आगे नहीं बढ़नेपर भी तो चुपचाप कालनामें बैठा नहीं जा सकता। ११ जूनको कुछ फौज लेकर आयर कुटने कटवाके किलेको दखल कर लिया। कैप्टेन कुट उस समय मेजर आयर कुट हो गये थे। दो दिन पहले ही क्लाइवने उन्हें कैप्टेनके पदसे मेजरके पदपर पहुँचाया है। अधिक लड़ना नहीं पड़ा। मेजर आयर कुटके किलेके पास पहुँचते ही नवाबके आदमी किला छोड़कर चले गये। वहाँ प्रचुर खाद्य सामग्री मिली।

कटवामें भी मीर जाफर नहीं मिले। वहाँ दो दिनोंतक प्रतीक्षा करनेपर भी मीर जाफरकी कोई खबर नहीं मिली। इस समय अब बिना कुछ किये काम नहीं चलेगा। अब शीघ्र ही बरसात आ रही है। और यह भी खबर मिली है कि नवाबने पटनासे चले आनेके लिए ला को पत्र लिखा है।

जीवनमें यही पहला और यही अन्तिम है, किंकर्तव्य-विमूढ़ होकर अपने सेनाध्यक्षोंको परामर्श करनेके लिए क्लाइवने बुला भेजा। मन्तव्यका विषय था अभी आगे बढ़कर नवाबपर आक्रमण करना उचित है अथवा बरसात यहीं बिताकर वर्षा खतम होनेपर मराठोंकी सहायता लेकर नये सिरसे उद्योग करना होगा।

वोट लिया गया। और आगे बढ़नेके विरुद्ध ही क्लाइवने अपना वोट दिया। बीस आदमियोंमें तेरह आदमियोंका यही मत था। बाकी सात आदमी जो उसी समय युद्ध करनेके लिए तैयार थे उनमें मेजर आयर कुट प्रमुख थे। उन्होंने युक्ति दी कि हम लोग एकके-बाद-एक सभी जगह विजयी हुए हैं इसलिए हमारी पल्टनके सिपाहियोंका मन दुगुना बढ़ गया है। अब इतनी दूर बढ़कर चुपचाप बैठे रहनेसे उनका उत्साह एकदम ठण्डा पड़ जायगा। और यदि प्रतीक्षा ही करनी है तो यहाँ इस मैदानके बीच क्यों? इससे तो कलकत्ते ही लौट जाना अच्छा है। लेकिन वहाँ जानेपर तो अब सभी एक स्वरसे धिक्कारेंगे।

मन्त्रणा-सभा खतम हुई। दोनों हाथ पीठेकी ओर मिलाकर गर्दन झुकाकर सोचते-सोचते एक कमीचमें क्लाइव चहलकदमी करने लगे। एक घण्टेके बाद ही उनका मन स्थिर हो गया। आयर कूटको बुलाकर उन्होंने हुक्म दिया कल सबेर ही फिर मार्च शुरू होगा।

मीर जाफर स्वयं तो नहीं आये। लेकिन उसी दिन तीसरे पहर उनकी एक चिट्ठी आ गई। उन्होंने लिखा था कि नवाबके द्वारा नजरबन्द किये जाकर व पलासीके मैदानमें ही बैठे हुए हैं, आगे बढ़नेका कोई उपाय नहीं है। वहीं दोनों दलोंकी मुठभेड़ होगी। क्लाइव भी तथास्तु कह सबेरे होनेवाले मार्चका निरीक्षण करने चले गये।

२२ जून। सबेरे ही यात्रा शुरू हुई। अग्रद्वीपके पास गंगा पार कर रातमें बारह बजे अपने दलबल सहित क्लाइव पलासीके मैदानमें पहुँच गये।

सामने ही छाती भर ऊँची मिट्टीकी दीवारसे घिरा हुआ दस हजार बीघेका एक आमका बाग था। उसका नाम लख बाग था। आमके एक लाख पेड़ उस बागमें कतारके-कतार खड़े थे। इसी बागमें क्लाइवके सैनिकोंने रात भर आश्रय लिया।

बागकी बगलमें ही बायीं ओर गंगाके ठीक ऊपर प्राचीरसे घिरा हुआ एक पक्का मकान था। नवाब जब इस ओर शिकार खेलने आते तो वही उनके विश्रामका स्थान होता। क्लाइव और उनके सेनाध्यक्षगण उसी मकानमें आकर रहे। उसी समय गुप्तचरोंके मुँहसे खबर मिली कि सामने ही डेढ़ मीलके भीतर नवाब सिराजुद्दौला अपनी फौजके साथ प्रतीक्षा कर रहे हैं।

: २६ :

दूसरे दिन २३ जून सन् १७५७ ई० बृहस्पतिवार।

भोर होते-न-होते दूर युद्धके बाजे बजने लगे। उस समय भी अच्छी तरहसे सबकी नींद नहीं खुली थी। शिकार-गाहकी छतपर चढ़कर क्लाइवने

दूरबीन लगाई। देखा कि नवाबके सैनिक छावनीसे बाहर निकल पड़े हैं। वह जैसे मनुष्योंका एक विशाल समुद्र था। आमके बागके सामने दाहिनी ओर अर्ध चन्द्राकारमें खड़ी होकर वह विशाल वाहिनी अंग्रेजोंको बिलकुल घेर लेनेके फेरमें थी। क्लाइवकी छाती जैसे काँप गई। उनकी सारी फ़ौज मिलकर नवाबकी विशाल सेनाके बीस भागका एक भाग भी नहीं होगी।

शिकार-गृहको छोड़कर क्लाइव नीचे उतर आये। आमके बागसे फ़ौजको बाहर लाकर बागके प्राचीरके सामने ही युद्धके लिए सजा दिया। बीचमें गोरे थे। उनके दाहिने-बायें तीन-तीनके हिसाबसे छः तोपें थीं। सफ़ेद मुँह, लाल कुर्तीवाले गोरोंकी दोनों बगलमें काले तैलंग सिपाही और देशी लाल पल्टन थी। अंग्रेज़ोंसे ही उन्होंने आधुनिक युद्ध-विद्या सीखी थी। थोड़ेसे सैनिक रसदघर पहरा देनेके लिए आम-बागके भीतर रह गये।

मेजर जेम्स किलपैट्रिक, मेजर आर्चीबाल्ड ग्रान्ट, मेजर आयर कूट, कैप्टेन आर्ज गप—यही चार अंग्रेज अफ़सर सैन्य-परिचालनके लिए रहे। क्लाइव स्वयं तो सबके ऊपर थे ही।

उनकी बायीं ओर गंगा थी। उसके ऊपर ही वह शिकार-गृह। तब उसके लिए वह अंग्रेजोंकी फ़ौजका हेड क्वाटर् था।

नवाबकी ओर अंग्रेजोंके सामने ही दो सौ गज फ़ासले एक छोटेसे पोखरके किनारे सिन्फ्रे नामक एक फ्रेंच फ़ौजी अफ़सर खड़े थे। उनके साथ पैंतालीस फ्रांसीसी गोलन्दाज और चार छोटी-छोटी तोपें थीं। उसके ठीक पीछे मीर मदनके सेनानायकत्वमें नवाबकी एक दूसरी सेना थी।

मीर मदनकी बायीं ओर एक बहुत बड़ी जमातको लेकर काश्मीरी सेना-पति मोहनलाल थे। वहाँ सब मिलकर पाँच हज़ार घुड़सवार और सात हज़ार पैदल सिपाही थे। नवाबकी बाक़ी फ़ौज एक घेरे हुए ईंटके पजावे-के किनारे एक ऊँचे टीलेके ऊपर थी।

इसके ऊपर फिर अंग्रेजोंकी बायीं ओर गोलाकार हो राजदुर्लभ हज़ार

लुत्फ खाँ और मीर जाफर डटे हैं। उनसे दक्षिणकी ओर पलासी ग्राम अस्पष्ट-सा दीख रहा है।

सब मिलाकर अंग्रेजोंके पास ९५० गोरे, २१०० सिपाही ८ छोटी तोपें और दो बड़ी तोपें थीं। नवाबकी ओर पैदल और घुड़सवार मिलकर ५० हजार सैनिक और ५३ बड़ी-बड़ी तोपें थीं। नवाबके सेनानियोंका क्या विचित्र चेहरा था! क्या रंग-बिरंगा साज-पोशाक था। नवाबी फ़ौजमें सब प्रदेशके लोग दिखाई पड़ रहे हैं।

भोर आठ बजे लड़ाई शुरू हो गई। पहले ही सीफ्रेन तोप दागी। आधे घण्टेके भीतर अंग्रेजोंके तीस आदमी घायल हो गये। क्लाइवने देखा कि उनके एक-एकके बदले अगर नवाबके दस-दस आदमी भी मरें तो भी लड़ाई जीती नहीं जा सकती। थो समयमें वे ही निश्चिह्न हो जायेंगे। वे बेकारमें शक्तिको नष्ट न कर धीरे-धीरे पीछे हटकर सबको फिर आम बाग के भीतर ले गये।

अंग्रेजोंका पीछे हटते देख नवाबकी फ़ौज कुछ आगे बढ़ी। लेकिन यथाशक्ति तोप छोड़ गोली चलाकर भी अंग्रेजोंका नुकसान न कर सकी। सब गोले-गोलियाँ अंग्रेजी पल्टनके सिरके ऊपरसे निकल जाकर बागके लम्बे-लम्बे मजबूत आमोंकी डालोंको तोड़ बाहर छिटककर जा पड़ीं।

इधर आमके बागमें घुसकर प्राचीरमें थोड़ा-सा सुराख करके उसके भीतर तोपका मुँह डालकर अंग्रेज लोग खूब ठीक तोप छोड़ने लगे। कितना अद्भुत उस तोपका निशाना था। कैसी भीषण उसकी संहार शक्ति थी। नवाबकी ओर अनगिनत लोग मारे गये। असावधानीसे रखी हुई बहुत-सी बारूदकी गाड़ियोंपर गोला पड़ते ही देखते-देखते हवा होकर उड़ गई। ग्यारह बजे तक दोनों पक्ष लगातार केवल तोप दागते रहे। केवल पैंतरे बाजी होती रही लड़ाईका कुछ भी फलाफल नहीं हुआ। तब तक न किसी की हार हुई न किसीकी जीत।

क्लाइवने सोचा इस प्रकार शाम तक चलानेपर रातमें एक बार व

नवाबी फ़ौजपर प्रहार कर देखेंगे। रातमें देशी फ़ौज आम तौरसे लड़ाई नहीं करना चाहती। रात्रि-युद्धमें वे भयकारी दृश्य देखते हैं। क्लाइव भारतमें युद्धकी जानकारी होनेसे लड़ाइयोंकी यह भलीभाँति मालूम था।

३७ :

ग्यारह बजेके बाद अचानक खूब ज़ोरोंकी बौछार हो गई। आध घण्टेतक लगातार वर्षा होनेसे सारा मैदान कीचड़-ही-कीचड़ हो गया। वर्षा रुकनेपर अंग्रेज़ फ़्रान्सीसियोंके गोलेका जवाब देनेको तैयार हुए। लेकिन आश्चर्य यह कि नवाबकी ओरसे कोई आवाज़ ही नहीं सुनाई पड़ रही थी। बात यह थी कि नवाबकी ओरसे बारूदकी गाड़ी ढकी हुई नहीं थी। गोला-बारूदमें तिरपाल ओढ़कर बाहर निकालते-निकालते ही सब बारूद भीगकर नष्ट हो गई।

वर्षाका वेग रुकनेपर नवाबके सेनापति मीर मदनने सोचा कि शायद है कि अंग्रेज़ोंकी भी यही एक ही दशा हुई है। उनकी बारूद भी शायद बेकार हो गई। यही सोचके वे एक हज़ार सैनिक लेकर अंग्रेज़ोंकी ओर धावा बोलने लगे। मनमें विचारा कि यदि मारसे न कटें तो मारसे तो निश्चय ही कटकर खत्म हो जायेंगे। इधर अंग्रेज़ोंकी बारूदकी गाड़ी अच्छी तरह ढककर रखी हुई थी। उसका कुछ भी नहीं बिगड़ा।

नवाबके सैनिकोंको आगे बढ़ते देखकर अंग्रेज़ोंने फिर खूब गोला-गोली चलाई। उससे नवाबकी ओरके मीर मदन मीर मदनके दामाद बड़ी अली खाँ नौबे सिंह हज़ारी—बड़े-बड़े सेनापति—तथा और भी बहुत-से छोटे मोटे सेनाध्यक्ष युद्धक्षेत्रमें ही मारे गये। नवाबकी सेना धीरे-धीरे पीछे हटने लगी। हटते-हटते बिल्कुल छावनीके मुँहपर आ गयी। इसके बाद वहाँपर काटी हुई सुरंगके भीतर जाकर छिप गई। अपनी जगहके मोर्चेको रक्षा करते हुए केवल फ़्रान्सीसी तोपें और उनके संगी लोग रह गये।

आमके बागकी बायीं ओर मीर जाफ़र, इयार लुत्फ़ खाँ राय दुर्लभ

बुतकी तरह मुँह बाये खड़े रहे। जरा भी हिलते-डुलते नहीं, जैसे मजा लूटते हुए तमाशा देख रहे हैं। क्लाइवने उनको भी नहीं छोड़ा। उनका क्या इरादा है यह समझ नहीं सकनेके कारण उनपर ऊपर भी उन्होंने तोपें चलाई जिससे कि अधिक पास न बढ़ सकें।

बादमें अंग्रेजोंको कहते सुना गया कि मीर जाफर और उसके दोनों साथी देख रहे थे कि कौन पक्ष अन्तमें जीतता है। यदि वे देखते कि अंग्रेज हार रहे हैं तो अन्तिम क्षणमें उनकी गर्दनपर कूद युद्ध जीतनेकी बहादुरी का दावा वही करते। विश्वासघातियोंका भाग्य इसी प्रकारका होता है। कोई भी पूरी तरह उनका विश्वास नहीं करता। इसीको कहते हैं कि जिसके लिए चोरी करे, वही कहे चोर।

नवाबकी ओरके उन तीन विश्वासघाती व्यक्तियोंको अगर छोड़ भी दिया जाय तो भी नवाबके जो सैन्य सामन्त थे वे अगर धीर स्थिर होकर बुद्धिमानीसे सब समेटकर युद्ध करते तो अंग्रेजोंके थोड़े-से उन कई आदमियोंको कुचलकर गंगाके जलमें बहा देना उनके लिए कोई मुश्किल नहीं था। लेकिन क्या होता और क्या नहीं होता इसे सोचनेसे अब क्या फायदा? जो हुआ वह तो अब नहीं लौटेगा? और यही तो इतिहास है।

युद्धमें सेनापति मीर मदनकी मृत्यु हो गई यह सुनकर नवाब सिराजुद्दौला हतोत्साह हो सिरपर हाथ रखकर बैठ गये। उठ-पड़कर और युद्ध करना चाहिए यही नहीं हुआ। और किसी प्रकारकी चेष्टा ही उन्होंने नहीं की। केवल मीर जाफरको बुलवाकर अपनी पगड़ी उसके पैरोंपर रख आरजू-मिन्नत करते हुए बोले इस समय मेरे प्राण मेरा मान तुम्हारे ही हाथोंमें है। रखना चाहो तो तुम्हीं रख सकते हो मारना चाहो तो तुम्हीं मार सकते हो।

विश्वासघाती मीर जाफरने कुरान छूकर कसम खायी कि वे नवाबकी रक्षा करेंगे। अंग्रेजोंसे अच्छी तरह लड़ेंगे। लेकिन उस दिन और नहीं। उस दिनके लिए बन्द रहे। सभी इस समय छावनीमें लौट जायें। दूसरे

दिन भोरमें अंग्रेजोंको एक बार अच्छी तरह एक हाथ देख लिया जायगा। यही परामर्श देकर मीर जाफर चले गये।

लेकिन अपने स्थानपर लौटकर आते ही मीर जाफरने क्लाइवको एक चिट्ठी लिखी आमके बागसे निकलकर नवाबकी सेनापर धावा करनेका यही उपयुक्त समय है। अंग्रेजोंका भाग्य अच्छा था कि यह चिट्ठी क्लाइवके हाथमें पलासी युद्ध खतम होनेके बाद आई।

एक विश्वासघातीके जानेके बाद दूसरे विश्वासघाती आये। राय दुर्लभने भी नवाबको उस दिन युद्ध बन्द रखनेकी सलाह दी। इसके बाद वे यह भी बोले कि इस समय नवाबको स्वयं युद्ध क्षेत्रमें रहनेकी कोई आवश्यकता नहीं है। राजमें मोर्चेकी रक्षाके लिए तो सेनापतिगण ही काफी है।

लेकिन मीर जाफरके उपदेशके मुताबिक सेनापति मोहनलाल लड़ाई बन्द करनेको राजी नहीं हुए। उन्होंने कहा कि इस साधारण बातसे अगर वे लोग पीछे हट जायें तब तो युद्ध यहीं खतम है। उनकी हार है। कल और किसी तरह भी सहना नहीं होगा। फिर अंग्रेजोंपर आक्रमण करनेके लिए मोहनलाल उद्योग करने लगे।

इधर युद्धको कुछ नरम पड़ा हुआ देख क्लाइव भीगे हुए कपड़ोंको बदलनेके लिए शिकार-गृहमें गये। कपड़े बदल सकता है कि वे थोड़ा सो गये थे। असम्भव नहीं है, क्योंकि खूब ही थके हुए थे। जागकर देखते हैं कि कोई पुकार रहा है। उन्होंने सुना कि मेजर किलपैट्रिक युद्ध क्षेत्रमें फ्रान्सीसियोंको अकेला देख क्लाइवका हुक्म लेनेके पहले ही उनको खबर कर देनेके लिए आदमी भेजकर आमके बागसे कुछ सैनिक लेकर पोखरेके किनारेपरके तोपोंकी ओर आगे बढ़ गये हैं।

एक ही दौड़में वहाँ आकर क्लाइवने मेजर किलपैट्रिकको पहले तो थोड़ी डाँट बतायी। इसके बाद चारों ओर निगाह फेंककर देखा कि किलपैट्रिकने काम ठीक ही किया है। वे स्वयं वहाँ उपस्थित रहनेपर ठीक

यहा करते। मैदानमें फ्रेंच बिल्कुल अकेले थे। अन्य सभी युद्ध क्षेत्र छोड़कर छावनीकी ओर चले गये हैं।

इसका ठीक कारण क्या है क्लाइव यह समझ नहीं सके। मीर मदन कुछ पहले ही मारे जा चुके हैं नवाब अत्यधिक विचलित हो गये हैं—मीर जाफर आकर उस दिनके लिए युद्ध बन्दकर देनेको कह गये हैं—भीतर ही भीतर इतनी घटनाएँ हो चुकी हैं उस समय तक वे कुछ भी नहीं जानते थे।

किलपैट्रिकको आस-पाससे और कुछ फ़ौज लानेके लिए कहकर क्लाइव स्वयं फ्रेंचोंकी ओर आगे बढ़ चले। चारों ओर देखकर फ्रान्सीसी अच्छी तरह समझ गये कि इन्हीं चन्द आदमियोंको लेकर उन लोगोंको अकेले ही क्लाइवके साथ जूझना पड़ेगा। यह कोशिश बेकार थी। अंग्रेजोंके और भी आदमी आस-पाससे निकले आ रहे हैं, यह देख व काम तोपोंको छोड़ धीर शान्त भावसे पीछे हट नवाबकी छावनीमें घुसनेके द्वारपर जहाँ क़िलेबन्दी की गई थी वहीं जाकर कतार बाँध खड़े हो गये। फिर तोपोंको मिला वहीं चम्पट तैयार कर दिया।

आगे बढ़कर फ्रान्सीसियोंके छोड़े हुए पोखरके उस किनारेको क्लाइवने दखल कर लिया। यह देख फ्रान्सीसी लोग भाग गये स्थानसे इस प्रकार गोला चलाने लगे कि लगता है जैसे जन्मभरका बदला उन्होंने यहींपर अंग्रेजोंसे लेनेका निश्चय किया है।

फ्रान्सीसियोंको इस प्रकार लड़ते देख मोहनलाल आदि अन्य सेनापति फिर युद्ध करनेके लिए खाईकी सुरंगसे बाहर निकल पड़े। इसे देख क्लाइव थोड़ी-सी फ़ौज पोखरके किनार पहरेके लिए रख और बाक़ी आगे बढ़ उसी ईंटके पजावाके टीलेपर चढ़ गये। उस जगहसे नवाबकी छावनीके मुँहका फासला केवल दो सौ गजका था।

उसी बीच यहाँपर एक अच्छी ख़ासी लड़ाई हो गई। नवाबके सैनिक

यथाशक्ति अपनी बारूद फूंककर भरी नालवाली बन्दूकसे गोली चलाने लगे। लेकिन कब बाबा आदमके जमानेकी पुरानी बन्दूकोंसे क्लाइवके आधुनिक गोले-गोलियोंको क्या रोका जा सकता था? इसके अलावा नवाब की फ़ौजका कौन संचालन कर रहा है, यह भी ठीक समझमें नहीं आता था। जिससे जैसा बन पड़ा अपनी-अपनी इच्छाके अनुसार विशृंखल भावसे युद्ध करता रहा। इससे और चाहे जो हो युद्ध नहीं जीता जा सकता।

छावनीसे बाहर आकर नवाबकी फ़ौज फिर दम बाँध एक कतारमें खड़ी न हो सकी। अच्छी तरह सेनाका परिचालन करनेवाले आदमीके अभावमें माल ढोनेवाली बैलगाड़ी घुड़सवारोंके घोड़े सामनेकी ओर बढ़कर कीचड़में फँसने लगे। बढ़नेवाले पीछे रह गये। क्लाइवके एक-एक गोलेसे एक सौ पशु निहत होने लगे।

लेकिन हाँ फ्रेंच खूब लड़े। पीछेसे फिर नवाबके आदमी बाहर आ रहे हैं यह देखकर वे दुगुने उत्साहसे तोप दागने लगे।

तीसरे पहर चार बजेके लगभग अंग्रेजोंको और नजदीक बढ़ आते देख नवाब सिराजुद्दौला घबराये। एक खूब तेज चलनेवाले ऊँटपर सवार हो वे युद्ध छोड़कर झटपट राजधानीकी ओर भागे। नवाबकी छावनीमें बहुत गड़बड़ी पैदा हो गई।

युद्धके समय क्लाइवकी दृष्टि और पैनी हो जाती। वे दूसरे ही क्षण अपनी सारी पल्टन लेकर नवाबकी छावनीके ऊपर एकदम बाजकी तरह टूट पड़े। सचमुचमें यहींपर क्लाइवकी बहादुरी थी। दूसरा कोई रहता तो इतनी कम फ़ौज लेकर ऐसा काम करनेका साहस शायद नहीं करता।

नवाबकी फ़ौज क्लाइवके सामने ठहर नहीं सकी। चारों ओर आवाज गूँज उठी—भागो भागो। सब माल-असबाब साज-सामान रसद आदि पीछे छोड़कर सभी भाग चले। दौड़धूप करते जो जिस ओर भाग सका भागा। क्लाइवने आकर नवाबकी खाली छावनीपर अधिकार कर लिया।

गिनती करनेपर देखा गया कि इस युद्धमें अंग्रेजोंके मारे गये सात गोरे और सत्रह सिपाही मारे गये हैं और तेरह गोरे और छत्तीस सिपाही जख्मी हुए हैं। एक छोटे-मोटे दंगेमें इससे अधिक लोग मरते हैं।

यही है पलासीका युद्ध। विजयी कर्नल रावर्ट क्लाइवने टोप उतारकर चारों ओर देखा। इसके बाद फिर मार्च। इस बार राजधानीकी ओर।

ढलती हुई बेलामें अस्तगामी सूर्य डूबते डूबते गंगाके गर्भमें अदृश्य हो गया। चारों ओर अन्धकार फैल गया।

३८

उस दिनके उस पलासीके युद्धका आज और कोई भी साक्षी नहीं रह गया है।

आदमी तो नहीं ही है। मनुष्यकी उद्दाम-धूम रोमांच और फूत्कार तो दो दिनोंके हैं! वह लाख पेड़ोंका बाग आज गंगाके गर्भमें है। वह शिकार-गृह न जाने कहाँ बहकर चला गया। न तो पलासीका मैदान ही है। नये पलासी गाँवमें नये अपरिचित चेहरे हैं। भागीरथी भी अब वहाँसे होकर नहीं बहती। बहुत दूर हट गई है।

केवल सूर्य जिस प्रकारसे उस दिन उदय हुआ था अस्त हुआ था आज भी उसी तरह उदय और अस्त होता है।

पलासीके युद्धको कोई युद्ध जैसा युद्ध स्वीकार नहीं करता। लेकिन उसी युद्धके फलस्वरूप धीरे-धीरे एक मुट्ठी कारबारी व्यक्तिमात्र मानदण्डके बदले राजदण्ड हाथमें धारण किया। शुरूसे ही उन्होंने शासन भले ही नहीं किया, लेकिन बंगालके भाग्यविधाता अवश्य हो गये।

कौन बंगालकी गद्दीपर बैठेगा कौन वहाँसे उतरेगा इसके विधायक अंग्रेज सौदागर हुए। फ्रान्सका सम्राट् होनेके पहले नेपोलियन कहा करते मैंने स्वयं राजमुकुट भले ही नहीं पहना लेकिन जो राजमुकुटको सिरपर धारण करते हैं मैं उन्हें ही सिंहासनपर उठाता-बिठाता हूँ। उसी प्रकार

क्लाइवके आतुरतासे पलासीके युद्धको जीतकर अंग्रेज वणिक भी ठीक नहीं बात कह सके। इस बार सचमुच ही वे मुर्दे होकर घुसे और फाग हारकर निकले।

मजेकी बात यह कि स्वयं अंग्रेजोंने भी पलासीके युद्धको राज्य जय करना कहकर कहीं भी वर्णन नहीं किया। उनका कहना है कि यह एक रिवोल्यूशन अर्थात् राष्ट्रविप्लव था। फिर किसीने नाम दिया है रिवोल्ट अथवा प्रजा-विद्रोह। नामसे क्या बनता-बिगड़ता है? कार्यमें क्या हुआ यह समझना किसीके लिए बाकी नहीं रहा।

पलासी युद्धके प्रधान नायक क्लाइवके चरित्रमें एक अद्भुत साहस और एक अदम्य कार्यदक्षताका परिचय पद-पदपर मिलता है। भय क्या है, यह उनका जाना हुआ नहीं था। यही कारण है कि युद्ध शास्त्र बिना पढ़े हुए ही युद्ध विद्या बिना सीखे ही क्लाइव एक बहुत बड़े सेनापति हो सके थे।

कई मामलोंमें क्लाइवका एक ऐसा सहज ज्ञान था कि बहुतोंने उसकी व्याख्या प्रतिभा कहकर की है। किसी एक असम्भव चीजको सम्भव कर दिखानेपर बहुत बार उसका कार्य-कारण सम्बन्धका पता नहीं लगता। उस समय उसे प्रतिभा कहकर चला दिया जाय तो अधिक कहनेकी जरूरत नहीं रह जाती।

असली बात यह है कि सन् ईसवीकी अट्ठारहवीं शताब्दीके बहुतसे अंग्रेजोंके समान क्लाइवकी प्रकृतिमें भी एक निर्भीक बेपरवाह और दुर्दान्तपनेका भाव था। यह इस देशके युद्धक्षेत्रमें खूब काम आया। उस ओर अंग्रेजोंके विपक्षी दल अर्थात् उस समयका देशी लोगोंमें अयोग्यता अपनी चरम सीमापर पहुंच गई थी। विपक्षी दल जहां इस प्रकारका हो वहां युद्ध-नीतिसे बाहर दुर्दान्तपनामें ही रणकौशलका भ्रम होना कुछ आश्चर्यकी बात नहीं है।

इसपर क्लाइवका युद्ध करना बहुत दूर तक सब कुछको दांवपर लगा कर जुआ खेलने जैसा था। लगे तो पौ बारह नहीं तो सब खतम। इस पार या उस पार। लेकिन इसके लिए भाग्यका जोर चाहिए। क्लाइवका

भाग्य तेज ही था। किन्तु मुश्किल यह है कि भाग्यका जोर एक ही तरहसे बहुत दिनों तक नहीं रहता। भाग्यवश पलासीके युद्धके बाद क्लाइवको और लड़ना नहीं पड़ा। नहीं तो क्या होता कहा नहीं जा सकता।

पर यदि गहराईमें उतरकर छानबीन की जाय तो एक बातका पता लगता है। कम संख्यावाली अच्छी तरह सीखी-सिखाई फ़ौज अगर एक मन एक प्राण हो सेनाध्यक्षकी बातपर उठे-बैठे तो केवल संख्यामें बड़ी सेनाको हरा देनेमें उसको अधिक समय नहीं लगता। अंकगणितमें संख्याका एक मूल्य रहनेपर भी युद्ध-क्षेत्रमें उसका सब समय वही मूल्य होगा ऐसी बात नहीं है।

लड़ाईमें देशी फ़ौज भी कम नहीं जाती। किन्तु उनके परिचालक अपने-अपने स्वार्थ मान अभिमान एक दूसरेके प्रति विद्वेष लेकर ही युद्धमें उतरते। फल यह होता कि उस बड़ी वाहिनीमें छोटी-छोटी भिन्न-भिन्न अपनी अपनी फ़ौजकी टुकड़ीकी सृष्टि होती। एक पूरी सैन्यवाहिनी कभी भी नहीं बन पाती।

इसके अलावा देशी सैनिकोंका किसी भी समय पूरी सेनावाहिनीके प्रति कोई भी ममत्व नहीं होता। उनका लिहाज केवल अपने नायकोंके प्रति होता। इसीलिए जैसे ही एक सेनानायक लड़ाईमें धराशायी हुए, अथवा किसी कारणवश पीठ दिखाई वैसे ही उनके दलके आदमी विशृंखल होकर भागना शुरू कर देते। दूसरा कोई आकर उस दलको सँभालकर फिर युद्धमें लगाता ऐसी सामर्थ्य किसीमें भी नहीं होती।

लड़ाईके मामलेमें इस देशके नवाब बादशाह, राजे-महाराजे बिल्कुल पुराने सड़े हुए ढंगको अपनाते। उनके यहाँ बाबा आदमके जमानेके युद्धके तरीके थे और न जाने कबके पुराने अस्त्र शस्त्र थे। समयके साथ कदम मिलाकर चलनेमें उन्हें क्षोभ होता। आधुनिक युद्ध-विद्या जिन्हें मालूम था जिनके हाथोंमें हालके अस्त्र-शस्त्र तोपें-हथियार थे उनके सामने इस देशके लोग कितनी देर तक ठहरते? हारकर प्राण गँवायेंगे यह तो जानी हुई बात है।

और एक बात कहनी ही पड़ती है। इस देशके लोगोंका चरित्र इतना नीच गिर गया था कि घूस देकर, लोभ दिखाकर उन्हें किसी भी नीच कर्ममें प्रवृत्त कराना बहुत सहज था। नर-हत्या विश्वासघात देश-द्रोह कुछ भी बाकी नहीं रहता। किन्तु आश्चर्य यह कि इस देशके लोगोंको घूस देकर अंग्रेजोंने इन सब जघन्य कामोंमें प्रवृत्त कराया अवश्य पर स्वयं कभी भी किसी स्वार्थके लिए उन्होंने देशके स्वार्थको बलि दी है, इसका भारतवर्षके इतिहासमें तो कोई प्रमाण नहीं मिलता।

इतनी बातोंके कहनेकी जरूरत क्या है? कुछ जरूरत अवश्य है। भारतवर्षमें जहां-जहां भी अंग्रेज देशी राजशक्तिके विरुद्ध लड़े हैं वहां-वहां यह एक ही प्रकारकी बात देखनेको मिलती है। इसीलिए, क्यों ऐसी बात हुई उसमें बारकोंका ध्यान रखना अच्छा है।

३६।

अब कहानी खतम की जाय।

नवाबकी छावनीमें घुसकर चाहे गोरे हों चाहे देशी काला पल्टन या तैलंग सिपाही किसीने भी एक भी चीजपर हाथ नहीं लगाया। उनकी डिसिप्लिन आश्चर्यजनक थी। क्लाइवके साथ अभी दाऊदपुर तक बढ़ गये। रात हो गई है। उस दिन वहीं तम्बू गाड़े गये।

भोरके समय डरते हुए मीर जाफर अंग्रेजोंके डेरेपर आकर मिले। पलासीके युद्धमें उनके कार्यकलापको देखकर अंग्रेजोंने क्या निश्चय किया है कौन जाने? धीरे-धीरे मीर जाफर आगे बढ़ने लगे। उनको देखकर अंग्रेज सन्तरी जब विलायती कायदेके अनुसार बन्दूक ऊंची कर, सम्भ्रमके साथ सलाम करने जा रहे थे तब वे जरा चकपका गये। उन्होंने सोचा ये मार तो नहीं डालेंगे? और आगे बढ़ने की उनकी हिम्मत नहीं हुई।

मीर जाफर इतस्ततः कर रहे हैं, ऐसे समय क्लाइव तम्बूसे बाहर निकलकर आये और उनको आलिंगनमें जकड़ लिया। विनयके साथ बोले 'अरे, नवाब साहब आइये स्वागतम्।' सुनकर मीर जाफर आश्वस्त हुए।

क्लाइवने परामर्श दिया कि सब काम छोड़कर सिराजुद्दौलाको पकड़ लेनेकी जरूरत है। फ्रांसीसी जाँ ल के साथ सिराजुद्दौला अगर फिर मिलें तो क्यासे क्या हो जाए, यह तो कहा नहीं जा सकता। उसी समय मीर जाफ़र मुर्शिदाबादकी ओर रवाना हो गये। शहरकी सीमापर मैदाबाद अंचलमें फ्रांसीसियोंकी कोठीमें क्लाइव टिक गये।

उस ओर मीर जाफ़र शहरमें आ रहे हैं यह सुनकर सिराजुद्दौलाकी घबड़ाहट बढ़ गई। इस समय उनकी ओर एक भी आदमी नहीं है। पुकारनेपर कोई जवाब नहीं देता। उसी रातको ही अपनी स्त्री लुत्फ़उन्निसा बेगमका हाथ पकड़ और एक बच्चीको हृदयसे चिपटाये सिराजुद्दौला अन्धकार-ही-अन्धकारमें राजधानी मुर्शिदाबादका परित्याग कर बाहर हो गये।

२९ जून सन् १७५७ ई०। थोड़से सैनिकोंको लेकर क्लाइवने मुर्शिदाबादमें प्रवेश किया। मुरादबागमें सिराजके ही एक प्रासादमें उनके ठहरनेका प्रबन्ध हुआ।

उसी दिन तीसरे पहर नवाब मीर जाफ़रका प्रथम दरबार लगा। मीर जाफ़र बच्चोंकी तरह मचल कर बोले स्वयं कर्नल साहब उनका हाथ पकड़ कर बंगालकी गद्दी पर न बैठा दें तो वे किसी भी तरह गद्दी पर नहीं बैठेंगे। क्लाइव और क्या करते? अपनी जगहसे उठकर मीर जाफ़रका हाथ पकड़कर उन्होंने उनको बंगालकी गद्दीपर बैठा दिया।

दरबार खतम होनेपर सम्भ्रान्त लोगोंके सामने नवाब सिराजुद्दौलाका राजकोष खोला गया। उमीचंदके रिपोर्टके मुताबिक उनको कुछ नहीं पाया गया। वैसे क्लाइवको खूब अधिक निराश नहीं होना पड़ा। अन्तमें उनके हिस्से लगभग इक्कीस लाख रुपये आये। इसके बाद नवाब मीर जाफ़रने खुश हो डेढ़ लाख रुपये नकद और चौबीस परगनेका सम्पूर्ण मालिकानेका अधिकार क्लाइवको बख्शीश दिया।

क्लाइव कम्पनीके कर्मचारी रहकर भी कम्पनीके जमींदार हो गये। उसी जमींदारीके खजानेके रुपयेकी बाबत मालूम हुआ कि कम्पनीके पाससे

साल-साल चार लाख रुपये क्लाइवको मिलते गये। क्लाइवकी मृत्युके बाद यह जमींदारी कम्पनीके राज्यमें सम्मिलित हो गई।

कायम कहकर इन्हीं सब रुपये-पैसेके लेन-देनके विषयकी जाँच करनेके लिए पार्लियामेण्टने एक कमिटी बैठाई थी। कमिटीके सामने अभियोगोंका उत्तर देते-देते गर्म होकर क्लाइवने जोरोंसे टेबुलपर हाथ पटककर कहा 'सभापति महाशय और उपस्थित सदस्यगण उस समयके अपने संयमकी बातको सोचकर तो मैं इस समय अवाक रह जाता हूँ। जिस समय नवाबकी दौलत मेरे पैरोंके नीचे थी जब मीर जाफरसे लेकर राज्यके सभी अमीर उमराव मेरे हँसते हुए चेहरेको देखनेके लिए घर घेरा किये हुए खड़े थे उस समय मैंने सिराजुद्दौलाके खजानेसे अपने लिए सिर्फ इक्कीस लाख रुपये लिये थे। उस समय कैसे मैंने अपने लोभको सँभाल रखा था उसे सोचते हुए मैं आश्चर्यचकित रह जाता हूँ।

बँटवारा तो एक प्रकारसे हो गया। अब उमीचन्दको लेकर क्या किया जाय? क्लाइवके शागिर्द लूक स्क्रैफ्टनने भार लिया कि वे ही उमीचन्दसे सारी बात जाकर कह देंगे। सफेद कागजपर लिखे हुए खतनामेको लेकर आकर और उमीचन्दकी आँखोंके सामने घुमाते-घुमाते स्क्रैफ्टनने कहा 'देखो उमीचन्द खतनामा पढ़कर देखता हूँ तो तुम्हारे हिस्सेमें बिलकुल शून्य है।' सुनकर तो उमीचंद एकदम अवाक्, उनके मुँहसे और बात नहीं निकली। चेहरेका जो रंग हुआ वह तो कहा नहीं जा सकता। केवल बकबकाने लगे लाल कागज! लाल कागज!

क्लाइव आकर स्नेहपूर्वक उमीचंदको सान्त्वना देने लगे और अन्तमें तीर्थयात्रा करनेका उपदेश दे गये। बोले तीर्थपर जानेसे बहुत शान्ति पाओगे। उमीचन्दने सचमुच ही तीर्थयात्रा की। तीर्थ क्षेत्रमें बैठे-बैठे वे क्या सोचते रहे नहीं कह सकता। यह बात जरूर याद आती होगी क्या कि एक दिन उन्होंने ही सिराजुद्दौलाको अंग्रेजोंके साथ मेल-जोल रखनेकी सलाह

देते हुए कहा था अंग्रेजोंके आश्रयमें चालीस वर्षों तक रहकर उन्हाम बता है कि अंग्रेज कभी अपनी बातसे मुकरते नहीं।

तब एसा सुनता है कि तीर्थ-यात्रामें जाकर उमीचन्दने थानी शान्ति पाम की थी। क्योंकि तीर्थसे लौटकर उमीचन्दने अपने हाथों एक बिल लिखा। उस बिलके द्वारा वे बहुत दान कर गये थे।

सन् १७५८ ई० में कलकत्तेमें उमीचन्दके निःसन्तान मरनेपर उनके साम और एक्जीक्यूटर हुजुरीमलने सन् १७६० ई० में उमीचन्दके इस्टेटसे प्राप्त कुछ रुपये विलायतकी किसी किसी संस्थाके पास भेजनेके लिए कलकत्तेकी फाउण्डलिंग प्रेसिडेण्ट साहबके हाथोंमें दिये थे। लन्दनके मगदलिन अस्पताल और शिशुओंके लिए आश्रम अर्थात् फाउण्डलिंग अस्पतालको इस दातव्यका कुछ भाग मिला था।

उमीचन्दके साथ इस दगाबाजीकी बातको लेकर ब्रिटिश पार्लियामेण्टकी एक जाँच कमिटीने जब क्लाइवपर दोषारोपणकी चर्चा की तब क्लाइवने पार्लियामेण्टके मुँहपर ही ऊँची आवाजमें कह दिया कि अरे महाशय ठहरिए ठहरिए। अवस्था समझकर ही तो उसकी व्यवस्था होती है। आप लोग नहीं जानते कि उमीचन्द क्या है किस प्रकारका धोखेबाज है। वैसी अवस्थामें पड़नेपर मैं एक बार क्या हजारों बार फिर वही काम करने के लिए अभी भी तैयार हूँ। जवाब सुनकर कमिटीके मेम्बरोंका मकड़ चूर चूर हो गयी।

धर्मको तिलांजलि देकर मीर जाफरने बंगालकी नवाबी-गद्दीको दखल किया। लेकिन हीरा देकर उन्होंने केवल काँच ही पाया। असल नवाब कौन हुआ इस विषयमें किसीको थोड़ा भी सन्देह नहीं रहा।

इतिहासज्ञ गुलाम हुसेनने अपने सियर-उल-मुताक्खरीन नामक ग्रन्थमें इस सम्बन्धमें एक मजेदार घटनाका उल्लेख किया है। एक दिन किसी कारणसे मिर्जा शम्सुद्दीन नामक एक उमरावके आदमियोंके साथ क्लाइवके अनुचरोंका एक साधारण-सा वाद-विवाद हो गया। इस लेकर

थी बेचारे एडमिरल वाट्सन कलकत्तेकी आबहवाको सह नहीं सकनेके कारण पलासी युद्धके दो महीने बाद ही सेन्ट जान्सके कब्रिस्तानमें दफनाये गये।

४०

राजधानी छोड़कर सिराजुद्दौला भागे जा रहे हैं। रास्तेमें एक जगह लुत्फउन्निसा बेगमकी गाड़ी कीचड़में फँस जानेके कारण वे पीछे रह गई। सिराजुद्दौला एक क्षण भी कहीं रुक नहीं सकते। कहीं किसीके हाथमें न पड़ जायँ। उन्हें आगे बढ़ना ही पड़ा। पति-पत्नी बराबरके लिए महीपर बिछुड़ गये।

सिराजुद्दौलाकी इच्छा थी कि मालदह होकर पूर्नियाका रास्ता पकड़ें और पटनेमें पहुँच ला-साहबके साथ मिल जायें। लेकिन अपना बसनवाले रास्तेपर जगह-जगह लोगोंने उन्हें पहचान लिया है ऐसा समझकर उन्होंने पूर्नियाका मार्ग छोड़ राजमहलका रास्ता पकड़ा।

राजमहलके निकट पहुँच भूख-प्याससे व्याकुल हो व एक दरवेसके स्थानपर गये। बंगालके नवाबने राजमहलके फ़कीरके पास एक टुकड़ा रोटीकी भिक्षा माँगी।

सिराजुद्दौलाको देखते ही फ़कीर दानाशाहने उन्हें पहचान लिया। पहचाननेकी बात ही थी। सिराजके हुक्मसे ही तो उसके नाक-कान काटे गये थे। उसका घाव तबतक भी अच्छी तरह सूखा नहीं था।

सिराजुद्दौलाको जरा-सा बैठनेके लिए कहकर दानाशाह सीधे राजमहलको चले गये। उस समय राजमहलके फौजदार मीर जाफ़रके एक भाई मीर दाऊद थे। क्षण भरमें सैनिकोंको ले आकर मीर दाऊदने सिराजुद्दौलाको बन्दी कर लिया।

बंगालके नवाब सिराजुद्दौलाको फटा हुआ मैला कपड़ा पहनाकर एक छकड़ेपर चढ़ाकर उनको अपनी राजधानीमें बन्दीकी हालतमें ले आया गया। उस समय दोपहरका समय था। खा-पीकर मीर जाफ़र सोने जा रहे

थे। बन्दीको लेकर वे क्या करेंगे यह स्थिर न कर सकनेपर वे सिराजुद्दौला-को अपने उपयुक्त पुत्र मीरनके हाथों सौंपकर सोने चले गये। जानेके समय कह गये कि बन्दीको जिसमें खूब होशियारीसे रखा जाय।

मीरनने अपने दोस्तोंको बुलाकर कहा कि इस प्रकारकी एक मूल्यवान वस्तुका सारे दिन हथियार लेकर हिफाजत करनेपर तो मैं गया और क्या? उससे तो उसको एकदम खतम कर देना अधिक बुद्धिमानीका काम होगा।

लेकिन कोई भी अमीर उमराव सिराजके शरीरपर हाथ उठानेको राजी नहीं हुआ। तब महम्मदी बेग नामक एक जल्लाद प्रकृतिका आदमी यह काम करनेको राजी हुआ। वह राजी क्यों न होता? सिराजुद्दौलाके नानाने ही तो उसे अनाथ देखकर आदमी बनाया था। सिराजकी माँने ही तो समा-रोह कर उसकी शादी की थी। कृतज्ञताका काँटा तो उस समय भी उसके हृदयमें चुभ रहा है। उस काँटेको निकालनेका तो यही सुअवसर है। वह आदमी सिराजुद्दौलाकी हत्या करना नहीं चाहेगा तो कौन चाहेगा?

इसी नीच आदमीके पैरों पड़कर नवाब सिराजुद्दौला आरजू-मिन्नतकर प्राणोंकी भिक्षा माँगने लगे। रोकर बोले — वे और कुछ भी नहीं चाहते। केवल बहुत दूर किसी अज्ञात गाँवमें जाकर अज्ञात रूपसे एक साधारण प्रजाके समान रह सकनेपर ही वे चिर सुखसे रहेंगे। उनका यह अनुरोध जिसमें एक बार मीर जाफरको बतलाया जाय।

लेकिन बतलानेपर भी कुछ परिणाम नहीं हुआ। नीच आदमी क्या कभी क्षमा कर सकते हैं? केवल वीर पुरुष ही यह कर सकते हैं। नीच व्यक्ति तो सदा ही निष्करुणा भवन्ति। इसीलिए तो नीच आदमियोंके निकृष्ट प्राणी होने जैसा जघन्य पदार्थ इस दुनियामें नहीं है।

लौटकर महम्मदी बेगने सिराजुद्दौलाको हाथ-मुँह धोकर कलमा पढ़ने का समय तक भी नहीं दिया। साधारण चोर-डकैतोंकी तरह मार-मार पीट-पीटकर सिराजकी हत्या कर डाली। २ जुलाई सन् १७५७ ई०। नियतिका कैसा कठोर दण्ड है!

यहीं कहानी खतम कर देना अच्छा होता। लेकिन परमेश्वरकी करुणाका नाम लेकर जो मनुष्यका खून करते हैं उसकी निर्ममताकी तो सीमा नहीं रहती। इसीलिए कुछ और कहना पड़ता है।

दूसरे दिन भोरमें एक हाथीकी पीठपर सिराजके मृत शरीरको चढ़ा कर सारे शहरमें रास्ते-रास्ते उस हाथीको घुमाया गया। जिसमें सबको विश्वास हो जाय कि नवाब सिराजुद्दौला अब इस जगत्‌में नहीं हैं।

हाथी चल रहा है। चलते-चलते एक जगह आकर अचानक रुक गया। तीन वर्ष पहले ठीक इसी जगह सिराजने हुसेन कुली खाँकी हत्या की थी। भयक साथ लोगोंने देखा कि सिराजकी मृत देहसे दो बूँद रक्त बहकर वहीं मिट्टीके ऊपर गिरा।

हाथी फिर चला। सिराजके पुराने मकानके सामने जब वह पहुँचा उस समय भीड़ जमा हो गई है। चारों ओर खूब होहल्ला मचा हुआ है। घरके भीतरसे हाथीकी पीठपर बेटेकी मृत देहको देखते ही सिराजकी माँ आमीना बेगम खाली पाँव अस्त-व्यस्त वेषमें काँपते-काँपते आकर हाथीके पैरोंपर घुटनेके बल गिर पड़ीं। बेगम साहबा बेपर्द हो रही हैं देखकर अचानक मकानक एक उमराव अपने आदमियोंकी सहायतासे आमीना बेगम को पकड़कर अन्दर महलमें खींच ले जाकर पहुँचा दिया।

इसके बाद सिराजकी मृत देहको हाथीकी पीठसे बाजारके चौकमें उठाकर फेंक दिया गया। नराधमोंके मनमें एक बार भी नहीं आया कि शवको कम-से-कम किसी चीजसे ढक देना उचित है।

अन्तमें और नहीं रह सकनेपर मिर्जा जैनुल आबेदीन नामक एक बहादुर उमरावने आकर सिराजकी मृत देहको उठा ले जाकर खुशबागमें नवाब अलीवर्दी खाँकी बगलमें ही दफना दिया।

सब समाप्त हो गया। केवल पच्चीस वर्षकी उमरमें चौदह महीने बंगालका कर्ता-धर्ता विधाता रहकर अन्तमें सिराजुद्दौलाकी ऐसी गति हुई।

अमीर या फ़कीर देशी या विदेशी सबके लोभका पात्र होनेपर भी

अपने भाग्यहीन अभिशप्त जीवनमें सिराजुद्दौला एक बहुत बड़ी वस्तु प्राप्त कर गये थे। वह था एक महिमामयी नारीके हृदयका एकनिष्ठ प्रेम। वह नारी थी उनकी स्त्री—लुत्फ़उन्निसा बेगम।

सिराजुद्दौलाकी मृत्युके बाद मीर जाफ़रके इशारे पर मीरनने जब लुत्फ़उन्निसा बेगमके पास निकाहका प्रस्ताव भेजा तब उन्होंने उत्तरमें कहलवा भेजा कि जो व्यक्ति बराबर हाथीकी पीठपर चढ़कर घूमता-फिरता रहा है वह आज कैसे गधेकी पीठपर चढ़कर घूमे-फिरे।

नारीका हृदय! हजारों वर्षोंकी साधनासे भी उसका कूल किनारा पाया जा सकता है या नहीं? इसमें सन्देह है। उस मनके रहस्यको देवा न जानन्ति—देवता भी नहीं जान सकते मनुष्य तो तुच्छ नगण्य है। जितने सब अयोग्य अक्षम अकृती अत्याचारी अनाचारी पुरुषोंके ऊपर ही तो स्त्रियोंकी अपार करुणा असीम स्नेह और जबरदस्त मनका खिंचाव होता है।

इसके बाद मृत्युकाल तक (नवम्बर सन् १७९० ई०) जितने दिन लुत्फ़उन्निसा बेगम मुर्शिदाबादमें रहीं प्रतिदिन सन्ध्याको सिराजकी क़ब्र पर एक दीप जला देतीं। और उसीकी बग़लमें बैठकर अपने अन्तरकी प्रार्थना सुना जातीं। घने अन्धकारमें दूरसे उस प्रेमके दीपकको जलते हुए देख आगोंका सर अपनेआप झुक जाता।

शेष

इतिहास-ग्रन्थके उपसंहारके रूपमें कुछ कहनेका चलन है। मैं उसीका अनुसरण कर रहा हूँ।

अब अभी तक मैंने जो कहा है वह निर्मम होकर कहा है। कारण यह है कि मेरे वैसा कहनेका आधार खूब पक्का और ठोस है। लेकिन अब जो कहने जा रहा हूँ वह बड़े ममत्वके साथ ही कह रहा हूँ। इतिहासके बाहर नहीं होनेपर भी वह एक संकेत मात्र है।

संकेतका उद्देश्य यह नहीं है कि मैं अपने किसी आग्रहसे पूर्व मतका

दूसरोंपर मारकर एक तकलाहकी पुष्टि कर रहा हूँ। असली मतलब पाठकोंका ध्यान इस ओर आकृष्ट करना है। आशा है कि इससे बहुतसे नये-नये तथ्य प्रकाशमें आयेंगे। लेकिन बहुत संक्षेपमें हो कह रहा हूँ। क्योंकि आलोचना इस बातकी है कि कहानीके भीतर उसकी बातोंकी व्यवहारमा करनेसे बहुत लोग क्षुब्ध हो सकते हैं।

पलासीके युद्धके बाद अंग्रेजोंपर कलकत्तेके बाशिन्दोंकी आस्था फिरसे लौट आई। ऐसे लोगोंमें जो इसके एक वर्ष पहले कलकत्ता छोड़कर चले गये थे वे सभी निश्चिन्त होकर फिर कलकत्ते लौट आये। उनकी देखादेखी और बहुतसे लोग भी आने लगे।

इसके फलस्वरूप कलकत्तेमें जो एक बंगाली हिन्दू समाज बना वह वास्तवमें कायस्थ-समाज था। ब्राह्मण लोग कायस्थोंके पूज्य होकर यद्यपि उस समाजके सिरपर रहे फिर भी समाजका मेरुदण्ड कायस्थ ही थे। उन्हीं लोगोंके हाथमें समाजका जीना-मरना था। वैश्य लोग उस समाजके भिन्न-भिन्न अंग-प्रत्यंग थे।

पहलेके समाजकी तरह यह समाज वर्णाश्रम धर्मके ऊपर आश्रित नहीं था। यह समाज अंग्रेजोंकी कृपापर ही पल रहा था।

सन् १७७२ ई० से इस समाजका रूप स्पष्ट होने लगा। उसी सालमें बंगालके तत्कालीन गवर्नर वारेन हेस्टिंग्सने बंगालकी राजधानी मुर्शिदाबादसे उठाकर कलकत्तेमें स्थापित की। इसके कुछ पहले अर्थात् सन् १७६५ ई० में दिल्लीके बादशाह शाह आलम द्वितीयने ईस्ट इण्डिया कम्पनी बहादुर को बंगाल बिहार, उड़ीसाकी दीवानीका परवाना दे दिया था।

साधारणतः हम लोगोंके मनमें आता है कि मुसलमानी शासनमें अंग्रेजों के शासनसे हम लोग बहुत अधिक सुखी थे। लेकिन यह धारणा एकदम भ्रमात्मक है और इसका साक्षी इतिहास है। कालके स्रोत जैसे तरल पदार्थपर भी इतिहास लकीर खींच देता है और वह लकीर एकदम पत्थरके जैसी कठिन होती है। किसी भी तरह उसे मिटाया नहीं जा सकता।

अकबर बादशाहके शासनकालको छोड़कर अन्य किसी भी बादशाह अथवा नवाबके शासनमें पार्थिव जगत्के लौकिक मामलोंमें हिन्दुओंकी उन्नतिकी कोई भी संभावना नहीं थी। साधारण हिन्दू प्रजा क्रीत दासके समान थी। सिर्फ दो पैरके जानवर। मनुष्यकी मर्यादा किसीने भी उन्हें नहीं दी। अतएव उन्होंने कूर्मवृत्ति अर्थात् मुसलमानोंके साथ नाम-को-वास्ते रेशनका रास्ता अख्तियार किया। उस हालतमें छुआछूतका रास्ता नहीं पकड़नेपर तो और कोई उपाय नहीं था।

यह तो कहना ही पड़ेगा कि अन्नकी थोड़ी सुविधा थी। सम्भवतः इसीसे इस भ्रमकी उत्पत्ति हुई है। लेकिन उसके दूसरे बहुतसे कारण थे। उस समय जनसंख्या कम थी। देशमें शान्ति नहीं होनेपर जनसंख्यामें वृद्धि नहीं होती यह एक अत्यन्त साधारण-सी बात है। युद्ध-विग्रहमें बहुत संख्यामें लोगोंका विनाश होता है। उसके पीछे-पीछे छायाकी तरह दुर्भिक्ष और महामारी आती है। जनसंख्याकी वृद्धिमें इनमें कोई भी सहायक नहीं है। उस कालमें युद्ध-विग्रह, दुर्भिक्ष बीमारी भारतवर्षके एक कोनेसे दूसरे कोने तक नित्यनैमित्तिक व्यापार हो गये थे।

भोजनकी सुविधा सब समय गरीब प्रजाको थी ऐसा समझना तो और भी भ्रम है। आजकलके समान अर्थोपार्जनके नाना प्रकारके उपाय उस समय नहीं होनेसे कृषि काम करनेवालोंकी संख्या जरूर ही बहुत अधिक था। खतमें अन्न रहता अवश्य लेकिन वह सब समय गृहमागतम् होता ऐसी बात नहीं थी। सर्वदा लड़ाई-झगड़ा दंगा-फसाद एक-न-एक कुछ लगे रहनेके कारण वह अन्न प्रजाके भोगमें नहीं आता। उसका अधिकांश राज्यके अधिकारी और सैन्य सामन्तोंके पेटमें जाता। वह भी दाम देकर खरीदा हुआ नहीं होता जबरदस्ती छीना हुआ होता।

चीजोंका दाम सस्ता था। सस्ता होनेकी बात भी है। लोगोंके हाथमें रुपया नहीं था। यह तो अर्थनीतिशास्त्रका एक साधारण नियम है कि रुपया नहीं रहनेपर चीजोंका दाम कम हो जाता है। सस्ता होनेपर भी

हाथमें पैसा नहीं होनेसे उसे खरीदनेकी सामर्थ्य बहुतोंमें नहीं थी। बंगालके पुराने हस्तलिखित ग्रंथों और चिट्ठी-पत्रोंको थोड़ा उलटने-पुलटनेसे देखनेको मिलता है कि नवाबके शासनमें आये पैसेकी वृद्धि होनेसे चारों ओर हाहाकार मच गया है। साधारण लोग सिरपर हाथ रखे हुए उदास हैं।

मुसलमानी शासनके पहले भारतवर्षमें जो संस्कृति प्रतिष्ठित थी उसका ब्राह्मण धर्म नाम दिया जा सकता है। अंग्रेजीका ब्राह्मणिक कल्चर शब्द और भी अधिक भाव-व्यंजक है। इसकी प्रतिष्ठाका एक कारण था। उस कालमें ब्राह्मण लोग जो समाजको देते उससे बहुत कम समाजसे लेते। और जो लेते उसे सम्पूर्ण रूपसे उड़ेल कर देते। स्वार्थसिद्धिके लिए हाथमें कुछ रख नहीं लेते।

इस कल्चरका एक बहुत बड़ा गुण था। वह एक समग्र कल्चर था। अर्थात् इहलोक और परलोक दोनोंका वह उन्नतिविधायक था। कोई भी लोक उसके पास अवहेलनाकी वस्तु नहीं थी। दोनों लोकोंके ऊपर उसकी समान दृष्टि थी। इसीलिए उससे एक साथ ही अर्थ धर्म काम मोक्ष— चतुर्वर्गके फलकी प्राप्ति होती।

लेकिन मुसलमानी कालमें एकदम चाक घूम गया। इहलोकमें किसी प्रकार की उन्नतिकी आशा न देख हिन्दुओंने पार्थिव काम्य वस्तुओंको तिलांजलि देकर पार-लौकिक विषयोंमें अच्छी तरह मन लगाया। फलस्वरूप लक्ष्मीने तो उन्हें छोड़ ही दिया सरस्वतीने भी उन्हें त्याग दिया। साथही उन्हें धनको भी विसर्जन देना पड़ा। इहलोक तो गया ही परलोक भी जर्जर हो गया।

ब्राह्मण आचार्योंके स्थानपर ब्राह्मण गुरु-पुरोहितोंकी प्रधानता हो गई। अपनी स्वार्थ-सिद्धिके लिए उन्होंने अज्ञानता अविद्या और अकर्मण्यता का प्रचार किया। झूठमूठ उन लोगोंने लोगोंको समझाया कि इस संसारमें जो जितना कृच्छ्र-साधन करेगा, सांसारिक व्यापारोंकी उन्नतिसे जो जितना उदासीन होगा संसारमें जो जितना कष्ट पाएगा स्वर्गराज्यमें वह उतना ही डबल प्रोमोशन पाता रहेगा।

हिन्दुओंने उसे ही मान लिया। उस समय जैसी अवस्था थी बिना माने कोई उपाय नहीं था। भगवानकी आराधनाको छोड़कर उन्होंने एकान्त भावसे मनुष्यकी पूजा शुरू की। कई आचार, मनुष्यनको उन्होंने धर्म का स्थान दिया। उस आचारमें विचारका कोई स्थान नहीं था। वह आचार-विभेदपर विभेदकी सृष्टि करता गया। फलस्वरूप दुराचारपर दुरचार दुर्गतिपर दुर्गति भोगनी पड़ी।

गुरु-पुरोहितोंको और एक सुविधा थी। उस समय बहुतसे देव-देवियों-का आविर्भाव हो गया था। वे तैंतीस करोड़ थे। सभी सन्तुष्ट हुए, कोई भी नहीं छूट पाये। तैंतीस करोड़ लोगोंमें सबके बांटे एक-एक पड़। जीविकाका और कोई उपाय नहीं कर सकने पर गुरु-पुरोहितोंने इन सब देवी-देवताओंको लेकर व्यवसाय चला दिया। कितने प्रकारके भौतिक दैविक आधिदैविक मनैसर्गिक क्रिया कलापोंको उन्होंने जुटाया कि जिसका ठिकाना नहीं। उससे गुरु-पुरोहितोंका पेट भरा अवश्य लेकिन समाजका कोई कल्याण किसी प्रकारकी उन्नति नहीं दीख पड़ी।

प्राचीनकालका हम लोगोंका ब्राह्मण धर्म—जो धर्म शक्तिशाली था वीरोंका धर्म था, जो सूर्यकी तरह चमकता जिसका अनुष्ठान सबको लेकर सबके सामने होता—वही धर्म तन्त्र मन्त्रके गुप्त मार्गमें प्रवेश कर निर्बलों-का धर्म होकर छिपे रूपसे अन्धकारमें इस उद्देश्यसे आचरित होने लगा कि उसके द्वारा इस संसारमें राज्य करनेकी कुछ शक्ति फिरसे पाई जाय। लेकिन ऐसा भी क्या संभव है?

सांसारिक उन्नति करानेवाली विद्याको छोड़ देनेसे उस समयका हम लोगोंका साहित्य या तो गुत्थमगुत्था शृंगार रसात्मक है अथवा देव-देवी या नर-नारायणकी स्तव-स्तुति परक है और नहीं तो बहुत अधिक हुआ तो मर्मी सन्त भक्तोंकी उच्च देनेवाली नाकके सुरमें की हुई हाय-हाय है। शक्तिशाली सर्वव्यापी ब्राह्मण-शास्त्र भी धीरे-धीरे म्लान नहीं विलुप्त

हो गये इसका पता नहीं चलता। विद्याके बदले मदिरा ही इन लोगोंके सिरपर सवार हो गई।

कायस्थ वंशके लोग तो जीविकोपार्जनके लिए पेशेवर गुरु-पुरोहित हो नहीं सकते थे और उन्हें भी जीविका निर्वाहके लिए कोई उपाय चाहिए। उनकी जीविका बुद्धिपर निर्भर करती थी। अंग्रेजोंके आश्रयमें कलकत्तेमें उन्होंने ही एक बुद्धिजीवी समाजकी प्रतिष्ठा की।

पहलेसे ही कायस्थोंको कलमके पेशेका अभ्यास था। अब वह कलकत्ते-में खूब काम आया। उन्हें पाकर अंग्रेजोंको भी कुछ कम लाभ नहीं हुआ। इस समय वे केवल व्यापारी ही नहीं रह गये थे। उन्हें अब एडमिनिस्ट्रेशन भी चलाना पड़ता। एडमिनिस्ट्रेशन चलानेमें कलकत्तेके कायस्थ सहायक हो गये।

धीरे-धीरे अपने आश्रित ब्राह्मणोंको भी कायस्थोंने खींच लिया। कुलीन ब्राह्मणों जिन्हें समाजके नियमानुसार गुरु-पुरोहित होनेमें बाधा थी उनका पेशा बहुविवाह था। लेकिन उन लोगोंने जब देखा कि कुलके व्यवसायसे कायस्थ-वृत्तिमें अधिक लाभ है तो इस दलमें आ मिलनेमें उन्हें भी कोई आपत्ति नहीं हुई।

मुंशी नवकृष्ण उस समय महाराजा नवकृष्ण बहादुर हो गये थे। सुतोनुटि ग्रामके वे मालिक थे। वे उसी गाँवमें ब्राह्मणोंको बिना मालगुजारी के वास करनेको जमीन दान करने लगे। इससे उनके इहलोक परलोक दोनों लोकोंका ही कल्याण हुआ। सामाजिक मामलोंमें एक दक्ष बुद्धिमान ब्राह्मणोंकी सहायता पाकर नवकृष्ण कुलीन कायस्थ नहीं होनेपर भी कलकत्तेके समाजपति हो गये। ब्राह्मणोंको दान देना बहुत पुण्यका काम है—चाहे वह भूमिदान हो या गोदान—यह धारणा उस समय भी लोगोंके मनमें बद्धमूल थी। इसलिए महाराजा बहादुरने बहुत अधिक पुण्य अर्जन किया इसमें किसीको जरा भी सन्देह नहीं रहा। नवकृष्णने एक ढेलेसे दो पक्षियोंका शिकार किया।

अंग्रेजोंके सान्निध्यमें आ इस बुद्धिजीवी समाजके लोगोंने देखा कि इहलोकमें उन लोगोंके भाग्यमें भी सुख है, मनुष्यत्व है। उन्होंने अच्छी तरह समझा कि अथच्छ चाहे जितना ही असत्य कहकर अपन किया जाय लेकिन अथ ही मृत्युलोकके मानव समाजके व्यावहारिक मामलोंका मूल आधार है। अथकी अवहेलना करनेपर समाज कभी भी अच्छी तरह नहीं गढ़ा जा सकता। और अर्थके सम्बन्धमें थोड़ा निश्चिन्त और निरिचन्त नहीं होनेपर उस समाजका भविष्य भी अन्धकारमय हो जायगा। ये दोनों बातें ही हिन्दुओंके लिए बिल्कुल नई थीं। लेकिन दोनों ही कलकत्तेमें सम्भव थीं।

अंग्रेजोंकी छायामें भौतिक (वैषयिक) उन्नति हो रही है यह देखकर कलकत्तेके देशी समाजकी आँखें खुल गई। ऐहिक मामलोंमें फिरसे मन रमा। इहलोककी माया आकांक्षा फिरसे लौट आई। प्रथम प्रथम उससे थोड़ी बुराई भी हुई। सुननेमें आता है कि एक जातिके लोग हैं जो मांस-मछली नहीं छूते लेकिन एक बार आमिषका स्वाद पानेपर मांसके लिए जान देने लगते हैं। यहाँ भी यही हुआ। कलकत्तेका हिन्दू समाज सम्भुलन नहीं रख सका। अथकी मार मनके अधिक झुकावसे सचमुचमें खूब असंयम हुआ। इसके परिणामस्वरूप आगे चलकर इस समाजने अत्यन्त कुत्सित रूप ग्रहण किया था। उसका रूप एकदम बीभत्स था। अथकी प्रचुरता ऐश्वर्यके विलास तथा रुपयेकी गर्मीको लेकर आपसकी खींचातानी मतभेद दलबन्दी परस्पर विद्वेषका बोलबाला हो गया। वह एक अत्यन्त ही लज्जाकर बात थी।

लेकिन धीरे-धीरे घड़ीका पेण्डुलम फिर अपनी जगहपर चला आया। केवल बुद्धिके ऊपर तो समाजकी प्रतिष्ठा नहीं होती। बुद्धिके साथ ज्ञान चाहिए। ज्ञान आता है विद्यासे। ईसवी सन्‌की उन्नीसवीं शताब्दीके प्रथम दशकके बाद ही कलकत्तेमें विद्याकी प्रतिष्ठा हुई। उस समय उत्तरापथमें लार्ड लेक और दक्षिणापथमें सर आर्थर वेलेस्ली (बादमें ड्यूक आफ वेलिंगटन) ने मराठोंको हराकर ब्रिटिश राज्यकी बुनियाद पक्की कर दी थी। देशमें बहुत दूरतक शान्ति आ गई थी।

लेकिन उस समय भी विद्या प्रचारकी ओर अंग्रेजी सरकारकी दृष्टि नहीं गई थी। कई एक सरकारी सहृदय अंग्रेजोंकी सहायता लेकर देशी लोगोंने अपने ही प्रयत्नसे कलकत्तेमें विद्याचर्चाका काम शुरू कर दिया। उनके मनमें उस समय सब कुछ जानने सब कुछ समझने तथा सब कुछ सीखनेकी कैसी प्रबल आकांक्षा कैसा कठिन उत्साह तथा कैसी प्राणपण चेष्टा थी। मरणासन्न बंगाली हिन्दू समाज जैसे मग्न दशासे सहसा जाग उठा और देह झाड़कर खड़ा हो गया।

सुविधा भी प्राप्त हो गई थी। विद्या प्रसारके तीनों अंग—प्रेस समाचारपत्र और स्कूल-कालेज—कलकत्तेमें प्रवेश पा चुके थे। किन्तु इन तीनोंमें किसीकी भी स्थापनामें कम्पनीका कोई हाथ नहीं था।

हिन्दू समाजके भीतरकी आग एकदम बुझ नहीं गई थी। राखसे ढँकी हुई थी। विद्याने उसे फूँककर उड़ा दिया। अन्धकार-युग चला गया और प्रकाश-युग आ गया। यूरोपमें जिसके होनेमें आठ सौ वर्ष लगे थे ठीक वही चीज कलकत्ता-समाजमें पलासी-युद्धके बाद सत्तर वर्षोंके भीतर सम्भव हो गई।

कलकत्तेके समाजमें विद्या और बुद्धिको एकत्र कर राजा राममोहन रायने ज्ञानकी धारा बहा दी। वे कलकत्ताके रहनेवाले नहीं थे। लेकिन जिस कामका भार लेकर उन्होंने जन्म-ग्रहण किया था उसके लिए उन्हें कलकत्तेमें अपना निवास-स्थान बाध्य होकर उठा लाना पड़ा। कलकत्तेके समाजको छोड़कर और अन्य कहीं उनके लिए उपयुक्त स्थान नहीं था।

राममोहन रायके धर्मको लेकर जो वाद-विवाद है वह कोई बड़ी वस्तु नहीं है। वह केवल उपलक्ष्य है बिल्कुल सामयिक है। किसी धर्म-सम्प्रदायके प्रतिष्ठाता होने लायक इमोशनलिज्म अथवा भावावेग राममोहन रायमें किसी भी समय नहीं था। उनकी दृष्टि सम्पूर्ण रूपसे ज्ञानकी दृष्टि थी। ज्ञानकी बुनियाद पर आधारित विचार बुद्धिको राममोहन रायने अपने सम-सामयिक देशी-समाजमें फिरसे ला दिया था। यही उनकी सबसे बड़ी देन

है। एक दायरेमें उन्होंने ही बंगाली मनको वर्तमान कालके उपयोगी बना दिया था। और यहीं वे सचमुचके ब्राह्मण आचार्य थे गुरु-पुरोहित नहीं।

राममोहन रायके इस बातको उनके समयके सब लोगोंने ग्रहण कर लिया था ऐसी बात नहीं है। बहुतोंने इस बातका प्रत्याख्यान किया था। लेकिन तो भी अन्तवर्ती ऋषियोंकी तरह राममोहन रायने जोरके साथ ही कहा था विचार बुद्धिसम्पन्न हो ज्ञानके ऊपर प्रतिष्ठित हो धर्मलोकमें बैठ ऐसी साधना करो जिस साधनामें ऐहिक सुख है और पारलौकिक मोक्ष भी है। उसीको थोड़ा सरस रूपसे उन्होंने फिर कहा है भुक्ति-मुक्ति दोनों एक साथ होना चाहिए। ठीक। इहलोकका कल्याण नहीं होनेपर तो परलोकमें मंगल नहीं है। यह तो खूब ही सत्य है।

राममोहन रायके बातका फल अपने पूर्णरूपसे अभिन्न इस समय हम लोग ही भोग कर रहे हैं। हम लोगोंने अच्छी तरहसे जान लिया है कि हम लोगोंकी आँखोंके सामने ही एक अत्यन्त अद्भुत एवं अत्यन्त आश्चर्यजनक भौतिक राज्य पड़ा हुआ है। यह राज्य स्वर्गके राज्यसे कुछ कम नहीं है। उसीके केन्द्रमें है मनुष्य जाति—विधाताकी एक अपूर्व सृष्टि। उसी मनुष्य जातिके सामाजिक कल्याणमें ही मनुष्यत्व फलकी प्राप्ति है। उस सामाजिक कल्याणकी अवहेलना करनेपर है महती विनष्टि।

बुद्धिके साथ विद्याके संयोगसे कलकत्ताके समाजमें जो ज्ञानोदय हुआ था उससे एक नये प्रकारकी संस्कृतिका जन्म हुआ। उसका और कोई युक्तिसंगत नाम न पाकर उसको मैं कलकतिया कल्चर कहता हूँ। उसको केवल शहरी कल्चर कहना काफी नहीं होगा। इसके पहले ही बंगाली हिन्दू समाजमें शहरी कल्चर पैदा हुआ था। वह नदिया कल्चर था। लेकिन उसमें बुद्धिकी दीप्ति रहनेपर भी ज्ञानकी ज्योति नहीं थी। ज्ञान सबव्यापी है। कलकतिया-कल्चरने दो दिनोंमें ही नदिया-कल्चरको ग्रास कर लिया।

लेकिन कलकतिया-कल्चर न देशी है न विलायती दोनों मिलकर एक वर्णसंकर कल्चर है। लेकिन रात अच्छी तरह घुल-मिल मिलकर एक हो गया

है। कोई भी एक दूसरेसे विच्छिन्न हो अपने-आप प्रधान नहीं हुआ है। यह बंगाल प्रान्त ही था कि ऐसा अद्भुत संमिश्रण सम्भव हो पाया। क्योंकि बंगालमें ही सबसे विभिन्न कल्चरको एक स्थानपर समीभूत होते देखा गया है।

और ठीक इसी कारणसे कलकत्तिया-कल्चरमें प्रारंभसे ही एक सार्वभौम भाव देखा जाता है। कहा जा सकता है कि इसमें प्रान्तीयता नहीं है। कलकत्तिया समाज तो अर्थ विद्या बुद्धि और ज्ञानके ऊपर ही प्रतिष्ठित है। इनमें किसीकी भी तो जाति नहीं है, सम्प्रदाय नहीं है। देश नहीं है। इसमें कोई म्लेच्छ-अम्लेच्छ नहीं है छुआछूत नहीं है पूर्व-पश्चिम नहीं है। कलकत्ता शहरमें कितने विभिन्न प्रकारके लोगोंका समावेश है और कितने विभिन्न प्रकारके लोगोंके साथ उसका आदान-प्रदान कारबार चलता है। संकीर्णता आयेगी कहाँसे ?

और कुछ दिनोंके बाद ज्ञानके साथ विज्ञानका योग हुआ। जैसे सोनेमें सुहागा पड़ा। सार्वभौम भाव उससे और अधिक समृद्ध हुआ। इसीके फल-स्वरूप नव बंगाली कल्चरको कलकत्तेकी चौहद्दीके भीतर रोककर रखा नहीं जा सका। शहरकी सीमाको छोड़ बंगाल प्रान्तके घेरेको पारकर धीरे-धीरे यही कल्चर समस्त भारतवर्षमें फैल गया।

इस प्रसंगमें इतना कहना पड़ता है कि इस नये कल्चरके फैलनेमें ब्रिटिश इम्पायर सहायक हुआ। बड़ा साम्राज्य नहीं होनेपर कल्चरका प्रसार नहीं होता। अशोकका साम्राज्य नहीं रहनेपर बौद्ध-कल्चर समुद्रगुप्तका साम्राज्य नहीं रहनेपर ब्राह्मण-कल्चर, कान्स्टैनटाइनके नहीं रहनेपर क्रिश्चियन-कल्चर तथा अकबरका साम्राज्य नहीं रहनेपर मुगल-कल्चर इनमें किसीका भी विकास और प्रसार होता कि नहीं इसमें सन्देह है।

भौतिक समृद्धिको प्रत्यक्ष देखनेसे नये कलकत्ता-समाजमें एक विचित्र स्पन्दन हुआ। उसका झोंका समाजके सम्पूर्ण जीवनमें आकर लगा। उससे अधिक बंगला-साहित्य आन्दोलित हुआ। यह ऐसा झोंका था कि ईसवी सन्

उन्नीसवीं शताब्दीके प्रायः आरम्भमें कलकत्ता शहरमें जिस बँगला-साहित्य का विकास हुआ उसकी तुलना उसीसे की जा सकती है।

पहलेके बँगला-साहित्यसे इस नये बँगला-साहित्यका कैसे कोई सादृश्य नहीं है। मनुष्यके सुख-दुख आशा-आकांक्षाको लेकर मनुष्यके ही सुख कल्याणके लिए इस साहित्यका निर्माण हुआ है। इस साहित्यमें जहाँ-जहाँ देवी-देवता इस मृत्युलोकमें आते हैं वहाँ-वहाँ वे भी मनुष्यके हाथोंमें पड़कर एकदम मनुष्य बन गये हैं।

बड़ी मजेदार बात है। कलकत्तेके बँगाली लेखकोंकी कलमकी चोटसे बँगला गद्य क्रमशः साहित्यका वाहन हो गया। होता क्यों नहीं? गद्य जो कामकी भाषा है। इसके पहले बँगला गद्य कारबारकी भाषा थी। उसमें चिट्ठीपत्री लिखी जाती दस्तावेज लिखे जाते हिसाब-किताब रखा जाता। लेकिन उसके सहारे कभी भी साहित्यकी रचना की जा सकेगी पहले स्वप्न में भी कोई इस बातकी कल्पना नहीं कर सकता था। कलकत्तेके नये समाजने इसीको सम्भव कर दिखाया।

पहले नवीन छोकरा-सिविलियनोंके पढ़नेके लिए बँगला गद्यमें कई टैक्स्ट बुक लिखे गये। मृत्युंजय विद्यालंकार भट्टाचार्यने अपने लिखे हुए प्रबोधचन्द्रिका ग्रन्थकी प्रस्तावनामें स्पष्ट ही स्वीकार किया है अभिनव युवक साहेबजातेर शिक्षार्थी (नयी साहब जातिके युवकोंको शिक्षाके लिए) यह ग्रन्थ रचित हुआ है।

इसके बाद राजा राममोहन रायने बँगला गद्यमें थोड़ा रस दान दिया। फिर तो रास्ता खुल गया। लोगोंने चकित होकर देखा बँगला गद्यके द्वारा क्या नहीं किया जा सकता। हिसाब-किताबके बही-खाते लिखनेसे लेकर उसमें पद्यकी ध्वनि तक लाई जा सकती है।

उस ओर, कलकत्तिया समाजके हाथोंमें पड़कर बँगला काव्य सचमुच कविता बन गया। यात्रा-पाँचाली (नाटक-मण्डली और कथागायन) की केंचुलको छोड़कर उसने नाटक प्रहसन ड्रामाका रूप धारण कर लिया।

उसमें कोई सचमुचकी ट्रेजेडी हुआ और कोई असली कामेडी। पर लिरिक कविता बंगालियोंकी मज्जागत है उतना नाटक नहीं। इसीलिए नाटक बंगालियोंके हाथमें पड़कर चमका नहीं। बंगला गद्यका स्वर बदल जानेसे बंगालियोंकी कहानी-रचनाने हितोपदेशकी कहानियोंको छोड़कर नावेलका रूप लिया। यथार्थ लिरिक छोटी कहानियां हैं। बंगालियोंके हाथमें पड़कर यह बंगला-साहित्यकी एक अपूर्व सम्पत्ति बन गयी। अन्तिम सीमा तक पहुँचा क्या? जो लिखा गया वह पृथ्वी भरके पण्डितोंके जांचमें परीक्षा जा सकता है। एकबारगी उत्तम होकर वैष्णवकी पदावली पुष्करणीका जैसे सहसा बंगला साहित्यके गर्भमें प्रवेश हुआ।

ईसवी सन्‌की अठारहवीं शताब्दीके अन्त होनेके कुछ पहलेसे ही विलुप्त प्राच्यविद्याका उद्धार शुरू हुआ। बंगला साहित्यको समृद्ध करनेमें यह बहुत सहायक सिद्ध हुआ था। विदेशी लोगोंने ही प्राच्य विद्याको विस्मृतिके गर्भसे बाहर लाकर सबके सामने रखा था इसे भूल जाना महान् अपराध होगा। इस विषयमें एशियाटिक सोसाइटी और उसके प्रथम प्रेसिडेण्ट सर विलियम जोन्सका देनका ऋण चुकाना सम्भव नहीं है।

इस सम्बन्धमें वारेन हेस्टिंग्सको *बिना याद किये नहीं चल सकता।* बर्क शेरिडनकी स्पीचके जोश तथा मेकालेकी कलमके प्रभावसे हम लोग हेस्टिंग्सको दुश्मन ही मान लेते हैं। हम यह भूल जाते हैं कि हेस्टिंग्सके जैसे ज्ञानी गुणी विद्यानुरागी अंग्रेज गवर्नर इस देशमें बहुत ही कम आये हैं। प्राच्य विद्याके उद्धारके सम्बन्धमें हेस्टिंग्सके प्रयत्नोंकी कोई सीमा नहीं थी। उनके समयमें इस विषयमें जिसे भी थोड़ा बहुत ज्ञान था उसे किसी-न-किसी तरह कुछ-न-कुछ सहायता देकर हेस्टिंग्सने उसका उत्साह बढ़ाया था। यह किंवदन्ती नहीं है इतिहासका तथ्य है।

विदेशियोंका अनुसरण कर हम लोग भी क्रमशः वैज्ञानिक प्रणालीसे प्राच्य विद्याका रिसर्च करनेमें पारंगत हो उठे। भले ही अनेक भ्रम हो जानेसे हमलोग उस विद्याको अब केवल भक्तिमूलक दृष्टिसे नहीं देखते बल्कि

सममूलक दृष्टिसे देखते हैं। और युक्ति तथा तर्कके सहारे हम देखते हैं इसलिए उसकी प्रकृत गरिमाको समझ सकते हैं, उसका उचित मूल्यांकन कर सकते हैं और सचमुचमें उसकी महिमाका प्रचार कर सकते हैं।

साहित्यके भीतर भी फिर वही अर्थकी बात लागी पड़ रही है। कलकत्ता शहरका नया बुद्धिमान ज्ञानवान समाज ही इस साहित्यका स्रष्टा है। बुद्धिमान, ज्ञानवान समाजने ही धीरे-धीरे मध्यवित्त गृहस्थ समाजका रूप ले लिया। धनी लोग तो धनके जालमें फँसकर अर्थके दास हो जाते हैं। श्रमिकोंके हाथमें बचतके रुपये रहते नहीं। उन्हें तो रोज कमाना रोज खाना है। इसीलिए इन दोनों वर्गोंके लोग किसी भी देशमें कभी भी बड़ी आइडिया नहीं दे पाते। ज्ञान-विज्ञान, साहित्य कला शिल्प की भी सृष्टि ये नहीं कर पाये। मध्यवित्त श्रेणीके लोग ही इसमें समर्थ होते हैं। कभी-कभी इसमें दो-चार व्यतिक्रम अगर होता भी पड़े तो वह व्यतिक्रम नियमका प्रमाण ही मात्र है।

कलकत्तेके नवीन समाजके मध्यवित्त वालोंके हाथमें खा-पीकर कुछ रुपयकी बचत होने लगी और उन बचाये हुए रुपयोंको बिना किसी दुश्चिन्ताके रक्षा करनेकी व्यवस्था भी शीघ्र रही। रुपये रखनेके सम्बन्ध में यह निर्विघ्नता और निश्चिन्तता ब्रिटिश एडमिनिस्ट्रेशनकी ही देन है, यह तो स्वीकार करना ही पड़ेगा। केवल यही नहीं ब्रिटिश एडमिनिस्ट्रेशन के फलस्वरूप यह मध्यवित्त समाज सम्मानके साथ ही अर्थोपार्जनमें भी समर्थ हो सका। रुपयेके लिए उन्हें धनियोंका आश्रित होकर खुशामद किए उनके मनमाने विविध कामोंको सम्पन्न नहीं करना पड़ता। दूसरी ओर चोरी-डकैती कर रुपया इकट्ठा करनेके लिए भी बाहर नहीं निकलना पड़ता सम्मान सहित अच्छे ढंगसे ही अर्थोपार्जनका उपाय निकल आया था। और इसीलिए वे समाजको बहुत-कुछ दे सके थे।

पुराने जमानेमें मेधावी ज्ञानी गुणी व्यक्तियोंके आश्रयदाता राजा और जमींदार लोग थे। हीनवृत्तिसे उन्हें छुटकारा दिलानेका उत्तरदायित्व इन्हीं

लोगोंपर था। मुसलमान राज्याधिकारियोंने हिन्दुओंके सम्बन्धमें इस उत्तरदायित्वको स्वीकार नहीं किया। वे साधारणतः पशुबलको ही जानते समझते। फ़ौजके आदमियोंको ही सम्मान देते। बड़े-बड़े सेनापतियोंको जागीर देते।

इनाम रहनेपर भी हिन्दू जमींदार सब समय इस उत्तरदायित्वको ग्रहण नहीं कर पाते। और जहाँ जितना भी किया था वहाँ लोगोंको अपने अधीन रखकर किया था। उससे न फूल ही सुन्दर खिला और न फल ही अच्छा लगा।

ब्रिटिश पार्लमेंटने भी सीधे इस उत्तरदायित्वको स्वीकार नहीं किया। जैसे अच्छे ढंगसे अर्थोपार्जनके अनेक रास्ते कर तथा उपार्जित धनकी रक्षा की व्यवस्था कर वे इस उत्तरदायित्वसे थोड़ा स्वतंत्र हो सके थे।

आर्टमें भी यही एक ही भौतिक दृष्टि लौट आई। कालीघाटके पटमें कलकत्तेकी पुस्तकोंको चित्रित करनेके मुकाबलेमें लिथोग्राफीमें तथा एन ग्रेविंगमें देवी-देवताका अवलंबन छूट जानेसे इसी समय आर्टिस्टोंकी दृष्टि मनुष्योंकी ओर पड़नी आरम्भ हुई। इस बातको समझानेके लिए अधिक परिश्रम नहीं करना पड़ेगा।

धार्मिक अनुष्ठानोंमें भी एक परिवर्तन दीख पड़ा। जैसे वैसे कट्टर पण्डितोंके हो-हल्ला मचानेपर भी कर्मकाण्ड प्रधान धर्म परस लोगोंका विश्वास कम होता गया। धर्मके संबंधमें इतने दिनों तक उनकी जो जो अद्भुत धारणाएँ थीं वे भी शिथिल हो गईं। इतने दिनोंतक वे विश्वास करते आ रहे थे कि धर्म कोई लौकिक वस्तु नहीं है। कुछ नहीं होनेपर वह धर्म ही क्या है? और धर्मकी प्राप्तिके लिए संसार-बंधन त्याग करना चाहिए। संसार तो मायाके धोखेकी टट्टी है। वहाँ रहनेसे कौन सा धर्म प्राप्त होगा?

लेकिन कलकत्तिया-सभ्यताके वातावरणमें आदमी बननेवाले नवीन पन्थी लोगोंने अन्यथा समझा। धर्ममें उन्होंने आडम्बरको त्याग देनेपर लोग

प्रकट किया। इसके लिए वे धर्मान्तरण तक करनेको भी राजी रहे हुए। इस्लामकी लेनेमें ही तो अपनी रक्षा सम्भव है। इसे लेकर मनुष्य और जनता कहाँ ? इस सम्बन्धमें लौकिक दृष्टि लेकर उन्होंने कहा—मनुष्यके लिए जनसमुदायके कल्याणका अनुष्ठान है तो धर्माचरण है। इसीलिए ईसाई धर्मकी कमजोरी धर्मान्तरके प्रारम्भसे ही इस नये समाजके लोगोंका हाथ जन-कल्याणकारी संस्थाओंमें कम नहीं था।

इस नये प्रकारके धर्मके ज्ञानके फलस्वरूप व्यावहारिक नैतिकताका ज्ञान भी अधिक बढ़ गया। अधिक अध्यात्म-चर्चा करनेके फलस्वरूप नीति बोध या मारल सेन्स इस देशमें बहुत ही कम हो गया था। आध्यात्मिक जगत्में तो नैतिकताका कोई बन्धन नहीं है। लेकिन लौकिक समाजमें नैतिकताका बन्धन नहीं रहनेपर मनुष्य कैसे साथ रह सकेंगे ? यह मानना ही पड़ेगा कि मिशनरियोंके क्रिश्चियन धर्मके प्रचारका फल भले ही और कुछ न हो लेकिन नीति-बोध और ड्यूटीके उत्तरदायित्वके ज्ञानके प्रचारमें वह सहायक अवश्य हुआ था। क्रिश्चियानिटी अपने-आपमें मूल रूपसे लौकिक धर्म है।

इस नीति-बोधसे ही पैट्रियटिज्मका जन्म हुआ है। नीतिज्ञानके फल स्वरूप ही यह ज्ञान उत्पन्न होता है कि जो मनुष्य-समाजका स्वार्थ है। वही देशका स्वार्थ है। और जो देशका स्वार्थ है वही हमारा अपना स्वार्थ है। इस बोधका ही नाम पैट्रियटिज्म है। यह चीज़ इस देशकी चीज़ नहीं है इसलिए इसका कोई देशी नाम नहीं है।

मुसलमानी शासन-कालमें हिन्दुओंको देशमें कुछ मिलनेकी आशा नहीं दीख पड़ती थी। देशमें कुछ नहीं मिलनेपर देशके प्रति ममता होती कहाँसे ? मुसलमान भी इसे अपना देश नहीं समझते थे। इसके अलावा पलासी-युद्धके कुछ पहलेके अधिकांश मुसलमान जो शासनमें प्रमुख थे वे विदेशसे आये हुए थे, और [illegible], अतः शासन करनेवाले लोग

आदमी थे। यह देश उनके लिए या तो केवल शासन या लूटके लिए था। अतएव उन्हें भी पैट्रियटिज़मसे कोई वास्ता नहीं था।

ब्रिटिश शासनमें ही हम लोग फिरसे देशसे कुछ प्राप्त करने लगे। तभी हम लोगोंमें देशके प्रति अपनापनका भाव फिरसे लौट आया। इसी क्रमसे एक साथ ही हम लोगोंको मुक्ति-मुक्ति प्राप्त हुई इसलिए हम लोगोंने देशसे प्रेम करना सीखा।

इस मुक्ति-मुक्तिका आह्वान आया था पलासी-युद्धके बाद ही। उसी प्रकारसे बंगाली हिन्दू जाग्रत हो अपने भी मोहसे मुक्त हुए और समस्त भारतवर्षमें भी मुक्तिके रसका वितरण किया।

फिर विदेशी शासन हम लोगोंको असह्य हो उठा। सन् १९४७ ई० में ब्रिटिश शासनका अवसान हुआ। हमारी जीवन-धाराने एक और मोड़ ली। अब एक और नये युगका जन्म हुआ।

अब युगके इस सन्धिकालमें मनमें आता है कि हम लोग किस रास्ते चले हैं? समझ नहीं पाता। दो तो क्योंकि इतिहासको घो-घोलकर क्या फिरसे हम लोग मध्ययुगके अन्धकारमें लौट हाथसे टटोलते हुए मरेंगे? क्या फिरसे हम लोग उसी राज्यकी स्थापना करेंगे—जिस राज्यमें एक ओर एक दल राज-कर्मचारी रहेंगे और दूसरी ओर क्रीत दासोंका एक समुदाय—जिसके मनमें कोई सुख-शान्ति नहीं कोई आशा नहीं? नहीं जानता। समस्त संसारके साथ योग रख कन्धोंसे कन्धा मिलाकर चलते हुए हम लोग शौर्य-वीर्यमें ज्ञान-विज्ञानमें धन-सम्पत्तिमें धर्म-कर्ममें संसार में श्रेष्ठ स्थान ग्रहण करेंगे या फिर अपने घरके कोनेमें बैठ माला जपते हुए फिर किसी उद्धारकर्ताको पुकारते रहेंगे? कह नहीं सकता।

इतिहास पढ़कर केवल यही जान सका हूँ कि विधाताके विधानमें कहीं किसी प्रकारकी अस्थिरता नहीं होनेपर भी सार्थकता अवश्य है। हम लोगोंके लिए यह सार्थक विधान क्या है—यह प्रश्न ही बना रह गया।

घटनाओं की तालिका

सन् १५५६ ई०—सन् १७५७ ई०

१५५६ अकबर दिल्लीका बादशाह, पानीपतका द्वितीय युद्ध।

१५५८ एलिजाबेथ, इंगलैण्डकी रानी।

१५७६ पठान नवाब दाऊद खाँकी पराजय। बंगालमें मुगल शासन की स्थापना।

१५७८ पोर्तुगीजोंका हुगलीमें आगमन।

१५९४ मानसिंह बंगालके सूबेदार।

१६०० रानी एलिजाबेथ द्वारा ईस्ट इंडिया कम्पनीको चार्टर देना।

१६०२ डच ईस्ट इंडिया कम्पनीकी स्थापना।

१६०३ रानी एलिजाबेथकी मृत्यु। जेम्स प्रथम इंगलैण्ड के राजा।

१६०५ अकबर बादशाह की मृत्यु। जहाँगीर दिल्लीका बादशाह।

१६१२ सूरतमें अंग्रेजी कोठीकी स्थापना।

१६१५ जहाँगीरके दरबारमें सर टामस रो का दौरा।

१६२४ सुल्तान खुर्रम (शाहजहाँ) का विद्रोह।

१६२५ चुँचड़ामें डच-कोठीकी स्थापना। जेम्स प्रथमकी मृत्यु। चार्ल्स प्रथम इंगलैण्डका राजा।

१६२७ जहाँगीरकी मृत्यु।

१६२८ शाहजहाँ दिल्लीका बादशाह।

१६३२ हुगलीमें पुर्तगीजोंका उच्छेद।

१६३९ सुल्तान शुजा बंगालके सूबेदार। मद्रासमें अंग्रेजी कोठीकी स्थापना।

१६४२ बालेश्वरमें अंग्रेजी कोठीकी स्थापना।

१६४९ चार्ल्स प्रथमका शिरश्छेद।

१६५२ सुलतान सुजा द्वारा अंग्रेजोंको आदेशपत्र देना। हुगलीमें अंग्रेजी कोठीकी स्थापना।

१६५३ इंगलैण्डमें कामनवेल्थ शासनका आरम्भ।

१६५६ जोब चारनकका भारत-आगमन। मुर्शिद कुली खां दक्षिण प्रदेशों-के दीवान।

१६५८ औरंगजेबके द्वारा शाहजहांको बन्दी बनाया जाना और दिल्लीकी गद्दीपर बैठना।

१६६० मीर जुमला बंगालके सूबेदार। चार्ल्स द्वितीय इंगलैण्डके राजा।

१६६१ पोर्तुगीजों द्वारा अंग्रेजोंको बम्बईका हस्तान्तरण। बम्बईमें अंग्रेजी कोठीकी स्थापना। बाण्डेलमें पोर्तुगीज गिर्जाका निर्माण।

१६६३ शाइस्ता खां बंगालके सूबेदार।

१६६४ फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कम्पनीका गठन।

१६६६ शाहजहांकी मृत्यु। औरंगजेब दिल्लीका बादशाह। शाइस्ता खां द्वारा पोर्तुगीज जलदस्युओंका दमन।

१६६८ सूरतमें फ्रांसीसी कोठीकी स्थापना।

१६७२ शिवाजीके विरुद्ध शाइस्ता खांकी युद्ध यात्रा।

१६७४ पाण्डिचेरीमें फ्रांसीसी कोठीकी स्थापना। शिवाजीका राज्याभिषेक।

१६७९ शाइस्ता खां दुबारा बंगालके सूबेदार। औरंगजेबके द्वारा जजिया टैक्सका फिरसे लगाया जाना।

१६८० शिवाजीकी मृत्यु।

१६८२ विलियम हेजेस बंगालकी अंग्रेजी कोठीके प्रथम गवर्नर।

१६८५ चार्ल्स द्वितीयकी मृत्यु। जेम्स द्वितीय इंगलैण्डके राजा।

१६८६ जोब चारनक हुगलीमें कम्पनीके एजेण्ट। हुगलीमें मुगल-अंग्रेजों का युद्ध। जोब चारनकका सुतानुटि आगमन।

१६८७ जोब चारनककी हिजली यात्रा । हिजलीमें मुगल-अंग्रेजों का युद्ध । दूसरी बार जोब चारनकका सुतानुटि आगमन ।

१६८८ कप्तेन हीथका सुतानुटि आगमन । अंग्रेजोंकी चट्टग्राम यात्रा । चट्टग्रामसे मद्रास प्रत्यावर्तन ।

१६८९ इब्राहीम खाँ बंगालके सूबेदार । जेम्स द्वितीयका सिंहासन त्याग । विलियम तृतीय इंग्लैण्डके राजा ।

१६९० जोब चारनकका तीसरी बार सुतानुटि आगमन । सुतानुटिमें अंग्रेजी-कोठीकी स्थापना । चन्दननगरमें फ्रान्सीसी-कोठीकी स्थापना ।

१६९३ जोब चारनककी मृत्यु । फ्रान्सिस एलिस कम्पनीके एजेण्ट । सर जॉन गोल्ड्सबराका सुतानुटि परिदर्शन ।

१६९४ फ्रान्सिस एलिस बरखास्त । चार्ल्स आयर कम्पनीके एजेण्ट ।

१६९५ शोभासिंहका विद्रोह ।

१६९६ कलकत्तेमें फोर्ट विलियम-किला निर्माण आरम्भ ।

१६९७ इब्राहीम खाँ बरखास्त । सुल्तान आजीमुद्दीन (आजीमउश्शान) बंगालके सूबेदार ।

१६९८ आजीमउश्शान द्वारा अंग्रेजोंको सुतानुटि कलकत्ता और गोविन्दपुर ग्राम खरीदनेकी अनुमति प्रदान । सावर्ण चौधरियोंके पाससे अंग्रेजों का तीन ग्राम खरीदना ।

१६९९ कलकत्तेमें प्रेसिडेन्सीकी स्थापना । नई ईस्ट इण्डिया कम्पनीकी नींव ।

१७०० सर चार्ल्स आयर कलकत्तेके प्रथम प्रेसिडेण्ट । र्‍याल्फ शेल्डन कलकत्तेके प्रथम अंग्रेज जमींदार ।

१७०१ मुर्शिद कुली खाँ बंगालके दीवान । जॉन बियार्ड कलकत्तेके प्रेसिडेण्ट ।

१७०२ औरंगजेब द्वारा अंग्रेजोंका व्यापार उन्मूलन । विलियम तृतीयकी मृत्यु । ऐन इंग्लैण्डकी रानी ।

१७०७ औरंगजेबकी मृत्यु । बहादुर शाह दिल्लीके बादशाह । कलकत्ते का सर्वे ।

१६४२ बालेश्वरमें अंग्रेजी कोठीकी स्थापना ।

१६४९ चार्ल्स प्रथमका शिरच्छेद ।

१६५२ सुल्तान शुजा द्वारा अंग्रेजोंको आदेशपत्र देना । हुगलीमें अंग्रेजी कोठीकी स्थापना ।

१६५३ इंगलैण्डमें कामनवेल्थ शासनका प्रारम्भ ।

१६५६ जोब चारनकका भारत-आगमन । मुर्शिद कुली खां दक्षिण प्रदेशों-के दीवान ।

१६५८ औरंगजेबके द्वारा शाहजहांको बन्दी बनाया जाना और दिल्लीकी गद्दीपर बैठना ।

१६६० मीर जुमला बंगालके सूबेदार । चार्ल्स द्वितीय इंगलैण्डके राजा ।

१६६१ पोर्तुगीजों द्वारा अंग्रेजोंको बम्बईका हस्तान्तरण । बम्बईमें अंग्रेजी कोठीकी स्थापना । बाण्डेलमें पोर्तुगीज गिर्जाका निर्माण ।

१६६३ शाइस्ता खां बंगालके सूबेदार ।

१६६४ फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कम्पनीका गठन ।

१६६६ शाहजहांकी मृत्यु । औरंगजेब दिल्लीका बादशाह । शाइस्ता खां द्वारा पोर्तुगीज जलदस्युओंका दमन ।

१६६८ सूरतमें फ्रांसीसी कोठीकी स्थापना ।

१६७२ शिवाजीके विरुद्ध शाइस्ता खांकी युद्ध यात्रा ।

१६७४ पाण्डिचेरीमें फ्रांसीसी कोठीकी स्थापना । शिवाजीका राज्याभिषेक ।

१६७९ शाइस्ता खां दुबारा बंगालके सूबेदार । औरंगजेबके द्वारा जजिया टैक्सका फिरसे लगाया जाना ।

१६८० शिवाजीकी मृत्यु ।

१६८२ विलियम हेजेस बंगालकी अंग्रेजी कोठीके प्रथम गवर्नर ।

१६८५ चार्ल्स द्वितीयकी मृत्यु । जेम्स द्वितीय इंगलैण्डके राजा ।

१६८६ जोब चारनक हुगलीमें कम्पनीके एजेन्ट । हुगलीमें मुगल-अंग्रेजों का युद्ध । जोब चारनकका सुतानुटि आगमन ।

१६८७ जोब चारनककी हिजली यात्रा। हिजलीमें मुगल-अंग्रेजों का युद्ध। दूसरी बार जोब चारनकका सुतानुटि आगमन।

१६८८ कप्तेन हीथका सुतानुटि आगमन। अंग्रेजोंको चट्टग्राम यात्रा। चट्टग्रामसे मद्रास प्रत्यावर्तन।

१६८९ इब्राहीम खाँ बंगालके सूबेदार। जेम्स द्वितीयका सिंहासन त्याग। विलियम तृतीय इंग्लैण्डके राजा।

१६९० जोब चारनकका तीसरी बार सुतानुटि आगमन। सुतानुटिमें अंग्रेजी-कोठीकी स्थापना। चन्दननगरमें फ्रान्सीसी-कोठीकी स्थापना।

१६९३ जोब चारनककी मृत्यु। फ्रान्सिस एलिस कम्पनीके एजेण्ट। सर जॉन गोल्ड्सबराका सुतानुटि परिदर्शन।

१६९४ फ्रान्सिस एलिस बरखास्त। चार्ल्स आयर कम्पनीके एजेण्ट।

१६९५ शोभासिंहका विद्रोह।

१६९६ कलकत्तेमें फोर्ट विलियम-किला निर्माण आरम्भ।

१६९७ इब्राहीम खाँ बरखास्त। सुलतान आजीमुद्दीन (आजीमउस्शान) बंगालके सूबेदार।

१६९८ आजीमउस्शान द्वारा अंग्रेजोंको सुतानुटि, कलकत्ता और गोविन्दपुर ग्राम खरीदनकी अनुमति प्रदान। सावर्ण चौधरियोंके पाससे अंग्रेजों का तीन ग्राम खरीदना।

१६९९ कलकत्तेमें प्रेसिडेन्सीकी स्थापना। नई ईस्ट इण्डिया कम्पनीकी नींव।

१७०० सर चार्ल्स आयर कलकत्तेके प्रथम प्रसिडेण्ट। राल्फ शेल्डन कलकत्तेके प्रथम अंग्रेज जमींदार।

१७०१ मुर्शिद कुली खाँ बंगालके दीवान। जॉन बियार्ड कलकत्तेके प्रेसिडेण्ट।

१७०२ औरंगजेब द्वारा अंग्रेजोंका व्यापार उन्मूलन। विलियम तृतीयकी मृत्यु। ऐन इंग्लैण्डकी रानी।

१७०३ औरंगजेबकी मृत्यु। बहादुर शाह दिल्लीके बादशाह। कलकत्ते का सर्वे।

१७०९ कलकत्तेमें सेण्ट ऐन्स गिर्जेकी प्रतिष्ठा। पुरानी और नई ईस्ट इण्डिया कम्पनीका संयोग।

१७१० मुर्शिद कुली खाँ दूसरी बार बंगालके दीवान। एण्टनी वीएस्टर्वेल्ट कलकत्तेके प्रेसिडेण्ट। जॉन रासल कलकत्तेके प्रेसिडेण्ट।

१७१२ बहादुर शाहकी मृत्यु। जहाँदार शाह दिल्लीके बादशाह। जहाँदार शाहकी हत्या।

१७१३ फर्रुख सियर दिल्लीके बादशाह। रबर्ट हेजेस कलकत्तेके प्रेसिडेण्ट। मुर्शिद कुली खाँ बंगालके डिप्टी सूबेदार।

१७१४ रानी ऐनकी मृत्यु। जर्ज (प्रथम) इंगलैण्डके राजा।

१७१७ बादशाह फर्रुख सियरके दरबारमें अंग्रेजोंका दौत्य।

१७१८ मुर्शिद कुली खाँ बंगालके सूबेदार। बादशाह फर्रुख सियर द्वारा अंग्रेजोंको फर्मान प्रदान। स्यामुयेल फिक कलकत्तेके प्रेसिडेण्ट।

१७१९ बादशाह फर्रुख सियरकी हत्या। रफीउद्दौला दिल्लीके बादशाह। रफीउद्दराज दिल्लीके बादशाह। मुहम्मद शाह दिल्लीके बादशाह।

१७२० कलकत्तेमें पुर्तगीज गिर्जेका निर्माण।

१७२२ जॉन डीन कलकत्तेके प्रेसिडेण्ट।

१७२४ कलकत्तेमें आर्मीनियन गिर्जेका निर्माण।

१७२५ एडवर्ड स्टिफनसन एक दिनके लिए कलकत्तेके प्रेसिडेण्ट। हेनरी फ्रैंकलैण्ड कलकत्तेके प्रेसिडेण्ट।

१७२७ कलकत्तेमें मेयर्स कोर्ट और दूसरे कोर्टोंकी प्रतिष्ठा। मुर्शिद कुली खाँकी मृत्यु। शुजाउद्दीन खाँ बंगालके नवाब। जर्ज प्रथमकी मृत्यु। जर्ज द्वितीय इंगलैण्डके राजा।

१७२८ जॉन डीन दूसरी बार कलकत्तेके प्रेसिडेण्ट।

१७३ गोविन्द मित्रके नवरत्न मन्दिरकी प्रतिष्ठा।

१७३२ जॉन स्टैकहाउस कलकत्तेके प्रेसिडेण्ट।

१७३३ अलीवर्दी खाँ बिहारके डिप्टी सूबेदार।

१७३७ कलकत्तेमें भयानक आँधी ।

१७३८ टॉमस ब्रैडिल कलकत्तेके गवर्नर ।

१७३९ शुजाउद्दीन खाँकी मृत्यु । सरफराज खाँ बंगालके नवाब । नादिर शाह द्वारा दिल्लीका लूटा जाना ।

१७४० गिरिया-युद्धमें सरफराज खाँ मारे गये । अलवर्दी खाँ बंगालके नवाब ।

१७४२ बंगालमें बर्गी हंगामेका सूत्रपात । कलकत्तेमें मराठा डिच खोदा जाना । कलकत्तेमें साहबोंके मुहल्लेका रेलिंग घेरा जाना ।

१७४४ डुप्लेक्स पाण्डीचेरीके गवर्नर ।

१७४५ जॉन फस्टर कलकत्तेके प्रेसिडेण्ट ।

१७४६ दक्षिणमें अंग्रेज-फ्रान्सीसीके युद्धका आरम्भ ।

१७४८ बादशाह मुहम्मद शाहकी मृत्यु । अहमद शाह दिल्लीके बादशाह । विलियम बारवेल कलकत्तेके प्रेसिडेण्ट ।

१७४९ ऐडम डसन कलकत्तेके प्रेसिडेण्ट ।

१७५१ आर्काटमें क्लाइवकी युद्ध-विजय । मराठोंके साथ अलीवर्दी खाँकी सन्धि । सन्धिके फलस्वरूप मराठोंको उड़ीसा-प्रदेश मिलना ।

१७५२ विलियम फिट्स कलकत्तेके प्रेसिडेण्ट । रोजर ड्रेक कलकत्तेके प्रेसिडेण्ट ।

१७५३ कम्पनी द्वारा दलालके बदले गुमाश्ता प्रचलन ।

१७५४ डुप्लेक्सका स्वदेश प्रत्यावर्तन । दक्षिणमें अंग्रेज-फ्रान्सीसीके युद्धका अवसान । बादशाह अहमद शाह गद्दीसे हटाये गये । आलमगीर द्वितीय दिल्लीके बादशाह । डेनिस कम्पनी द्वारा श्रीरामपुरमें कोठीकी स्थापना ।

१७५५ क्लाइव और ऐडमिरल वाट्सन द्वारा गिरियार विजयदुर्ग जय ।

१७५६ अलीवर्दी खाँकी मृत्यु । सिराजुद्दौला बंगालके नवाब । यूरोपमें अंग्रेज-फ्रान्सीसियोंके बीच सप्तवर्षीय युद्धका आरम्भ ।

१७०९ कलकत्तेमें सेण्ट एन्स गिर्जेकी प्रतिष्ठा। पुरानी और नई ईस्ट इण्डिया कम्पनीका संयोग।

१७१० मुर्शिद कुली खाँ दूसरी बार बंगालके दीवान। एण्टनी वेल्टडेन कलकत्तेके प्रेसिडेण्ट। जॉन रासल कलकत्तेके प्रेसिडेण्ट।

१७१२ बहादुर शाहकी मृत्यु। जहाँदार शाह दिल्लीके बादशाह। जहाँदार शाहकी हत्या।

१७१३ फर्रुख सियर दिल्लीके बादशाह। रबर्ट हेजेस कलकत्तेके प्रेसिडेण्ट। मुर्शिद कुली खाँ बंगालके डिप्टी सूबेदार।

१७१४ रानी ऐनकी मृत्यु। जर्ज (प्रथम) इंग्लैण्डके राजा।

१७१७ बादशाह फर्रुख सियरके दरबारमें अंग्रेजोंका दौत्य।

१७१८ मुर्शिद कुली खाँ बंगालके सूबेदार। बादशाह फर्रुख सियर द्वारा अंग्रेजोंको फर्मान प्रदान। स्यामुयेल फिक कलकत्तेके प्रेसिडेण्ट।

१७१९ बादशाह फर्रुख सियरकी हत्या। रफीउद्दौला दिल्लीके बादशाह। रफीउद्दराज दिल्लीके बादशाह। मुहम्मद शाह दिल्लीके बादशाह।

१७२० कलकत्तेमें पुर्तगीज गिर्जेका निर्माण।

१७२२ जॉन डीन कलकत्तेके प्रेसिडेण्ट।

१७२४ कलकत्तेमें आर्मेनियन गिर्जेका निर्माण।

१७२५ एडवर्ड स्टिफनसन एक दिनके लिए कलकत्तेके प्रेसिडेण्ट। हेनरी फ्रैङ्कलैण्ड कलकत्तेके प्रेसिडेण्ट।

१७२७ कलकत्तेमें मेयर्स कोर्ट और दूसरे कोर्टोंकी प्रतिष्ठा। मुर्शिद कुली खाँकी मृत्यु। सुजाउद्दीन खाँ बंगालके नवाब। जर्ज प्रथमकी मृत्यु। जर्ज द्वितीय इंग्लैण्डके राजा।

१७२८ जॉन डीन दूसरी बार कलकत्तेके प्रेसिडेण्ट।

१७३० गोविन्द मित्रके नवरत्न मन्दिरकी प्रतिष्ठा।

१७३२ जॉन स्टैकहाउस कलकत्तेके प्रेसिडेण्ट।

१७३३ अलीवर्दी खाँ बिहारके डिप्टी सूबेदार।

१७३७ कलकत्तेमें भयानक आँधी ।
१७३८ टॉमस ब्रैडिल कलकत्तेके गवर्नर ।
१७३९ सुजाउद्दीन खाँकी मृत्यु । सरफराज खाँ बंगालके नवाब । नादिर शाह द्वारा दिल्लीका लूटा जाना ।
१७४० गिरिया-युद्धमें सरफराज खाँ मारे गये । अलीवर्दी खाँ बंगालके नवाब ।
१७४२ बंगालमें बर्गी हंगामेका सूत्रपात । कलकत्तेमें मराठा डिच खोदा जाना । कलकत्तेमें साहबोंके मुहल्लेका रेलिंगसे घेरा जाना ।
१७४४ डुप्लेक्स पांडिचेरीके गवर्नर ।
१७४६ जॉन फास्टर कलकत्तेके प्रेसिडेण्ट ।
१७४६ दक्षिणमें अंग्रेज-फ्रान्सीसियोंके युद्धका आरम्भ ।
१७४८ बादशाह मुहम्मद शाहकी मृत्यु । अहमद शाह दिल्लीके बादशाह । विलियम बारवेल कलकत्तेके प्रेसिडेण्ट ।
१७४९ एडम डसन कलकत्तेके प्रेसिडेण्ट ।
१७५१ आरकटमें क्लाइवकी युद्ध-विजय । मराठोंके साथ अलीवर्दी खाँकी सन्धि । सन्धिके फलस्वरूप मराठोंको उड़ीसा-प्रदेश मिलना ।
१७५२ विलियम फिट्स कलकत्तेके प्रेसिडेण्ट । राजर ड्रेक कलकत्तेके प्रेसिडेण्ट ।
१७५३ कम्पनी द्वारा बंगालके बदले घुमालका प्रबन्ध ।
१७५४ डुप्लेक्सका स्वदेश प्रत्यागमन । दक्षिणमें अंग्रेज-फ्रान्सीसीके युद्धका अवसान । बादशाह अहमद शाह गद्दीसे हटाये गये । आलमगीर द्वितीय दिल्लीके बादशाह । डेनिश कम्पनी द्वारा श्रीरामपुरमें कोठीकी स्थापना ।
१७५५ क्लाइव और एडमिरल वाटसन द्वारा गिरिआर विजयदुर्ग जय ।
१७५६ अलीवर्दी खाँकी मृत्यु । सिराजुद्दौला बंगालके नवाब । यूरोपमें अंग्रेज-फ्रान्सीसियोंके बीच सप्तवर्षीय युद्धका आरम्भ ।

७५६ सिराजुद्दौला द्वारा कासिमबाजारकी कोठीका लूटा जाना (२४ मई)।
सिराजुद्दौला द्वारा कलकत्ता आक्रमण (१६ जून)।
सिराजुद्दौलाका फोर्ट विलियम किलेपर अधिकार (१६ जून)।
अन्धकूप-हत्या (२० जून)। अंग्रेजोंका फलता भागना।
सिराजुद्दौलाके साथ मनीहारी-युद्धमें पूर्णियाके नवाब शौकतजंगकी मृत्यु (१६ अक्तूबर)।
क्लाइव और वाटसनका फलता आगमन (१५ दिसम्बर)।
बजबजका युद्ध। अंग्रेजोंका बजबजके किलेपर अधिकार (२९ दिसम्बर)। अहमद शाह अब्दाली द्वारा मथुरा और दिल्लीका लूटा जाना।
७५७ क्लाइव और वाटसन द्वारा कलकत्तेका पुनरुद्धार (२ जनवरी)।
सिराजुद्दौलाके विरुद्ध क्लाइव और वाटसनकी युद्ध-घोषणा (३ जनवरी)।
अंग्रेजोंका हुगलीपर आक्रमण (१०–१९ जनवरी)।
सिराजुद्दौलाका सेना सहित कलकत्तेमें आगमन (३ फरवरी)।
हालसीबागमें सिराजुद्दौलाके शिविरपर क्लाइवका आक्रमण (५ फरवरी)।
अंग्रेजोंके साथ सिराजुद्दौलाकी सन्धि (९ फरवरी)।
„ अंग्रेजोंका चन्दननगरपर अधिकार (२३ मार्च)।
क्लाइवका पलासी-अभियान (१३–२२ जून)।
पलासीका युद्ध (२३ जून)।
„ सिराजुद्दौलाकी हत्या (२ जुलाई)। मीरजाफर खाँ बंगाल के नवाब।

०

सहायक-ग्रन्थावली

1 A New Account of the East Indies—Captain Alexander Hamilton

2 Bengal in 1757–1758, 3 Vols.—S. C. Hill

3 Cambridge History of India, Vol V

4 Census of India 1901, Vol VII—A. K. Ray

5 Early Annals of the English in Bengal, Vol. I, Vol. II (Parts 1 & 2)—C R Wilson

6 Early Records of British India—J Talboys wheeler

7 History of Aurangzib, Vol. V—Sir Jadunath Sarkar

8 History of Bengal, Vol II—(Dacca University)–Edited by Sir Jadunath Sarkar

9 History of Bengal—Charles Stewart

10 History of Military Transactions of the British in Indostan, 3 Vols—Robert Orme.

11 Historical and Topographical Sketches of Calcutta—H J Rainey

12 India Tracts—J. Z. Holwell.

13 Memoire sur l' Empire Mogul—Jean Law (Edited by A Martinean)

14 Muzaffarnamah—Karam Ali (English Translation by Sir J. Sarkar in Nawabs of Bengal)
15 Old Fort William in Bengal, 2 Vols.—C. R. Wilson.
16 Oriental Commerce, 2 Vols.—W. Milburn
17 Press List of Consultations etc. (1704—1742)—Edited by A. N. Wolarton (India Office)
18 Press List of Consultations etc. (1742–1757)—Bengal Secretariat Press.
19 Selections from Unpublished Records etc. (1748–1767)—Rev. James Long
20 Siyar-ul-Mutakharin—Ghulam Husain (English Translation by Raymond)
21 Tarikh-i-Bangala—Salimullah (English version Narrative of Bengal—Francis Gladwin)
2 The Parish of Bengal—Rev. H. B. Hyde
23 Voyage to India—Edward Ives
24 महाराष्ट्र-पुराण-गङ्गाराम भट्टाचार्य (साहित्य परिषत् पत्रिका—१३३३ *Journal of the Department of Letters,* Calcutta University, Vol. XIX, 1929)
25 राममोहन रायेर ग्रन्थावली—वङ्गीय साहित्य परिषत् कर्तृक प्रकाशित।